सात दिन कंधार में

आई–सी 814 विमान अपहरण की आपबीती

ईश्वर ने हमें हवा, पानी और रोशनी बिना मांगे ही दी है –
विमान में मांग कर भी इनका मिलना अनिश्चित था ;
पानी की जगह 'बीयर' भी पीना पड़ता था

अजय एवं सुचित्रा भट्टाचार्य

समर्पित

उन देशवासियों को जिन्होंने विमान बन्धकों की
मुक्ति के लिए
अपने–अपने तरीके से प्रार्थना की एवं सहयोग दिया

(हिन्दु)

Kan

विषय सूची

अनिश्चित उड़ान	—	5
वे पांच	—	18
विमान में		25
मृत्यु की अनुभूति	—	49
मुक्ति	—	53
आभार सर्वशक्तिमान का	—	61
घर में	—	66
मीडिया में	—	74
विस्मृत कंधार	—	104
जिन्हें छोड़ा गया	—	108
अन्ततः	—	111
कुछ प्रतिक्रियांए	—	115
विमान अपहरण और भी	—	130
विमान अपहरण में यात्रीा क्या करें	—	133

अनिश्चित उड़ान

24 दिसम्बर, 1999, अपरान्ह 4.15 बजे

काठमांडू का पन्द्रह दिन का प्रवास काफी व्यस्त हो गया था । कार्यशाला के फील्ड वर्क ने एक तरफ काफी थका दिया था । दूसरी ओर घर जाकर बच्चों से मिलने की भी इच्छा ने प्रबल रूप धारण कर लिया था । फोन से घर पर बात करने पर पता चला कि पांच वर्षीय शोमिता ने अब अपने नाना नानी को परेशान करना शुरू कर दिया है। हम दोनों ही यानि की मेरी पत्नी सुचित्राा और मैं किसी तरह जल्द से जल्द घर वापस पहुंचना चाह रहे थे ।

एयरपोर्ट पर पहुॅचने पर पता चला कि विमान चालीस मिनट देर से जायेगी । बाद में विमान के प्रस्थान में और अधिक विलम्ब होने की घोषणा की गई । लगभग 3.45 बजे अपरान्ह में विमान के आने की सूचना
मिली । ''वेटिंग लाउंज'' से निकलकर सभी विमान की तरफ प्रस्थान हुए ।

विमान के अन्दर बैठकर अब अच्छा लग रहा था । नीले–हरे प्रिंट की साड़ियों में विमान परिचारिकाओं ने मुस्कुराते हुए विमान में स्वागत किया । नीले–हरे शेड में ही मैच करते हए सीट–क्रवरस और पर्दों से विमान के अंदर का परिदृश्य और अधिक प्रशमित (ववजीपदहद्ध लग रहा था। सब कुछ अच्छा लग रहा था क्योंकि दो ही घण्टे में हम दिल्ली पहुंचने वाले थे–और अगली सुबह भोपाल ।

इण्डियन एयरलांईस का आई.सी. – 814 विमान अपने निर्धारित समय अपरान्ह 1.50 बजे से सवा दो घंटे बिलंब से उड़ान भरने को तैयार हुई। विमान परिचारिका ने 'स्वीटस प्लीज' कहकर सभी यात्रियों को टाफी तथा चाकलेट बांट दिये । विमान ने मंथर गति से उड़ने के लिये रनवे की तरफ प्रस्थान किया। विमान परिचारिका ने सभी यात्रियों को सुरक्षा संबंधी जानकारी दी और विमान ने खुले आकाश की तरफ उड़ान भरी ।

काठमांडू से लौटते समय हिमालय का नयनाभिराम दृश्य का अवलोकन करने के लिये विशेष रूप से हम लोगों ने खिड़की की तरफ़ की सीट ली थी और हमें 14 जी एवं 14 एच नम्बर सीट का बोर्डिग पास प्राप्त हुआ था । अपनी दाहिनी ओर की खिड़की से हमलोग हिमालय श्रृंखला के सुन्दर दृश्य का आनंद लेते हुए आकाश में सफर कर रहे थे ।

हमेशा की तरह यात्रियों को नाश्ता उपलब्ध कराया गया और यात्राी अपने बेल्ट खोलकर नाश्ता करने में जुट गये ।

अपरान्ह 4.45 बजे

नाश्ता करने के दौरान अचानक दो व्यक्ति काले मुखौटे (मंकी केप) में दिखाई दिये। दोनों के हाथों में पिस्तौलें थीं । दोनों विमान के अन्दर सीट्स के बीच के दोनों पैसेज (पेसम) में एक तरफ से दूसरी तरफ द्रुतगति से चल रहे थे ।

काठमांडू से 60 कि.मी. दूरी पर स्थित ग्राम भगवती स्थान से हिमालय की पर्वत श्रृंखला का नयनाभिराम दृश्य । प्रकृति की मनोरम छटा की यादों के साथ काठमांडू से लौटते हुए हम अपहृत हुए । प्रकृति से सान्निध्य की यादें अपहरण की यादों में विलीन हो गये।

हम सभी वन प्रबंधन विषय से संबंधित एक कार्यशाला में भाग लेने के लिए काठमांडू में इकट्ठे हुए थे । सभी को 23 दिसम्बर को वापस जाना था । मिलिन्दो (बायें से प्रथम) 23 दिसम्बर को पोखरा चले गये। अरूण (बायें से तीसरे) जिन्होंने कार्यशाला का आयोजन किया और अश्विनी (दायें से पहले) 23 दिसम्बर के आई सी – 814 से दिल्ली रवाना हुए । हम पहली बार काठमांडू गये थे इसलिए एक दिन रूक गये और 24 दिसम्बर के आई सी – 814 से रवाना हुए और उस विमान का अपहरण हुआ।

इतने में एक काले मुखौटे वाला अन्य व्यक्ति प्रकट हुआ और बोला – 'सब अपनी–अपनी सीट बेल्ट बांध लें, आंखे बंद कर लें और अपनी जगह से न हिलें।' तीसरे व्यक्ति के हाथ में दो हेण्ड ग्रेनेड थे । बाद में एक काले मुखौटे में ही एक अन्य व्यक्ति प्रकट हुआ, जिसके हाथ में चाकू था।

हमारे पास खड़ी परिचारिका जो पीने का पानी दे रही थी , ने धीरे से कहा – 'हाईजेकरस' (अपरहणकर्ता) । इस पूरी कार्यवाही में शुरू में कुछ समझ में नहीं आया । सभी सकते में आ गये, परन्तु यह अहसास हो गया कि विमान का अपहरण कर लिया गया है ।

अपहरणकर्ताओं ने तत्काल समस्त खिड़कियां बंद कर दीं एवं सीट पर सर के पीछे लगे कपड़ों को निकालकर दो–दो कपड़ों को मिलाकर आंख पर पट्टी बंधवायी। पट्टी बंधवाने का कार्य उन्होंने विमान परिचारिकाओं की सहायता से किया । महिलाओं की आंख पर पट्टी नहीं बांधी गई । उनके लिये अपहरणकर्ताओं ने निर्देश दिये कि वे अपनी आंखों पर दुपट्टा लगालें और सर नीचे कर लें ।

आंख बंद करने, पट्टी बांधने , न हिलने और सर को घुटने पर रखने के निर्देश कई बार दुहराये गये ।

आंख पर पट्टी बांधने से जो खौफ होता है, उसका अंदाजा जीवन में आज पहली बार हुआ।

अपहरणकर्ता यह भी चिल्ला रहे थे कि ''हवाई जहाज में जो भी गार्ड बैठा है – सामने आ जाए । हमें मालूम है कि गार्ड हवाई जहाज में बैठा है ।'' संभवतः अपहरणकर्ता यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि कहीं कोई सुरक्षा गार्ड हवाई जहाज में मौजूद तो नहीं है ।

अपहरणकर्ताओं द्वारा एक्जीक्यूटिव क्लास के यात्रियों को पीछे एकानामी क्लास में ले आया गया । सीट के ऊपर के केबीन में रखे सारे सामान को नीचे गिरा दिया गया और परिचारिकाओं द्वारा यह सारा सामान एक्जीक्यूटिव क्लास में रखवा दिया गया ।

लगभग 5.00 बजे विमान के कप्तान द्वारा यह उद्घोषणा की गई कि –''विमान का अपहरण कर लिया गया है और यात्री अपहरणकर्ताओं द्वारा दिये जा रहे निर्देशों का पालन करें'' । पायलट के अपहरण की घोषणा के उपरान्त घबराहट की भावना ने ' भय' का रूप ले लिया ।

अगले 15 घंटे विमान लगातार उड़ता रहा और कई जगह उतरता रहा । किसी एयरपोर्ट पर धीरे–धीरे उड़ान भरता था या फिर एयरपोर्ट के रनवे पर ही घूमता रहता था । इन 15 घंटों में विमान कहां–कहां उतरा कुछ समझ में नहीं आया । केवल विमान के हवाई अड्डो के ऊपर धीरे–धीरे उड़ने , हवाई अड्डों के रनवे पर धीरे–धीरे घूमते रहने, खराब 'लैण्डिंग' तथा खराब 'टेकऑफ' का अहसास होता रहा ।

जब हवाई जहाज स्थिर हो गया और काफी देर तक हवाई जहाज ने उड़ान नहीं भरी, तब बगल में बैठी सुचित्रा से पूछने पर यह ज्ञात हुआ कि प्रातः के लगभग 8.30 बजे हैं यानी 25.12.99 के 8.30 बजे चुके थे ।

15 घंटे के बाद अब सीधे बैठने का मौका मिला था , परन्तु यह ज्ञात नहीं हो पाया कि विमान किस जगह पर खडा है । विमान परिचारिकाओं के द्वारा विमान में उपलब्ध खाद्य सामग्री बंटवाई गई । साथ ही एक अपहरणकर्ता (बर्गर) ने ऐलान किया कि जो कुछ मिल रहा है, उसी पर गुजारा करना है,क्योंकि हो सकता है कि हमें 2–4 दिनों तक इसी तरह रहना पड़े । तब हमें पहली बार अपनी असहायता पर तरस आया ।

शुरू के उन घंटों में हमारे मन में भय, अनिश्चितता व असहायता के भाव थे, देशप्रेम और बलिदान के भाव कतई नहीं थे। जब धीरे–धीरे दिमाग ने दिल पर काबू पाया ,तब हमने अपने–आपको एक अनिश्चितता और खौफ का सामना करने के लिये तैयार करना शुरू किया ।

(इंडिया टुडे)

अपहृत विमान के पड़ाव

(दिनांक 30–12–99 को बर्गर द्वारा बन्धकों के छोड़े जाने के फैसले की घोषणा के बाद यह जानकारी पायलट द्वारा यात्रियों की फ़रमाइश पर पब्लिक एड्रेस सिस्टम पर दी गई)

काठमाण्डू	(24.12.99 – अपरान्ह 4.15)
लखनऊ के ऊपर	विमान अपहृत – अपरान्ह 4.45
लाहौर	हवाईपत्तन(एयरपोर्ट) प्राधिकरण द्वारा उतरने नहीं दिया गया।
अमृतसर	स्थानीय सेना/पुलिस द्वारा हमले की आशंका – ध्वंस निर्गम ; Crash landing) – विमान आधे रनवे पर खडा था । रनवे खत्म होने के सिर्फ 10 फीट पहले विमान ने उड़ान भरी ।
लाहौर	उतरने की अनुमति मिली । ईधन भरा गया । ईंधन समाप्त होने वाला था । क्रेश लैंड़िग होने से बचा ।
काबुल	उतरने की अनुमति नहीं मिली ।
दुबई / शारजाह	उतरने की अनुमति नहीं मिली । ¼ bafM:k VqMs
मिनहट (दुबई का सैनिक हवाईअड्डा)	27 यात्रियों को उतारा गया । ईंधन भरा गया ।
काबुल	उतरने नहीं दिया गया ।
कंधार	25.12.99 – प्रातः 8.30 बजे से 31.12.99 – सांय 5.00 बजे तक

(छायाचित्रा –5)

अपहृत विमान के मार्ग का रूट मैप (मार्ग नक्शा)

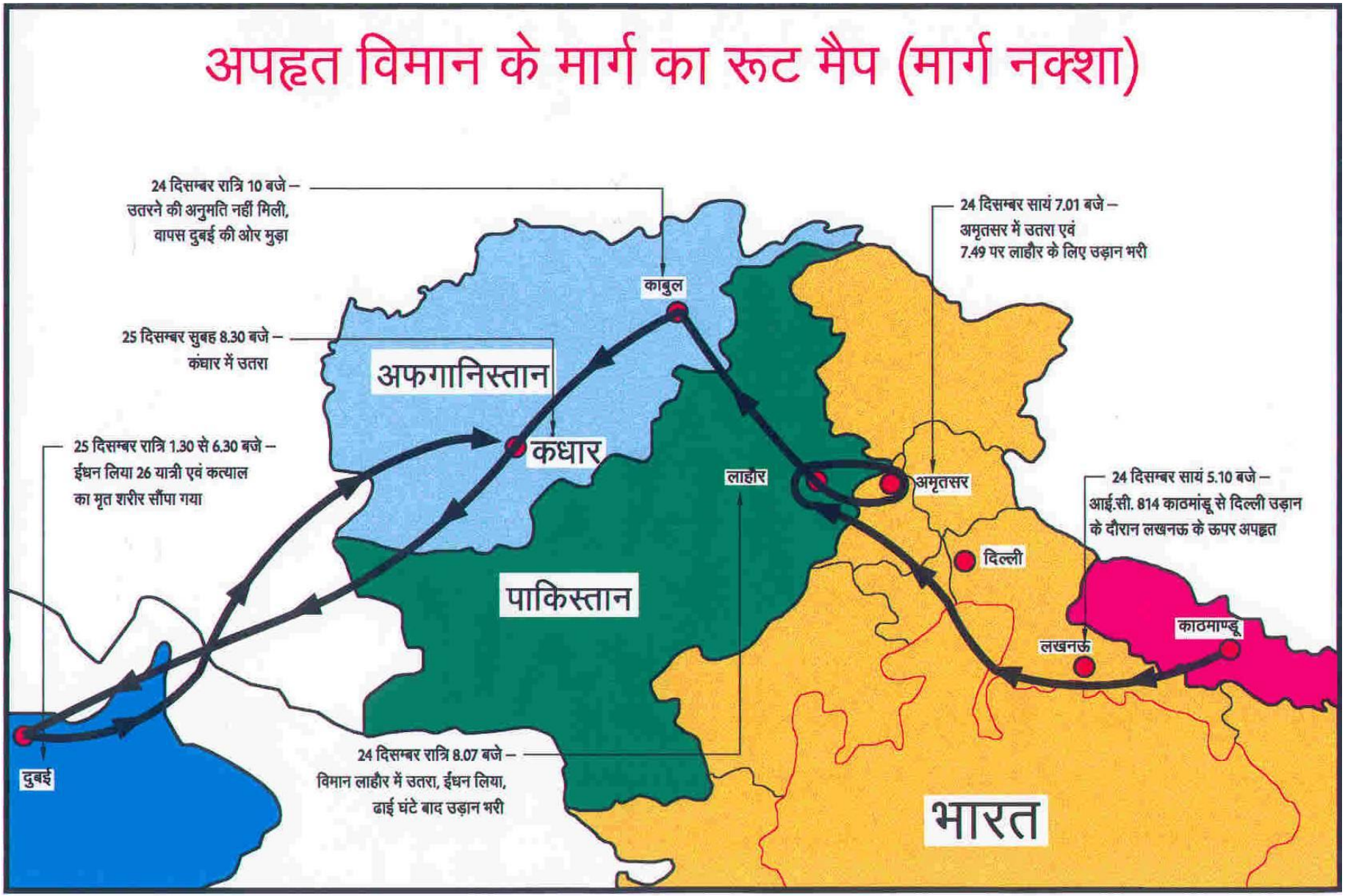

अपहृत विमान के पड़ाव – काठमाण्डू से कंधार

(दैनिक भास्कर,भोपाल)

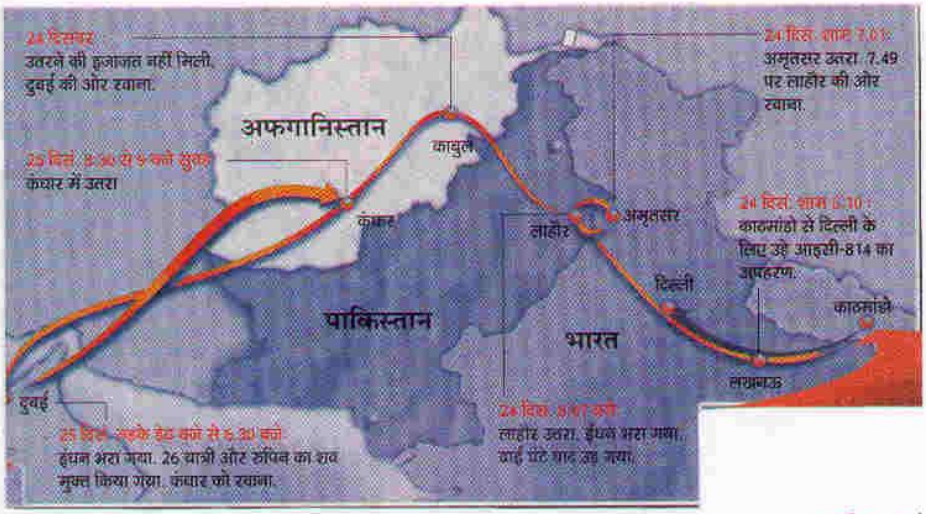

(इंडिया टुडे)

महत्वपूर्ण घटनाक्रम
(हमारे अनुभव पर आधारित)

24.12.99

- सांय 4.45 पर विमान आई.सी.–814 का अपहरण किया गया । विमान कैप्टन ने लगभग 5.00 बजे विमान अपहरण की घोषणा की ।

25.12.99

- भारतीय समय अनुसार प्रातः लगभग 8.30 बजे अपहृत विमान कंधार एयरपोर्ट पर उतरा । स्थानीय समय अनुसार कंधार में उस समय प्रातः के लगभग 7.30 बज रहे थे ।

- पूरे समय पुरूषों की आंख पर पट्टी बंधी रही । बच्चों और महिलाओं के आंखों पर पट्टी नहीं बांधी गई थी।

- सायं लगभग 6.00 बजे बर्गर ने घोषणा की कि रात्री 9.00 बजे वे विमान छोड़कर चले जायेंगें ।

26.12.99

- अपहरणकर्ता विमान में ही मौजूद थे ।

- डॉक्टर (एक अपहरणकर्ता) ने इस्लाम पर भाषण दिया ।

- रात्रि लगभग 2.00 बजे कुछ तोड़ने की आवाज आई (जैसे कोई दरवाजा तोड़ा जा रहा हो) । बाद में यह ज्ञात हुआ था कि विमान के नीचे लगेज कार्गो तोड़कर अपहरणकर्ताओं द्वारा अस्त्रा निकाले गये थे ।

27.12.99

- फ्लाईट इंजीनियर ने अपरान्ह दो बजे घोषणा की कि उन्हें भारत सरकार द्वारा यह जानकारी दी गई है कि भारतीय डेलीगेशन दिल्ली से रवाना हो चुका है और रात्रि तक पूरी समस्या का कोई निराकरण हो जायेगा ।

- सामान्य भोजन दिया गया । भेाजन में अफगानी रोटी और चिकन दिया गया ।

- सायंकाल अपहरणकर्ता सक्रिय और विचलित हुये। आंखों पर पट्टी बांधकर सर नीचे करवा दिया गया । आधे घंटे तक अपहरणकर्ताओं के भागा–दौडी की आवाज आती रही । बाद में ज्ञात हुआ कि उन्हें तालिबान सरकार द्वारा हमला किये जाने का खतरा हुआ था और वे इसका सामना करने की तैयारी कर रहे थे ।

28.12.99

- कैप्टन ने अवगत कराया कि उन्होंने डेलीगेशन से बात की है । साथ ही साथ सी.एन.एन.,यू.एन. ओ.,बी.बी.सी.,तथा अन्य मिडिया से बात करके सभी को अवगत कराया कि हमारी कोई मदद नहीं

कर रहा है । डेलीगेशन ने उन्हें अवगत कराया कि समस्या का निदान शीघ्र ही हो जायेगा , परन्तु कोई निश्चित समय नहीं बताया ।

- रात्रि में अपहरणकर्ताओं ने उग्र रूप धारण किया और अवगत कराया कि –'' डेलीगेशन कोई कार्यवाही नहीं कर रहा है। अभी हम आठ–दस को मारकर फेकेंगें तो सरकार माफी भी मांगेगी और मांग भी मानेगी ।''

29.12.99

- अपहरणकर्ताओं ने बताया कि उन्होंने बंधकों के बदले मौलाना मसूद अजहर को छोड़ने की मांग की है । मसूद के बदले वे 35 बंधकों को छोडेंगे ।

- बच्चे, वृद्ध और औरतों के 35 के समूह को एक्जीक्यूटिव क्लास ; मगमबनजपअम बसें द्ध में बिठाया गया । परन्तु देर रात उन्हें फिर वापस पीछे एकोनामी क्लास में पहुॅचा दिया गया ।

30.12.99

- प्रातः लगभग 9.00 बजे बर्गर ने घोषणा की कि सभी यात्राी दिल और दिमाग संभालकर बैठें और सुनें । ''भारत सरकार से बातचीत टूट चुकी है । अब सभी मरने के लिए तैयार हो जाये '' । विमान में दहशत फैल गई । कई यात्राी विशेष रूप से महिलायें टूट गयीं और रोने लगीं ।

- लगभग 11.00 बजे बर्गर ने बताया कि अफगानिस्तान की पहल पर बातचीत फिर से शुरू हो गई है और लगभग 70 प्रतिशत मसला हल हो गया है ।

- अपरान्ह लगभग 2.00 बजे बर्गर ने बताया कि ''समझौता पूरा हो गया है । हमारे तीन साथी छूट रहे हैं । उन्हें दिल्ली लाया जायेगा । दिल्ली से वे कंधार लाये जायेंगे । इसमें लगभग 6 घण्टे लग जायेंगे । जैसे ही हमारे साथी यहॉ आ जाते हैं , हम आपको आधे घण्टे में छोड देंगे '' ।

- अच्छा भोजन दिया गया । बाद में ज्ञात हुआ कि यह भोजन यू.एन. ओ. की ओर से था ।

31.12.99

- इन्तजार –अनिश्चितता । अच्छा भोजन दिया गया । यात्रियों ने खाना खाने से मना कर दिया ।

- पहली बार विमान की सारी खिडकियॉ पूरी तौर से खोल दी गईं । यात्रियों ने एकदम उल्लास के साथ ताली बजाई । ऐसा लगा जैसे सभी में जीवन में सूर्य की किरणों ने एक नई उमंग भर दी हो ।

- कैप्टन ने बताया कि उनकी डेलीगेशन से बातचीत हुई है । डेलीगेशन ने उन्हें अवगत कराया है कि समस्या का समाधान हो गया है और अब दिल्ली से निर्देश की प्रतीक्षा है । हर हालत में 31. 12.99 को यात्राी दिल्ली पहुॅच जायेंगे ।

- अपरान्ह 2.00 बजे के लगभग दो सफेद विमान लैण्ड करते हुए दिखाई पड़े। उसके कुछ देर बाद इण्डियन एयरलाइन्स का एक विमान भी उतरता दिखाई पडा । बर्गर ने बताया कि उनके साथी

आ गये हैं । उन्होंने बताया कि उनके साथी यू.एन.ओ. के सफेद विमानों से आये हैं न कि इण्डियन एयरलाइन्स के विमान से ।

घटनाक्रम

(समाचार पत्रों पर आधारित)

24 दिसम्बर

शाम 4.25 बजे – निर्धारित समय से दो घण्टे देरी से इंडियन एयरलाइंस के विमान एयर बस ए–300 (उड़ान संख्या आईसी–814) ने काठमांडू के त्रिभुवन अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे से उड़ान भरी ।

4.55 – विमान के भारतीय वायु सीमा क्षेत्रा में पहुंचने के बाद लखनऊ के आकाश में अपहरण ।

6.20 – विमान का पाकिस्तानी वायु क्षेत्रा में प्रवेश । विमान का लाहौर में उतारने की अपहर्ताओं की मांग पाक अधिकारियों ने ठुकराई ।

6.50 – विमान की भारतीय वायु क्षेत्रा में वापसी ।

7.00 – अमृतसर के आकाश में अपहर्ताओं ने ईधन मांगा ।

7.10 – अपहर्ता ईधन लेने के लिए विमान को अमृतसर हवाई अड्डे पर उतारने को राजी । विमान में करीब 20 मिनट तक की उड़ान के लिए ईंधन होने की सूचना ।

7.20 – विमान अमृतसर राजासांसी हवाई अड्डे पर उतरा । सुरक्षा बलों की घेरा बंदी ।

7.30 – अपहर्ताओं की यात्रियों को जान से मारने की धमकी । ईंधन टैंकर विमान की ओर रवाना ।

7.35 – पायलट कैप्टन डी0शरण का वायु नियंत्राण कक्ष (एटीसी) एयर ट्रेफिक कन्ट्रोल से संपर्क । पायलट ने अपहर्ताओं द्वारा यात्रियों को जान से मारने के निर्णय की सूचना दी । ईंधन की आपूर्ति रोकी गई ।

7.45 – पायलट ने चार यात्रियों के मारे जाने की सूचना एटीसी को दी ।

7.49 – मुश्किल से 20 मिनट की उड़ान के ईंधन के साथ विमान ने अमृतसर हवाई अड्डे से उड़ान भरी ।

8.10 – विमान के लाहौर के आकाश में उड़ने की सूचना ।

8.20 – अपहत विमान लाहौर हवाई अड्डे पर उतरा और ईंधन भरा गया ।

8.50 – अपहर्ताओं की पाक सैन्य अधिकारियों से चर्चा शुरू । मांगों की जानकारी नहीं ।

10.37 – लाहौर से दुबई के लिए रवानगी ।

1.40 – विमान दुबई और आबुधाबी के बीच मिनहट सैन्य हवाई अडडे पर उतरा। अपहरणकर्ताओं का आदेश नहीं मानने पर एक यात्री रूपीन कत्याल की हत्या ।

25 दिसम्बर

06.16 –अमीरात के अधिकारियों से बातचीत के बाद महिलाओं व बच्चों सहित 27 यात्रियों की रिहाई। रूपीन का शव सौंप दिया ।

06.31 – विमान रवाना ।

08.39 –विमान अफगानिस्तान के शहर कंधार उतरा ।

22.00 –भारत में 1994 से बंदी पाक इस्लामी नेता अजहर महमूद की रिहाई के बदले सभी बंधकों को रिहा करने की पेशकश । भारत का विशेष विमान रिहा यात्रियों को लेने रात 10.15 बजे दुबई पहुंचा।

26 दिसम्बर

10.47 –पाकिस्तान स्थित राष्ट्रसंघ के अधिकारी एरिक डी मुल कंधार रवाना । तालिबान ने उनसे मध्यस्थता का आग्रह किया ।
15.41 –अपहर्ताओं ने मधुमेह के मरीज एक यात्री श्री अनिल खुराना को रिहा किया
16.11 –अफगानिस्तान ने कहा कि बंधकों की रिहाई के लिए वह किसी भी सैन्य कार्रवाई की अनुमति नहीं देगा।
19.45 –विमान में ईंधन भरा गया ।
02.30 –रूस ने सुरक्षा परिषद से अपहरण को समाप्त करने के लिए अफगानिस्तान पर दबाव डालने को कहा।

– संयुक्त राष्ट्र के दो प्रतिनिधि इस्लामाबाद रवाना।

– विशेष विमान कंधार भेजने के लिए पाकिस्तान ने भारत को अपनी वायु सीमा से गुजरने की अनुमति दी ।

– विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह ने अपहर्ताओं से बात करने के लिए विशेष दल भेजने की जानकारी दी ।

27 दिसम्बर

– प्रधान मंत्री श्री अटल बिहारी बाजपेयी जी ने विपक्ष के नेताओं के साथ बैठक की।
– विदेश मंत्री की घोषणा –भारतीय दल अपहर्ताओं से चर्चा करेगा ।
– अपहर्ताओं ने समय सीमा तय की ,लेकिन इस पर अमल नहीं किया ।
– वार्ताकार, डॉक्टर और इंजीनियरों को लेकर भारतीय विमान कंधार पहुँचा । तालिबान अधिकारियों से चर्चा।
10.12 –तेल रिसाव से विमान की स्थिति खराब ।
11.34 –अपहर्ताओं ने पाकिस्तानी आतंकवादी को 13.40 बजे तक रिहा नहीं करने पर यात्रियों को मारने की धमकी दी ।
13.47 –तालिबान सैनिकों ने विमान को घेरा ।
13.50 –भारतीय राजनयिक द्वारा अपहर्ताओं से बातचीत ।
14.33 –अपहर्ताओं ने समय सीमा तीन घण्टे बढ़ाई ।
18.22 –राहत विमान कंधार हवाई अड्डे पर उतरा ।

28 दिसम्बर

–इंजीनियरों एवं तकनीशियनों ने विमान के तेल रिसाव को रोका । पहली बार एक अपहर्ता विमान से बाहर आया और उसने प्रत्यक्ष चर्चा की ।

टीप : घटनाक्रमों के लिए विभिन्न समाचारपत्रों में अलग–अलग समय दिये गये हैं । जो समय ज्यादा से ज्यादा समाचार पत्रों में उल्लिखित है, उन्हीं को यहाँ दर्शाया गया है ।

आतंक का सफर

24 दिसंबर: शाम 5.10 पर लखनऊ के ऊपर उड़ रहे आइसी-814 का अपहरण पांच हथियारबंद लोगों ने कर लिया. विमान में 178 यात्री और चालक दल के 11 लोग सवार थे. 7.01 पर यह एअरबस-300 अमृतसर में उतरा लेकिन इससे पहले कि तेल भरा जाता या कमांडो उसे गिरफ्त में लेते, वह अचानक 7.49 पर उड़ गया. एक यात्री रुपिन कत्याल की हत्या कर दी गई. विमान 8.07 पर लाहौर उतरा, यहां उसमें तेल भरा गया और वह ढाई घंटे के बाद काबुल की ओर उड़ गया. वहां उतरने की इजाजत नहीं मिली तो दुबई गया, जहां स्थानीय समय के अनुसार आधी रात, भारतीय समय (आइएसटी) के अनुसार रात डेढ़ बजे उतरा.

25 दिसंबर: दुबई में अपहर्ताओं ने सुबह 6.16 पर 26 औरतों-बच्चों और रुपिन के शव को मुक्त किया. आइएसटी 6.30 बजे विमान कंधार के लिए उड़ गया. कंधार में दो घंटे बाद अपहर्ताओं ने पाकिस्तानी नागरिक और हरकत के गुरु मौलाना मसूद की रिहाई की मांग की.

26 दिसंबर: संयुक्त राष्ट्र अधिकारी मुल मध्यस्थता के लिए कंधार पहुंचे लेकिन अपहर्ता भारत से बात करना चाहते थे. दिल्ली ने तालिबान से संपर्क किया. मधुमेह रोगी अनिल खुराना रिहा.

27 दिसंबर: अपहर्ताओं ने मसूद को दो दिन के भीतर रिहा न करने पर यात्रियों को मार डालने की धमकी दी. तालिबान का हस्तक्षेप.. यात्रियों के क्रुद्ध संबंधियों ने दिल्ली में प्रदर्शन किया.वार्ता करने वाले सात भारतीय अधिकारी 45 सहायक कर्मचारियों—डॉक्टरों, नर्सों आदि के साथ कंधार में. विमान की सहायक बिजली इकाई में खराबी, विमान में रहना मुश्किल हो गया.

28 दिसंबर: एक दरवाजा खोल देने से विमान के भीतर स्थिति थोड़ी सुधरी लेकिन अपहर्ताओं ने बच्चों, महिलाओं को रिहा करने की अपील ठुकराई. तालिबान ने बताया कि यात्रियों को छुआ तो विमान पर धावा बोल दिया जाएगा. अपहर्ताओं ने 20 करोड़ डॉलर और भारतीय जेलों में बंद 35 आतंकवादियों की रिहाई की मांग की. भारतीय इंजीनियरों ने विमान की मरम्मत शुरू की.

29 दिसंबर: अपहर्ताओं ने तालिबान की पहल पर रकम की मांग छोड़ दी. तालिबान ने कहा कि अगर बातचीत में प्रगति नहीं हुई तो वे विमान को जाने के लिए कहेंगे. किसी विदेशी ताकत की सैन्य कार्रवाई की संभावना से इनकार किया. बातचीत में गतिरोध.

30 दिसंबर: तालिबान की धमकी के बाद समझौता वार्ता फिर शुरू हुई. भारत ने इनकार किया कि वह आतंकवादियों को छोड़ने के लिए सहमत है लेकिन कहा कि बातचीत नाजुक दौर में.

31 दिसंबर: भारतीय विदेश मंत्री जसवंत सिंह दोपहर बाद 2 बजे विशेष एलायंस एअर बोइंग 737 उड़ान से कंधार रवाना हुए. बाद में उसी रात बंधकों के साथ वापस आ गए.

घटनाक्रम *(इंडिया टुडे)*

वे पांच

अपहरण के समय तथा अपहरण के बाद अधिकांश समय चार ही अपहरणकर्ता सक्रिय रहे। जबकि अपहरणकर्ता कुल पांच थे । इनमें से एक उनका चीफ था जो लाल मुखौटा (मंकी कैप) पहने रहता था। वह अधिकांश समय कॉकपिट में ही रहता था। अपहरण के तीसरे दिन से चीफ काकपिट के बाहर दिखाई पड़ा । वह दिन में एक या दो बार काकपिट से बाहर एक –दो चक्कर लगाता था। अपहरणकर्ता जिनका नाम निश्चित रूप से छद्म रहा होगा, अलग–अलग चरित्रा के थे । ऐसा प्रतीत हुआ कि अपहरणकर्ताओं के चयन में भी कौशल और कूटनीति अपनाई गई थी ।

बर्गर

अपहरणकर्ताओं में यह व्यक्ति सबसे अधिक सक्रिय था । यात्रियों से वार्तालाप यह अपहरणकर्ता ही करता था । बाद में यात्रियों से काफी घुलमिल गया था, विशेष रूप से बच्चों से । यह व्यक्ति एक प्रदर्शक (Performer) की तरह था और यात्रियों से मिलकर चुटकुले, शेर–शायरी, अंत्याक्षरी आदि भी करवाता था। परन्तु मौका पड़ने पर स्पष्ट शब्दों तथा कठोर स्वर में जान से मारने की धमकी भी देता था। उसके व्यवहार तथा सक्रियता से ऐसा प्रतीत होता था कि अपहरणकर्ता समूह में यह चीफ के बाद दूसरे नम्बर (सेकेण्ड इन कमाण्ड) पर था। परन्तु बाद में अखबारों से ज्ञात हुआ कि दूसरे नम्बर का व्यक्ति डॉक्टर नामक अपहरणकर्ता था । बर्गर के व्यवहार एवं बातचीत से यह झलकता था कि वह पढ़ा लिखा एवं समझदार व्यक्ति है । उसके वार्तालाप में प्रतियुत्पन्नमतित्व एवं आत्मविश्वास परिलक्षित होता था । संभवतः जब मनुष्य का दिमाग नकारात्मक कार्यों की तरफ चलता है ,तो वह ज्यादा होशियारी के साथ काम करता है ।

डॉक्टर

अपहरणकर्ताओं में से एक चश्मा पहने हुये व्यक्ति को डॉक्टर कहकर बुलाया जाता था। यह पूछने पर कि वे मेडिकल डॉक्टर हैं कि पी–एच. डी. वाले डॉक्टर ,बताया गया कि हमारे समूह का यह सबसे होशियार आदमी है और बहुत ज्ञान रखते हैं । इसलिये सब इन्हें डॉक्टर कहकर बुलाते हैं । डॉक्टर थोड़े शान्त प्रकृति के तथा दार्शनिक जैसे व्यक्ति थे । उन्होंने इस्लाम तथा अपने मकसद पर कई बार भाषण भी दिये। उनका कहना था कि हमने एक मकसद के लिये जेहाद छेड़ा है । दुनिया में जहां पर भी इस्लाम के खिलाफ जुल्म होगा ,हम उस जुल्म के खिलाफ लड़ेगे । उनका यह भी कहना था कि – 'हम हिन्दुतान और पाकिस्तान दोनों के खिलाफ हैं। हम आजाद कश्मीर चाहते हैं । हम जो भी अच्छा कर रहें हैं या आप लोगों के साथ जो भी अच्छा व्यवहार कर रहे हैं वह इस्लाम की अच्छाई है । और अगर कुछ गलत कर रहे हैं ,तो वह इसलिये कर रहें हैं कि हम इस्लाम को अच्छी तरह समझ नहीं पाये हैं। आप लोग भी इस्लाम की अच्छी बातों को समझकर इस्लाम के संदेश को फैलाये।' डॉक्टर का कहना था कि ,जब बच्चा छोटा होता है तो वह करता है जो उसके माता–पिता या आसपास की परिस्थतियां सिखाते हैं । यदि एक हिन्दू अपने बच्चे को मंदिर ले जाता है तो वह बच्चा अपने पिता की तरह हाथ जोडकर प्रणाम करना सीख जाता है । और यदि एक मुसलमान अपने बच्चे को मस्जिद ले जाता है तो वह बच्चा अपने पिता को देखकर हाथ उठाकर खुदा को तसलीम करना सीख जाता है । मैंने भी इसी तरह इस्लाम से बहुत कुछ सीखा है और इस्लाम पर बहुत रिसर्च किया है । उन्होंने इंगलैण्ड, अमेरिका, यू.एन.ओ. आदि के खिलाफ बोला और बताया कि ये देश और यू.एन.ओ.,जो हयूमन राईट्स (भ्नउंद त्पहीजे) और वूमेन राईट्स (ॅवउमद त्पहीजे) की दुहाई देते हैं, ढकोसला करते हैं। आप लोग कश्मीर में आकर देखें कि हमारे भाईयों , बहनों और माताओं पर कितने जुल्म हो रहे हैं ।

शंकर

गठीले बदन का तथा लंबे कद का शंकर अपने चेहरे को सबसे अधिक ढके रखता था तथा हमेशा सतर्क पहरेदारी करता था । सबसे कम बोलने वाले शंकर ने आखिर तक खूले तौर पर यात्रियों से कोई बात नहीं की । आखरी दिन जब सभी यात्रियों ने उनसे हंसने के लिये कहा तो उसने सिर्फ हाथ हिला दिया । तनावहीन क्षणों में भी शंकर बहुत ही कम बात करता था । उसने एक बार मुझसे बात की थी । जब 30 तारीख को बर्गर ने भारत सरकार से वार्तालाप असफल होने के फलस्वरूप सबको मार देने की धमकी दी ,तो सुचित्राा रोने लगी । सीट के पीछे गेट के पास शंकर खड़ा था । उसने मुझसे कहा –''इनको बोलो, रोने की जरूरत नहीं है । ऐसा कुछ नहीं होगा और वैसे भी रोने से क्या होगा ''।

भोला

भोला संभवतः अपहरणकर्ताओं में सबसे कम उम्र का व्यक्ति था । भोला भी बहुत कम बोलता था और अधिकतर समय धमकाने और डराने का ही काम करता था। भोला अक्सर यह बोलते हुये पाया जाता था कि 'ज्यादा रिलेक्स होने की जरूरत नहीं है । यहां शादी में नहीं आये हो' । उसने दो बार दो यात्रियों को पीट भी दिया । एक बार जब दो व्यक्ति बात कर रहे थे तो उनको अलग–अलग बैठने को कहा । परन्तु एक व्यक्ति ने जब वहीं बैठे रहने के लिये जिद किया तो उसको उठाकर दूसरी सीट पर धक्का दिया और पीट दिया । एक अन्य तनावहीन स्थिति में 30 तारीख को जब बर्गर चुटकुले आदि सुना रहा था और दूसरों को भी चुटकुले सुनाने के लिए प्रोत्साहित कर रहा था, तब भोला ने अचानक पीछे से आकर चुटकुला सुना रहे एक नेपाली यात्राी को धक्का दिया, उसके हाथ से माईक छीन कर जमीन पर पटक दिया और उसको अपनी सीट पर धक्का देकर बोला ''यहां तमाशा करने के लिये आये हो ? क्या अपने मामा की शादी में आये हो ? तुम लोगों को पता नहीं कि हम लोगों के घरों में क्या गुजर रही है?'' और लौटते समय उस व्यक्ति को जोर से एक तमाचा मार दिया । आखरी समय में भी जब सभी अपहरणकर्ता विमान छोड़कर जा रहे थे तो उसने उसी लहजे में निर्देश दिया कि 'कोई हिलेगा नहीं । हमारे जाने के बाद गेट खुलेगा और सभी एक–एक करके नीचे उतरेगें' । भोला के पास एक सेलफोन या मोबाईल रहता था जिसमें प्रायः फोन का बीप बजता रहता था । जैसे ही फोन में धंटी बजती थी भोला दौडकर काकपिट की ओर चला जाता था । इससे यह लगता था कि अपहरणकर्ता
बाहर से सम्पर्क बनाए हुए हैं तथा समय–समय पर उन्हें बाहर से निर्देश या जानकारी प्राप्त होते थे । भोला को यात्राी एंग्री यंग मैन (Angry young man) के नामसे बुलाने लगे थे ।

चीफ

चीफ लाल मुखौटा पहने अधिकांश समय काकपिट में ही रहता था । चीफ गम्भीर प्रकृति का लगा और उसने यात्रियों से कभी कोई बात नहीं की । एक–दो बार विमान के चीफ इंजीनियर के साथ बात करते हुये दिखाई अवश्य पड़ा।

अपहृत **विमान के अन्दर सीट व्यवस्था**

– अपहरण के पूर्व अपहरणकर्ता कहां बैठे थे –

A - 300 *B2* सीट चार्ट – 33 J + 215 Y = योग 243

एक्जीक्यूटिव क्लास

1 |	1ठ
2 |	***2ठ*** ←
→ ***3 |***	3ठ
4 |	4ठ
5 |	
6	क्रू

1ड	1क	1म
2ड	2क	2म
3ड	3क	3म
4ड	4क	4म
5ठ	5ड	5क

1१	1ळ
2१	2ळ
3१	3ळ
4१	4ळ
	5ळ
क्रू	6

एकानामी क्लास

7 |	7ठ
8 |	8ठ
9 |	9ठ
10 |	10ठ
11 |	11ठ
12 |	12ठ
13 |	13ठ
14 |	14ठ
15 |	15ठ
16 |	16ठ
17 |	17ठ
18 |	18ठ
19 |	19ठ
20 |	20ठ
21 |	21ठ
22 |	22ठ
23 |	23ठ
24 |	24ठ
25 |	25ठ
26 |	26ठ
27 |	27ठ
28 |	28ठ
29 |	29ठ
30 |	***30ठ***
31 |	31ठ
32 |	32ठ
33 |	33ठ
34 |	34ठ

→ ***8ड***	8क	8म	8१
9ड	9क	9म	9१
10ड	10क	10म	10१
11ड	11क	11म	11१
12ड	12क	12म	12१
13ड	13क	13म	13१
14ड	14क	14म	14१
15ड	15क	15म	15१
16ड	16क	16म	16१
17ड	17क	17म	17१
18ड	18क	18म	18१
19ड	19क	***19म*** ←	*19१*
20ड	20क	20म	20१
21ड	21क	21म	21१
22ड	22क	22म	22१
23ड	23क	23म	23१
24ड	24क	24म	24१
25ड	25क	25म	25१
26ड	26क	26म	26१
27ड	27क	27म	27१
28ड	28क	28म	28१
29ड	29क	29म	29१
30ड	30क	30म	
31ड	31क	31म	
32ड	32क	32म	
33ड	33क	33म	
34ड	34क	34म	

7ड	8क
8ळ	8ऱ
9ळ	9ऱ
10ळ	10ऱ
11ळ	11ऱ
12ळ	12ऱ
13ळ	13ऱ
14ळ	***14ऱ***
15ळ	15ऱ
16ळ	16ऱ
17ळ	17ऱ
18ळ	18ऱ
19ळ	19ऱ
20ळ	20ऱ
21ळ	21ऱ
22ळ	22ऱ
→ ***23ळ***	23ऱ
24ळ	24ऱ
25ळ	25ऱ
26ळ	26ऱ
27ळ	27ऱ
28ळ	28ऱ
29ळ	29ऱ
30१	30ळ
31१	31ळ
32१	32ळ
33१	33ळ
34१	34ळ

– अपहरणकर्ता के सीट क्रमांक – 2बी, 3ए, 8सी, 19 ई, 23 जी → ←

– हम यहां बैठे थे ⇦ अपहरण के समय , ⟩ अपहरण के बाद

– उक्त जानकारी सी.बी.आई. अधिकारियों द्वारा अपहरण कांड की जांच के दौरान की गई पूछताछ के समय प्राप्त हुई ।

कथनी और करनी

अपहरणकर्ताओं द्वारा समय–समय पर कही गई बातों को यहां पर यथासंभव उन्हीं के शब्दों में उद्धरित किये जाने का प्रयास किया गया है । उनकी बातों से यह पता नहीं चलता था कि वे क्या कह रहे हैं, क्या सोच रहे हैं और क्या करना चाहते हैं ? संभवतः इस प्रकार की बातें करना भी उनके कार्य योजना और कूटनीति का एक अंग था ।

बर्गर

- आज रात नौ बजे हम आपसे बिदा लेगें – आपने अभी तक हमारे साथ कोआपरेट (Cooperate) किया है, कुछ घंटे और कोआपरेट करें । *(दिनांक 25.12.99 सांय 6 बजे)*

- आप हमारे भाई–बहन की तरह हैं । इन्शाअल्लाह हम आपका नुकसान नहीं चाहते हैं । दुआ करें कि हम और आप दोनों ही सही सलामत रूख्सत हों ।

- क्या आपको हमारे ऊपर विश्वास नहीं है ? हमने आपसे वायदा किया है कि हम आपको सही सलामत अपने घर भिजवायेगें । यह एक सच्चे मुसलमान का वायदा है ।

- हमें मालूम है कि आप निर्दोष हैं । हम आपको मारना नहीं चाहते हैं ,परन्तु हमारे ऊपर कोई है, जिसकी हम बात मानते हैं । वह कहेगा तो हम आपको गोली मार देंगे ।

- आप सब मरने के लिये तैयार हो जाईये । हम पहले को मारेंगें तो आखिरी भी तैयार रहे । अब कुछ ही घंटों की मोहलत है । अपने खुदा से दुआ कीजिए – प्रे कीजिये । कोई रोना – धोना नहीं करेगा, केवल प्रे (Pray) करेगा – दुआ करेंगे। *(दिनांक 30.12.99 – प्रातः 9 बजे)*

- हमारे पास ऐसे वेपन्स (Weapons) हैं, जिन्हें चलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी । आप उन्हें देखते ही मर जायेगें।

- आपकी सरकार को आपके जान की कोई फिक्र नही है । आप अगर छूट भी जाते हैं ,तो आपको–अपने वतन वापस जाने में शर्म आनी चहिये ।

- आपकी सरकार ने जो डेलीगेशन यहां भेजा है, वे बाजार में बादाम और किशमिश खरीद रहे हैं । उन्हें आपके खाने की कोई चिन्ता नहीं है ।

- हमने आप लोगों के बदले अपने 36 साथियों को छोड़ने की मांग रखी थी । परन्तु आप लोगों के लिये हमने तीन साथियों के रिहा पर ही समझौता कर लिया है ।

- कोई आने वाला है। आप सभी सीधे बैठ जाईये । बेल्ट बांध लीजिए । कोई भी बात नहीं करेगा , नहीं तो शूट कर दूंगा । जो आएगा , वह आपसे कुछ नहीं पूंछेगा , नहीं तो उसे भी शूट कर दूंगा ।

(दिनांक 29 दिसम्बर के अपरान्ह में जब कोई इंजीनियर अपहृत विमान में बिजली ठीक करने आने वाला था)

- आप सब कमज़ोर हैं। हमें देखिये हम कितने मज़बूत हैं । आप लोगों को हर तरह की मुसीबत का सामना करने के लिये तैयार रहना चाहिये । अपने बच्चों को आप मज़बूत बनाईये ।

- एक बात कंहू – ' हमे आपके उदास चेहरे अच्छे नहीं लगते ; हम आपको खुश देखना चाहते हैं ।

- एक बुरी खबर है – ' खाना आ गया है ।' (दिनांक 31/12/99 को , जब सभी यात्रियों ने खाना खाने से मना कर दिया था)

डॉक्टर

- हम एक मकसद के लिये यह काम कर रहें हैं । हर इन्सान के जिन्दगी में एक मकसद होना चहिये ।

- हम जो कुछ अच्छा कर रहें हैं, वह इस्लाम का सबव है, इस्लाम की अच्छाई है । और जो कुछ हम गलत कर रहें हैं, वह इसलिये कि हम इस्लाम को सही तौर पर समझ नहीं पाये हैं ।

- आप सब इस्लाम को समझिये और इस्लाम की अच्छी बातों को अपनाइये और फैलाइये ।

- क्या आपने ऐसे भ्पहीरंबामते ;अपहरणकर्ताद्ध देखें हैं ,जो इतनी शराफत से पेश आये ? हम चाहते तो आपके साथ कुछ भी कर सकते थे ।

- हमें पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों से कुछ नहीं लेना–देना । दोनों ही बेकार हैं । आजादी के बाद से अभी तक दोनों ही कुछ नहीं कर पाये हैं। दोनों जगह लोगों की हालत खराब है । हमें आजाद कश्मीर चाहिये ।

- अमेरिका, ब्रिटेन, यू.एन.ओ. सब खाली बड़ी–बड़ी बातें करतें हैं। ह्यूमन राइट्स और वूमन राइट्स की बातें करते हैं। आप कश्मीर में जाकर देखिये – हमारे भाई , बहनों, माता और पिता के ऊपर कितने जुल्म किये जा रहें हैं ।

- हमें मालूम है कि आप मासूम हैं , निर्दोष हैं – परन्तु हमारे जिन भाईयों को आपकी सरकार ने जेल में भर रखा है , वे भी मासूम और निर्दोष हैं ।

- हम जुल्म के खिलाफ जगं कर रहे हैं । हम सिर्फ कश्मीर में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में ,जहां भी इस्लाम के खिलाफ जुल्म होगा , वहां जेहाद छेडेंगे , दुनिया के किसी भी हिस्से में ।

- आपकी सरकार सोच रही है कि हम किसी को मारेगें नहीं । अभी आठ–दस को मारकर बाहर फेंक देगें ,तो माफी भी मांगेंगे और मांगें भी मानेंगे ।

- मौलाना मसूद अज़हर के छोडने की हमने मांग की है । इनकी जुबान से इस्लाम टपकता है । आपके प्रधानमंत्रीा ने उनको सुना है । इसलिए उन्हें छोड़ना नहीं चाहते ।

- हमारी आपसे कोई जाती दुश्मनी नहीं है ,और न ही आपने हमारी किसी जमीन पर कब्जा किया है ।

भोला

- ज्यादा रिलेक्स होने की जरूरत नही है । सीधे बैठें । सामने देखें । कोई बात नहीं करेगा । (लगभग प्रतिदिन)

- क्या अपने मामा की शादी में आये हो ? मजाक सूझ रहा है । हमारे घरों की क्या हालत है , मालूम है ?
  (जब भी भारत सरकार से वार्ता गतिरोध के कारण नाराज होते थे) ।

शंकर

- इन्हें (सुचित्राा के लिये) कहिये कि रोने की जरूरत नहीं है । ऐसा कुछ भी नहीं होगा और रोने से फायदा भी क्या है ?

चीफ

- (माइक पर कहते हुये सुने गये । संभवतः डेलीगेशन से बात कर रहे थे) आप इस बात को अपने जेहन में इत्तफाक कर लें कि मौलाना मसूद के मसले को पहले हल करना है ।

विमान में

जिस क्षण से विमान का अपहरण हुआ ,एक अनिश्चिता की स्थिति निरन्तर बनी रही । यह अनिशचितता की स्थिति 169 घंटे के उपरान्त विमान से बाहर निकलते वक्त तक बनी रही । जब विमान अपहरण हुआ उस समय एक दशहत और सकते की स्थिति थी। परन्तु उस समय यह अंदाजा नहीं था कि इसका अन्त इतना भयावह हो सकता है ।

पूरे 169 घंटे यह अनिश्चितता की स्थिति व्याप्त रही कि या तो अपहरणकर्ता सभी या कुछ यात्रियों को मार देगें या अपहरणकर्ताओं को पकड़ने या उनको मार देने के प्रयास में कुछ यात्री भी मर सकते हैं, क्योंकि बाहर क्या हो रहा है इस बात का हमें कोई ज्ञान नहीं था। इसलिये यह अनिश्चितता की स्थिति और अधिक तीव्र रूप धारण किये हुये थी ।

यह तो अंदाजा लग ही गया था कि अपहरणकर्ता यात्रियों के बदले कुछ उग्रवादियों की मांग करेगें । सुचित्रा ने सर नीचे किये हुये दबी आवाज में एक बार पूछा – '' इनकी क्या मांगें हो सकती हैं ?''

मैंने जवाब दिया – '' निश्चित ही कुछ उग्रवादियों को छोड़ने की मांग इन्होंने की होगी ।''

उसने कहा –' फिर छोड़ क्यों नहीं देते ?'

मुझे समझाना पड़ा कि यदि बात दो – तीन उग्रवादियों की है, तो निश्चित ही सरकार छोड़ने पर विचार कर सकती है । परन्तु बात यदि कश्मीर की है,तो निश्चित ही हमें मरने के लिये तैयार रहना चाहिये । इसके पहले डॉक्टर अपहरणकर्ता यह बता चुका था कि ''हमें पाकिस्तान या हिन्दुस्तान दोनों से कोई मतलब नहीं है। हमें आजाद कश्मीर चाहिये ''।

इन बातों को सोचते हुये तीन तरह की स्थितियाँ दिमाग में आ रही थीं।

प्रथमतः यदि उनकी मांगें नहीं मानी जाती हैं अथवा मांग मानने में बहुत अधिक बिलम्ब होता है तो वे गुस्से में कुछ लोगों को मार सकते हैं ।

द्वितीयतः यदि कुछ यात्री प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं या निराश होकर उनके ऊपर झपटते हैं तो वे उनको तथा और अन्य लोगों को भी गोली मार सकते हैं। चूंकि सभी अपहरणकर्ताओं के हाथ में ग्रेनेड भी थे, इसलिये खतरे की आशंका बढ़ रही थी। कभी–कभी ऐसा भी लगता था कि भाग–दौड़ में यदि उनके हाथ से ग्रेनेड गिर जाता है तो बहुत अधिक खतरा हो सकता था, क्योंकि कई बार जब अपहरणकर्ता भावावेश में होते थे तो ग्रेनेड की पिन भी खोल लेते थे ।

तृतीयतः ऐसा भी लगता था कि यदि बाहर से उन्हें पकड़ने अथवा उन पर हमला करने का प्रयास किया जाता है तो भी इस लड़ाई में यात्रियों के भी मरने की पूरी संभावना बनती थी ।

15 घंटे तक लगातार उड़ने के पाश्चात् विमान जब कंधार में स्थिर हुआ तो ऐसा लगा कि अब इस घटना का अंत हो रहा है। परन्तु उसके पश्चात् भी हर क्षण अनिश्चितता की स्थिति बनी रही।

दिनांक 25 एवं 26 दिसम्बर को अपहरणकर्ताओं का व्यवहार अधिकतर सामान्य एवं कभी–कभी उग्र रहा । दिनांक 26 तक सभी पुरूष यात्रियों की आंख पर पट्टी बंधी रही । मेरे द्वारा सर झुकाये हुये कभी–कभी पट्टी को थोड़ा सा उठाकर रोशनी देखने का प्रयास किया जाता था। संभवतः सभी यात्री इस प्रकार का प्रयास कर रहे थे । बीच–बीच में अपहरणकर्ता यात्रियों को आदेश देते थे कि सीधे बैठें , आंखे बंद रखें, सर नीचा रखें, बात नहीं करें आदि–आदि। दिनांक 26 से यात्रियों को पूछकर टायलेट जाने की अनुमति देते थे । बिना अनुमति लेकर जाने अथवा खड़े होने पर अपहरणकर्ताओं द्वारा नाराजगी व्यक्त की जाती थी ।

अपहरणकर्ताओं का व्यवहार एवं प्रतिक्रिया

चारों अपहरणकर्ताओं का व्यवहार एवं प्रतिक्रियायें अलग–अलग प्रकार की थीं तथा समय के साथ–साथ उनके व्यवहार एवं प्रतिक्रियाओं में भी बदलाव आता था । ऐसा प्रतीत होता था कि जब भी उन्हें यह पता चलता था कि भारत सरकार इस संबंध में कोई कार्यवाही कर रही है और उनकी मांगों

पर विचार किया जा रहा है तो वे तनावरहित रहते थे तथा व्यवहार भी सामान्य होता था । शुरू के दिनों में उनके व्दारा एक हल्का सा खौफ़ कायम रखते हुए यह सांत्वना दी गई थी कि यदि उनकी मांगें मान ली जाती हैं तो वे सब को छोंड देंगे।

उनके व्यवहार एवं गतिविधियों से ऐसा लगता था कि वे अपने आप को सुरक्षित महसूस कर रहे हैं । जैसी कि ऐसी परिस्थितियों में अपेक्षा की जाती है कि अपहरणकर्ता भी कुछ परेशान या असुरक्षित होंगे , इनके साथ ऐसा कुछ भी नहीं लग रहा था। बल्कि ऐसा प्रतीत हो रहा था कि अपहरणकर्ता काफी तनाव रहित और सुरक्षित हैं तथा एक कमान्डिंग सिचुऐशन (Commanding situation) में हैं ।

ज्यादातर समय डॉक्टर और बर्गर ही यात्रियों से वार्तालाप कर रहे थे । डॉक्टर ने इस्लाम के संबंध में भाषण दिया तथा कश्मीर में भारतीय सैनिकों व्दारा किये जा रहे अत्याचार के बारे में भी बताया । डॉक्टर ने काफी धारा प्रवाह रूप में लगभग 25मिनट तक इस्लाम की तारीफ़ में बहुत सारी बातें बताईं और इंगलैडं तथा अमेरिका की बुराई की । उसने यह भी बताया कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान दोनों आजाद होने के इतने साल बाद भी कुछ नहीं कर पाये हैं और अभी भी दोनों देशों में लोगों की स्थिति काफी खराब है।

अपहरणकर्ताओं ने तीसरे दिन कपड़े बदले । उनके कपड़े देखकर ऐसा लग रहा था कि कपड़े नेपाल से ही खरीदे हुए हैं। वे ज्यादातर जैकेट और टी–शर्ट ही पहन रहे थे । शंकर **एडीडास** के ट्रेक सूट का अपर पहने हुए था जबकि उसका लोअर बर्गर पहने हुए था । उनका कपड़ा बदलना हमें और अधिक महसूस करा रहा था कि हम किस प्रकार एक ही कपड़े में समय बिता रहे थे।

बर्गर यात्रियों के साथ व्यक्तिगत रूप से तथा सामूहिक रूप से वार्तालाप कर रहा था । चुटकुले,शेर –शायरी खुद ने भी कहे तथा यात्रियों से भी चुटकुले तथा शेर सुनवाये।

दोनों ने बारबार इस बात पर जोर दिया कि आपके देश को आप लोगों कि कोई चिन्ता नहीं है तथा आपके बचाव के लिए कोई कार्यवाही नहीं की जा रही हैं।

27 दिसम्बर की सुबह डॉक्टर ने माईक पर अपने क्रोधपूर्ण उद्गार प्रकट किये –''आपके देश की आबादी एक अरब है। यदि आप में से 200 लोग मर भी जायेगें तो आपके अफ़सरान को कोई फ़र्क नहीं पड़ेगा। आज तीन दिन हो गये आपको बंधक बनाये , पर आपके देश की तरफ़ से कोई हरकत नहीं हुई । आपकी सरकार सो रही है । इन्हें आप लोग ही वोटों से चुनते हैं ।यू.एन.ओ. के कानों में भी सीसा डला हुआ है''।

वे ब्रिटेन के खिलाफ भी थे– 'जो भारत में आये , वर्षों राज किया और मुल्क को लूट कर ले गये '। '' आपके देश वाले हमारे सीधेपन का फायदा उठा रहे हैं, हमने ज्यादा दिन तक आपके साथ अच्छा सलूक किया । आपने देखा ,हमने आपके साथ कितना अच्छा सलूक किया । हमने औरतों की तरफ देखा तक नहीं, जबकि हम कुछ भी कर सकते थे , उन्हें मार भी सकते थे । हमने आपके सामान को नहीं छुआ ,आपके पैसे नहीं लूटे। हम चाहते तो ये सब कर सकते थे ''।

दिनांक 27 के अपरान्ह तक भारत सरकार की ओर से किसी प्रकार की कार्यवाही की जानकारी नहीं मिल पा रही थी । इसलिए वे यह बात बारबार दुहरा रहे थे ।

इस तरह की बात करने के उपरांत बर्गर ने यात्रियों से डॉक्टर के भाषण पर अपनी–अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करने को कहा ।

तीन–चार व्यक्तियों ने अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की ,जिनमें से अधिकांश ने भारत सरकार व्दारा की जा रही कार्यवाही में विलम्ब होने पर तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की और वापस भारत जाकर प्रेस तथा मिडिया में भारत सरकार के खिलाफ अपने विचार व्यक्त करने का भी आश्वासन दिया । कई लोगों ने भावावेश में अपहरणकर्ताओं को अपने नेक मकसद में सफ़ल होने के लिए शुभकामनाएं भी दे दीं ।

प्रतिक्रिया व्यक्त करने में शैबाल कर नामक एक यात्री ने ऑरोबिन्दो की युक्ति को उद्धरित किया – ''यह ज़िन्दगी एक करिश्मा है, यह करिश्मा एक बार का नहीं है, बल्कि बार–बार का करिश्मा है। जो कल बीत गया,उसके लिये हम कुछ नहीं कर सकते, जो आने वाला कल है वह हमारे वश में नहीं है। इसलिये हमें आज के लिये जीना चाहिये। कल क्या होगा इस खौफ़ में जीने का कोई लाभ

नहीं है'' । ऑरोबिन्दो एक क्रांतिकारी थे। यह ज्ञात नहीं हो सका कि उनकी इस उक्ति का यात्रियों पर क्या प्रभाव पड़ा।

अशोक आदिल नामक व्यक्ति ने समझाया कि उनके नाम के दोनों लफ़्ज़ों के मायने एक ही हैं– Justice न्याय करने वाला । मैं एक न्याय पसंद व्यक्ति हूँ और आपकी बातें सुनकर मुझे प्रतीत हुआ कि न्याय होना ही चाहिये। I Want Justice, only justice (मैं न्याय चाहता हूँ, केवल न्याय), आपके या हमारे– दोनों के साथ 'न्याय ' ही चाहता हूं।

विमान में क्रू के सदस्य, यात्रियों तथा बर्गर द्वारा सुनाये गये कुछ चुटकुले निम्नानुसार हैं :

1–एक बार प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी विदेश यात्राा पर श्री बूटा सिंह को अपने साथ ले गईं । एक बैठक खत्म होने के बाद वापसी में श्रीमति इन्दिरा गांधी ने श्री बूटा सिंह से कहा कि ' आपको कई बार कहा है कि आप अपने मोजे धो लिया करें,परन्तु आप मोजे नहीं धोते हैं और मोजे से बदबू आती है। आईन्दा मोजे धोकर ही पहना करें , दूसरे दिन एक दूसरी बैठक समाप्त होने के बाद श्रीमती इन्द्रा गांधी ने श्री बूटा सिंह से कहा कि आज भी आपके मोजे से बदबू आ रही है ,आपने मोजे नहीं धोये । आपको कितनी बार कहा है कि आप मोजे धोकर पहने । श्री बूटा सिंह ने जबाव दिया' मैडम भगवान कसम ,मैंने बिल्कुल नये मोजे पहने हैं और सबूत के लिए पुराने मोजे अपने साथ लाया हूँ ।

2–एक बार एक हवाई जहाज दुर्घटना ग्रस्त हो गया और उसके सभी यात्री मारे गये । केवल एक बन्दर बच गया। काफी जांच पड़ताल के बाद भी दुर्घटना के कारण का पता नहीं चल पा रहा था । एक्सीडेन्ट रिकार्डर आदि से भी कोई जानकारी नहीं मिल पा रही थी । फिर जांच दल ने सोचा कि बन्दर से ही कुछ जानकारी लिये जाने का प्रयास किया जाय। उन्होंने बन्दर से इशारे से पूछा कि तुम कहां थे । तो जबाव में बन्दर के इशारे से पता चला कि वह काकपिट में था। उससे पूछा गया कि पायलेट क्या कर रहा था ,जबाव में उसके इशारे से पता चला कि पायलेट कुछ पी रहा था । बन्दर से पूछा गया कि को–पायलेट क्या कर रहा था । बन्दर के जबाव से पता चला कि को–पायलेट भी कुछ पी रहा था । फिर बन्दर से पूछा गया कि तुम क्या कर रहे थे तो बन्दर ने इशारे से जबाव दिया कि बन्दर हवाई जहाज चला रहा था ।

3–पायलट लोगों का समय–समय पर सघन मेडिकल चेकअप होता है । एक बार एक पायलट का मेडिकल चेकअप हो रहा था । उससे पूछा गया कि आपने पिछली बार कब सम्भोग किया था । उसने उत्तर दिया 5–10 को। डाक्टर ने कहा कि इसका मतलब एक वर्ष पूर्व ,तो पायलट ने उत्तर दिया कि पांच बज कर दस मिनिट पर यानी एक घण्टा पूर्व ।

4–गांव में पटेल के भांजे की शादी थी । पटेल ने शादी के लिए बैण्ड–बाजे का इन्तजाम करने के लिए बैण्ड वालों से बात की । बैण्ड वालों ने कहा कि अगर पूरी बर्दी–टोपी के साथ बैण्ड–बाजा चाहिए तो 400/– रू0 में और अगर केवल पैन्ट पहने बैण्ड–बाजे वालों का बैण्ड चाहिए तो 200/– रू0 में और अगर चड़्डी में बैण्ड बजाने वाले चाहिए तो 100/– रू0 में बैण्ड मिलेगा । जब चड़्डी पहने बैण्ड –बाजे वाले शादी में पहुॅचे तो भांजे ने मामा से पूछा कि ये बैण्ड–बाजे वाले चड़्डी पहन कर क्यों आये हैं ? मामा ने भांजे को समझाया कि काफी कम पैसे में बैण्ड का इन्तजाम किया है ,तो भांजे ने जबाव दिया कि 'मामा तूने अच्छी दुश्मनी निभाई है । तेरी शादी में मुफ़्त में बैण्ड नहीं बजवा दिया तो तेरा भांजा नहीं। '

5–एक बार एक हवाई जहाज में भारतीय हाकी की टीम विदेश खेलने के लिए जा रही थी । टीम में सभी सरदार थे। जब हवाई जहाज उड़ रहा था तो खिलाड़ियों ने हवाई जहाज में ही प्रेक्टिस करना शुरू कर दिया । इसकी वजह से हवाई जहाज असंतुलित होकर हिचकोले खा रहा था । पायलेट ने को–पायलेट से कहा कि खिलाड़ियों से कहो कि वे हवाई जहाज में खेलना बन्द करें । को–पायलेट खिलाड़ियों से खेलना बन्द करने के लिए कहकर काकपिट में वापस आ गया । खिलाड़ियों ने खेलना बन्द नहीं किया और हवाई जहाज हिचकोले खाता रहा । इस बार पायलट बाहर गया और उनसे कुछ कहकर काकपिट में वापस आ गया । अब हवाई जहाज हिलना रूक गया। को–पायलेट ने पायलट से पूछा कि आपने उनसे क्या कहा कि खिलाड़ियों ने खेलना बन्द कर दिया । पायलेट ने जबाव दिया –' यदि खेलना है तो बाहर जाकर खेलो ।'

6– हरियाणा में पुरूष और महिलाएं दोनों काफी तेज माने जाते हैं । एक बार एक लड़के ने एक लड़की से कहा कि आपकी चप्पल बहुत खूबसूरत है । लड़की ने फौरन तुनक कर उत्तर दिया–'उतारूं क्या ? ' लड़के ने जवाब में कहा –' नहीं , आपकी सलवार भी बहुत खूबसूरत है ।'

ऐसा लग रहा था कि बर्गर पूरी तरह से प्रशिक्षित पेशेवर (Trained professional) की तरह यात्रियों को तनावमुक्त रखना चाह रहा था। 'स्टॉकहोम सीन्ड्रोम' (Stockholm Syndrome) की प्रक्रिया का पालन करते हुये वह प्रयास कर रहा था कि यात्राी तनावहीन रहें और अपहरणकर्ताओं के प्रति उनकी सहानुभूति बने और इसमें संभवतः वे क़ाफी हद तक सफ़ल भी हुये । एक ओर वे चुटकुले, शेर–ओ–शायरी कर रहे थे, तो दूसरी ओर बच्चों से भी घुलमिल गये थे और बच्चों को चाकलेट, सॉफ्ट ड्रिंक भी विशेष रूप से उपलब्ध करा रहे थे ।

आखिर के दो दिनों में उन्होंने बच्चों के लिये विशेष रूप से नेसले (Nesle) का दूध भी उपलब्ध कराया । बर्गर ने एक बच्चे को खड़े होकर परिवार के सदस्य की तरह दूध पिलवाया । वे अक्सर दिन में और यहां तक कि आधी रात को भी किसी व्यक्ति विशेष या यात्रियों के समूह के बीच बातचीत करते हुए दिख जाते थे । कुछ यात्रियों को उन्होंने धुम्रपान करने की भी छूट दे रखी थी । संभवतः इसका कारण भी यही था कि धुम्रपान करने वाले तनावमुक्त रहें ।

बर्गर द्वारा यात्रियों से बात करते हुये यह जानकारी मिलने पर कि पूजा नामक एक यात्राी का 27 तारीख को जन्म दिन है,उसका जन्म दिन भी मनाया गया । बर्गर द्वारा यात्रियों को प्रेरित किया गया कि वे पूजा को उपहार दें । यात्रियों ने पूजा को घड़ी, परफ्यूम आदि भेंट दिये गये । बर्गर ने डॉक्टर के शाल को अपनी तरफ से भेंट दी । जब लोगों ने बर्गर से कहा कि आपने अपनी तरफ से कोई भेंट नहीं दिया है तो उसने जबाव दिया कि मेरे पास यह पिस्तौल है । यही दे सकता हूँ।

इन सब के बावजूद बर्गर ऐसी परिस्थितियों में जब भारत सरकार की ओर से वार्ता खत्म होने की अथवा गतिरोध की स्थिति में या जब भी कोई ऐसी जानकारी मिलती थी कि उनकी मांगों तथा उनकी आशाओं के अनुरूप कार्यवाही नहीं की जा रही है , तो वह सख्त रूप अख्तियार कर लेता था और स्पष्ट शब्दों में जान से मारने की धमकी देता था ।

उन्होंने स्पष्ट शब्दों में यह कह दिया था कि– ''हमें मालूम है आप लोग निर्दोष हैं, मासूम हैं । परन्तु जैसे ही हमें ऊपर से आपको मारने का हुक्म मिलेगा , हम आपको खत्म कर देंगे ।''

वे (बर्गर और डॉक्टर) साथ में यह भी कहते थे कि – ''जैसे आप निर्दोष और मासूम हैं, उसी प्रकार हमारे वे साथी और भाई भी मासूम और निर्दोष हैं, जिन्हें आपकी सरकार ने जेल में बंद कर रखा है ।''

बर्गर का कहना था कि यात्रियों की आंखों पर पटटी बांधने और सर नीचा करके बैठने के जो निर्देश अपहरणकर्ताओं द्वारा दिये जा रहे थे वह यात्रियों की सुरक्षा के लिये ही दिये जा रहे थे ताकि यदि विमान में कुछ घटना घटती या बाहर से कोई हमला होता है तो यात्राी घबराकर इधर–उधर भागना न शुरू कर दें । साथ ही एक जगह सर झुकाकर बैठने से बाहर से आने वाली गोली से भी सुरक्षा होगी ।

यह कहना कठिन है कि यात्रियों की आंखें बंद रहने से और सर झुकाकर असहाय बैठे रहने से अधिक सुरक्षा और लाभ अपहरणकर्ताओं को मिल रहा था या कि यात्रियों को ।

शंकर और भोला यात्रियों से बहुत ही कम बोलते थे । जब वे अन्तिम दो दिनों में खुले गेट पर खड़े होकर पहरा दे रहे थे तब एक – दो यात्राी उनसे बात करते हुए देखे गये थे।

शंकर पूरे समय सतर्क दिखाई देता था और ऑखों से ही पीछे की सीट से लेकर आगे की सीट की निगरानी करता था ,और यदि कोई बात करते हुए या पीछे देखते हुए पाया जाता तो उसे सतर्क कर देता था ।

भोला अक्सर डॉट–फटकार करता था। जब भी यात्री थोड़े रिलेक्स (Relaxed) होते थे या फिर अपनी सीट को छोड़कर खड़े या घूमते पाये जाते थे तो वह डॉट कर उनको बिठा देता था ।

28 दिसम्बर को अपहरणकर्ताओं द्वारा सभी यात्रिओं के कैमरे से रील निकलवा दिये गये । शुरू में परिचारिकाओं के सहयोग से यात्रियों के साथ में रखे कैमरे के रील निकलवाये गये, फिर बाद में एक्सीक्यूटीव क्लास में रखे कैबिन बैगेज में रखे कैमरे से भी रील निकलवा दिये गये । हमने नेपाल में हिमालय पर्वत श्रृंखला के कुछ फोटो लिये थे, जिन्हें हम यादगार स्वरूप रखना चाहते थे । हमने बर्गर को निवेदन किया कि चूंकि हमारा कैमेरा कैबिन बैगेज में रखा था और हमने विमान में कैमेरा नहीं निकाला, इसलिए रील रहने दिया जाये, तो उन्होंने कहा कि – 'हमसे रील का पैसा ले लें'' । कैमरे से रील निकाल कर देते समय एक कैमरे से रील निकाल कर दूसरे कैमरे से रील

निकालने के पहले हमने फिर से शंकर को वही निवेदन किया, तो शंकर मान गये और हमारे एक कैमरे का रील बच गया।

30 दिसम्बर के सांयकाल से अपहरणकर्ता काफ़ी तनावमुक्त थे तथा यात्रियों को भी तनावमुक्त रखने का प्रयास कर रहे थे वे यात्रियों से काफ़ी घुल मिलकर बातें कर रहे थे । बर्गर एवं डॉक्टर दोनों ही विशेष रूप से यात्रियों से बातचीत कर रहे थे तथा यात्रियों को पानी, सोडा आदि भी पिला रहे थे । खास तौर पर डॉक्टर जो भी यात्री पानी मांग रहा था उन्हें स्वयं ही दौड़–दौड़कर पानी पिला रहा था । डॉक्टर दोनों हाथों में संतरे की ट्रे पकड़े हमारी तरफ संतरे बांट रहे थे; उनका सामान्य चेहरा देखकर एक यात्री ने विनोद किया– ''डॉक्टर साहब गन पॉइंट पर संतरे खिला रहे हैं''; (ट्रे के नीचे वे हाथों में पिस्तौल यथावत् पकड़े हुए थे)। यह सुनते ही आस–पास के यात्री हंसने लगे । डॉक्टर बोले, ''नहीं साहब ऐसी क्या बात है, प्यार से बांट रहे है, आप की मरजी आप लें न लें । वैसे ले ही लीजिए, आगे का क्या भरोसा ? ''

अंतिम दो दिन अपहरणकर्ताओं ने यात्रियों को भोजन का वितरण परिचारिकाओं के बजाए यात्रियों के माध्यम से ही कराया । इसके लिए उन्होंने कुछ यात्रियों को ही स्वंयसेवक (volunteers) के रूप में बुला लिया था ।

31 दिसम्बर को बर्गर एवं डॉक्टर द्वारा घोषणा की गई कि उनके चीफ ने कहा है कि – ''यदि किसी यात्री का कोई सामान या पैसा खो गया हो तो वे बताएं । यदि सामान खो गया है ,तो तब तक कोई यात्री अपना सामान एक्सीक्यूटिव क्लास से नहीं लायेगा ,जब तक कि सभी का सामान नहीं मिल जाता । और यदि किसी का पैसा खोया है ,तो उस पैसे का भुगतान चीफ द्वारा किया जायेगा ।''

साथ ही साथ बर्गर ने यह इच्छा भी व्यक्त की कि चूंकि तालिबान सरकार ने यात्रियों की जान बचाने तथा उन्हें भोजन–पानी उपलब्ध कराने में काफी मदद की है, इसलिये यात्रियों को तालिबान सरकार को कोई उपहार (सोवेनीर) देना चहिए ।

इसके लिये बर्गर ने सबकी राय ली तथा सलाह मशवरा कर यह तय हुआ कि तालिबान सरकार को एक चांदी या सोने की प्लेटिंग वाला हवाई जहाज का मॉडल भेंट किया जाये जिस पर यह लिखा हो– *´ आई. सी. 814 के यात्रियों की ओर से ´* । इसके लिए यात्रियों में से ही कुछ लोगों ने सभी यात्रियों से धनराशि एकत्रित की। कुल 71 हजार रूपये एकत्रित हुए ।

चूंकि यह राशि बहुत अधिक थी इसलिए बाद में चर्चा करके बर्गर ने यह तय किया कि इस राशि में से 50 हजार की राशि कंधार एयरपोर्ट पर स्थित अस्पताल के विकास के लिए दिया जाये क्योंकि उस अस्पताल की स्थिति काफी खराब थी । 30 तारीख को एक बीमार यात्री को उस अस्पताल में भेजा गया था और यह पाया गया था कि वहां पर कोई भी दवा या अन्य सुविधा उपलब्ध नहीं है । इसलिये बर्गर ने 50 हजार की राशि उस अस्पताल को देने की बात कही। शेष राशि से तालिबान सरकार को उपहार में देने के लिए हवाई जहाज का मॉडल खरीदना तय किया गया । उक्त कार्य के लिए तीन यात्रियों को चुना गया जिनमें से दो दिल्ली के निवासी थे तथा एक अपने व्यापार के सिलसिले में अफग़ानिस्तान (पेसावर) आते रहते थे । उक्त राशि भी इन यात्रियों को सौंप दी गई थी ।

इसी बीच विदेशी यात्रियों ने भी आपस में धन इकट्ठा किया और एक लिफाफे में बर्गर को दिया । उन्होंने कितनी राशि दी, इसका पता नहीं चला । परन्तु ऐसा लग रहा था कि उन्होंने भी काफ़ी पैसे अपहरणकर्ताओं को दिये । बर्गर ने इस राशि का कोई ज़िक्र नहीं किया ।

31 तारीख को अपहरणकर्ताओं से मुक्त होने के उपरान्त जब सभी यात्री बाहर आए तो उन्हें ज्ञात हुआ कि भारत सरकार द्वारा जो डेलीगेशन भेजा गया था उसमें चिकित्सा सामग्री सहित काफ़ी संख्या में चिकित्सक उपलब्ध थे, जिन्हें अपहरणकर्ताओं द्वारा अपहृत विमान में प्रवेश नहीं करने दिया गया था। यह जानने के बाद यात्रियों द्वारा यह तय किया गया कि उक्त 50 हजार की राशि कंधार एयरपोर्ट पर स्थित अस्पताल को देने के बजाए कारगिल फंड में भेजा जाएगा ।

भोजन

भोजन और पानी मिलना अपहरणकर्ताओं के मिजाज (mood) और उपलब्धता पर निर्भर करता था। स्वयं अपहरणकर्ता बार–बार यह कहते थे कि भोजन हमें अफ़गान सरकार से लेना पड़ रहा है । भोजन का कोई समय नहीं रहता था। जब कभी भोजन आ जाता था, भोजन उपलब्ध करा दिया जाता था ।

शुरू के दो दिनों में विमान में जो भी खाना (बिस्कुट आदि) बचा था, उसे वितरित कर दिया गया । अपहरण के बाद पहला भोजन 52 घंटे बाद मिला । 26 तारीख को बर्गर द्वारा यह एलान किया गया कि हमारे चीफ़ ने रमज़ान के मौके पर आपके लिए बिस्किट भिजवाए हैं और फ़िर परिचारिकाओं ने सबको केकनुमा बिस्किट बाँटे ।

जब भी भारत सरकार के साथ अपहरणकर्ताओं की मांग के संबंध में वार्तालाप में गतिरोध होता था, तो वे नाराज होकर खाना–पानी बन्द कर देते थे ।

खाने में संतरा,बिस्किट,चावल ,राजमा,अफगानी रोटी,चिकन आदि दिया गया । दिनांक 30 और 31 का खाना सही प्रकार से दिया गया था। परन्तु खाने की मात्राा हमेशा कम होती थी और एक पैकेट खाना दो व्यक्तियों के बीच में दिया जाता था । एक बार पैकेट में चावल दिये गये, जो सूखा होने के कारण लोग खा नहीं पाये । इसकी जानकारी मिलने पर अपहरणकर्ताओं ने दूसरी बार चावल के साथ राजमा भी मंगवाया, परन्तु तादाद कम होने के कारण किसी को चावल और किसी को राजमा मिल पाया । अफगानी रोटी काफी मोटी और बड़ी तथा कड़ी होने के कारण भी लोग नहीं खा पा रहे थे ।

शाकाहारी लोगों के लिए विशेष दिक्कत थी तथा उनके लिए अलग से खाना नहीं आता था । अफ़गानी रोटी में चिकन लपेट कर दिया जाता था । अपहरणकर्ताओं व्दारा कहा गया कि शाहाकारी लोग रोटी में से चिकन निकालकर रोटी खा लें । कुछ लोग रोटी से चिकन निकालकर रोटी को धोकर खाते हुए दिखे ।

अपहरणकर्ता भी वही खाना खा रहे थे जो यात्रियों को दिया जा रहा था । अन्तर सिर्फ इतना था कि वे कई बार चाय बनवाकर पी रहे थे जो कि यात्रियों को नहीं मिल रहा था। अपहरणकर्ताओं ने बताया कि वे लोग नींद न आने की गोली भी ले रहे थे ।

30 तारीख के अपरान्ह से जब अपहरणकर्ताओं द्वारा यह घोषणा कर दी गई थी कि अब हमें छोडा जा रहा है, तो सभी यात्रियों ने यह कहना शुरू कर दिया था कि – ''अब हमें खाना नहीं खाना , केवल जाना है।''

पानी की भी दिक्कत रही । पानी के लिए खाली बोतलें बाहर जाती थीं जो भरकर फिर अन्दर आती थीं। पानी सीमित मात्राा में उपलब्ध था । साथ ही, पानी कम पीने के लिए कहा जाता था ताकि लोग कम से कम टॉयलेट जायें ।

विमान में उपलब्ध पानी के गिलास में आधा गिलास पानी एक बार में मिलता था । कुछ यात्राी पानी नहीं मिलने के भय से अपने पास पानी इकटठा करके रखते थे । हमें भी अन्त में पानी की एक बॉटल केबिन वैगेज में से निकालनी पड़ी , जो कि हम काठमान्डू से लेकर चले थे । पानी की इस बाटल ने हमें काफी राहत दी ।

कई बार ऐसा भी हुआ कि पानी मांगने पर पानी के स्थान पर बीयर दिया गया । शुरू में आधा–आधा गिलास बियर पिलाया गया । बाद में उपलब्ध बियर के डिब्बे याात्रियों में बांट दिये गये । परन्तु साथ में अपहरणकर्ताओं द्वारा यह भी स्पष्ट कर दिया गया था कि कोई शराब नहीं पियेगा । संभवतः उन्होंने कुछ यात्रियों को शराब पीते देखा था ।

एक बार जब मैने डॉक्टर से पानी मांगा ,तो उसने अलमारी में छुपी हुई एक बाटल निकालकर उसमें से पानी दिया । डॉक्टर ने एक बाटल पानी छुपाकर रखा हुआ था । सुचित्राा ने जब एक बार डॉक्टर से पानी मांगा तो उसने जबाव दिया '' पिस्ते है ,बादाम हैं जो चाहिए ले जाईये , पानी नहीं है'' ।

दिनांक 30 दिसम्बर को अपहरणकर्ताओं द्वारा यात्रियों को टूथ पेस्ट एवं टूथ ब्रश भी बांटे गये। संभवतः यह सब संयुक्त राष्ट्र संघ ;न्छब्द्ध द्वारा उपलब्ध कराये गये थे ।

विमान में बांटे गये टूथपेस्ट और टूथब्रश का छायाचित्र

kandhar1304a

टॉयलेट (शौचालय)

विमान में पीछे की तरफ चार तथा एक्जीक्यूटिव क्लास में दो टॉयलेटस थे । चूँकि एक्जीक्यूटिव क्लास के यत्रियों को भी पीछे बिठाया गया था इसलिए सभी यात्री एवं विमान क्रू (ब्लमू) के सदस्य पीछे के चार टायलेट्स का ही उपयोग कर रहे थे । विमान परिचारिकायें भी पीछे के टायलेट्स का ही उपयोग नाक पर साड़ी लगाकर कर रही थीं ।

दूसरे दिन से ही टायलेट पूरी तरह से भर गया था तथा लेट्रीन के पाईप लाइन्स पूर्णतः चोक हो गये थे । चूँकि अधिकतर लोग ,विशेष रूप से विदेशी यात्री, टिस्यू पेपर का उपयोग कर रहे थे , इसलिए टायलेट में टिस्यू पेपर के भरने से वह चोक हो गया था । टिस्यू पेपर समाप्त होने पर यात्रियों ने अखबार, फिर उसके बाद पत्रिकाओं (मेगजीन) के कागजों का उपयोग किया। जिसके फलस्वरूप न सिर्फ टॉयलेट शीट बल्कि पूरा टॉयलेट और फर्श कागजों से भर गया था ।

साथ ही जमीन पर पड़े हुए इस्तेमाल किये गये सेनेटरी पैडस (Sanitary pads) टॉयलेट की स्थिति को और अधिक घृणित बनाए हुए थे ।

तीसरे दिन से काफी बदबू आने लग गई थी और चौथे दिन से टॉयलेट चोक होने के कारण बहकर बाहर आने लग गया । विमान में जो पर्दे उपलब्ध थे, उनको निकालकर टॉयलेट के दरवाजे के सामने फ़र्श पर डाल दिया गया ,जो कि थोड़ी ही देर बाद गीले हो गये और उन्हीं पर्दों पर से चलकर समस्त यात्री टॉयलेट जा रहे थे एवं अपने स्थान पर वापस आ रहे थे । जब भी कोई व्यक्ति टॉयलेट जाकर वापस आता था, उसके साथ ही बदबू विमान में फ़ैल जाती थी ।

पीछे बैठे हुए यात्रियों को विशष रूप से बदबू झेलनी पड़ रही थी । जब अपहरणकर्ताओं को भी यह बदबू असहनीय हो गई तो उन्होंने समय–समय पर पीछे का दरवाजा खोलना शुरू किया । पीछे बैठे हुए लोग बार–बार अपने परफ़्यूम स्प्रे कर रहे थे ।

क्रू (Crew) सदस्य श्री अनिल शर्मा विशेष रूप से समय–समय पर पूरे विमान में स्प्रे कर रहे थे । हमारे पीछे बैठी एक महिला यात्री ने उन्हें कहा कि ऐसा लगता है कि '' आप वापस जाकर आधी रात में उठकर घर में स्प्रे करेंगे और आपकी पत्नी आश्चर्यचकित होंगी '' ।

वर्गर ने भी एक बार मज़ाक में कहा कि अब कोई यात्री टॉयलेट नहीं जायेगा।

टॉयलेट की सफाई के संबंध में कई बार अपहरणकर्ताओं से तथा पायलट से यात्रियों व्दारा निवेदन किया गया । कैप्टन ने भी अवगत कराया कि जब भी उनकी बात भारत से वहॉ पहुंचे डेलीगेशन से हुई, उन्होंने हर बार टॉयलेट की सफाई के संबंध में बात की। परन्तु संभवतः पूर्ण रूप से चोक हो जाने के कारण टॉयलेटस का साफ होना संभव नहीं था ।

दिनांक 29 को स्थानीय व्यवस्था से अपहरणकर्ताओं ने दो अफगानी व्यक्तियों के माध्यम से टॉयलेटस साफ़ कराये। परन्तु उन्होंने मात्रा फर्श पर पड़े हुए कागज आदि साफ किये और कुछ घण्टों बाद ही टॉयलेटस की स्थिति यथावत् हो गई ।

दिनांक 31 को दोपहर पुनः अफ़गानी व्यक्तियों व्दारा टॉयलेटस साफ कराये जाने की कार्यवाही की जा रही थी । परन्तु अचानक डॉक्टर ने आकर बर्गर से कहा कि अब छोड़ो यह सब काम, इसकी ज़रूरत नहीं है । इस दिन तीन–चार अफ़गानी टॉयलेटस साफ करने अंदर आये थे ।

बर्गर बिलकुल मेरे बगल में खड़ा होकर एक अफगानी से कुछ कह रहा था । मैने ध्यान से सुनने की कोशिश की । बर्गर कह रहा था – ' आप तो एयरपोर्ट मैनेजर हैं न ? 'हां' – उसने उत्तर दिया । बर्गर ने फिर कहा – 'सब ठीक है न ? ये सब अपने ही आदमी हैं न ? संभवतः उसने कहा – 'सब ठीक है? . . . . . इतने में शंकर ने मुझे देखा और सीधे होकर बैठने को कहा । मैं सीधा होकर बैठ गया ।

इसके लगभग दो–तीन घण्टे पश्चात ही हम लोगों की रिहाई हो गई ।

यदि दो दिन और इस हालत में विमान में रहना पड़ता तो निश्चित ही टॉयलेटस के कारण काफ़ी लोग बीमार पड़ जाते। टायलेट की स्थिति इतनी खराब थी कि मैं (अजय) पूरे सात दिन टायलेट नहीं गया । ऐसा लगा कि कुछ और यात्री भी टायलेट नहीं जा रहे थे । इससे यह स्पष्ट

होता है किसी भी विषम परिस्थितियों में मनुष्य कितना अधिक सहनशील और कष्ट–सहिष्णु हो जाता है । संभवतः बडी तकलीफ़ में छोटी तकलीफ़ों का ऐहसास नहीं हो रहा था ।

हवा और रोशनी

हवा और रोशनी दोनों ही कृत्रिाम तौर पर प्राप्त हो रहे थे । शुरू के 144 घंटे विमान की बिजली प्रणाली द्वारा हवा और रोशनी मिल रहा था । विमान खड़े होने के लगभग 72 घंटे बाद विद्युत प्रणाली ने काम करना बंद कर दिया । उसे ठीक कराया गया । और लगभग 72 घंटे बाद फिर बंद हो गया । अंतिम दो दिन बिजली प्रणाली ने काम करना बंद कर दिया था । वैसे तो ए.सी. सिस्टम से हवा आ रही थी । बिजली की रोशनी भी थी । परन्तु उनमें वह बात नहीं थी जो प्राकृतिक वायु और रोशनी में होती है । सभी लोग प्राकृतिक हवा के बयार और सूरज की रोशनी के लिये तरस रहे थे । अंतिम दो दिनों में जब विमान के आपरेटिंग सिस्टम ने काम करना बंद कर दिया था तो आगे और पीछे के दरवाजे बीच–बीच में खोल दिये जाते थे , ताकि ताजी हवा और रोशनी से यात्रियों को थोड़ी राहत मिलती रही।

धूम्रपान

अपहरणकर्ताओं ने जब धूम्रपान करने वालों को धूम्रपान करने की छूट दी ,तो शायद उन्हें बहुत राहत मिली । यात्राी टॉयलेटस के पास के सर्विस केबिन में खड़े होकर धूम्रपान करते थे ।

विमान में नान स्मोकिंग ज़ोन एवं धुआं बाहर निकलने की व्यवस्था न होने के कारण धुआं अंदर ही भर जाता था । बाद में धूम्रपान करने वालों की सिगरेट पीने की आवृत्ति (Frequency) बढ़ती जा रही थी । कुछ महिलाएं भी धूम्रपान कर रहीं थीं । कुछ लोग टायलेट में जाकर भी धूम्रपान करने लगे थे ।

पीछे बैठे यात्री अब शिकायत करने लगे थे । सुचित्रा को धुएं से कुछ ज़्यादा तकलीफ़ हो रही थी । उसने यात्रियों को धूम्रपान न करने का निवेदन किया । बाद में जब यात्राी नहीं माने तो उसने बर्गर से भी धूम्रपान रोकने के लिये निवेदन किया ।

विमान के पर्सर श्री शर्मा ने भी लोगों को धूम्रपान करने से मना किया और अपहरणकर्ताओं को भी धूम्रपान रोकने के लिए निवेदन किया । श्रीमति नैथानी को धूम्रपान करने वालों से थोडी सहानुभूति थी । उन्होंने कहा –''इनकी भी क्या गलती है । ये बेचारे भी कब तक बिना सिगरेट पिये रहें ।''

बाद में जब धुआं अधिक भरने लगा और लोग बर्गर से धूम्रपान रोकने के लिए शिकायत करने लगे , तो बर्गर ने भी यात्रियों को धूम्रपान करने से मना किया और कहा –''आप हिन्दुस्तानी बहुत अधिक स्मोकिंग करते हैं । वापस जाकर किसी को अगर कैंसर हो जाए तो हमें इल्ज़ाम नहीं देना ।''

प्रतिक्रिया बंधकों की

अपहरणकर्ताओं व्दारा यात्रियों के साथ–साथ विमान के क्रू (Crew) के सदस्यों को भी बंधंक की तरह ही रखा गया था। क्रू के सभी सदस्य यात्रियों के मध्य ही बंधंकों के समान बैठते थे । एक्जीक्यूटिव क्लास के यात्रियों को भी एकानामी क्लास में बैठा दिया गया था । इस प्रकार कुल 155 यात्रीा और क्रू के 11 सदस्य अर्थात 165 बंधक इकानामी क्लास में बैठे हुए थे ।

विमान स्टाफ (क्रू)

क्रू सदस्यों ने पूरे अभियान में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई । क्रू के दो महत्त्वपूर्ण सदस्य–बुजुर्ग इंजीनियर एवं युवा पायलट की विशेष भूमिका रही । अपहरणकर्ताओं का इन दोनों व्यक्तियों के साथ विशेष वार्तालाप होता रहता था ।

शूरू –शूरू में इंजीनियर और पायलट को बार–बार अन्दर बुलाया जाता था । ऐसा प्रतीत होता था कि इंजीनियर से अपहरणकर्ताओं व्दारा विमान के संबंध में तकनीकी मार्गदर्शन के साथ –साथ अन्य मसलों पर भी सलाह मशविरा किया जाता था । वे अपने बुजुर्ग तथा सबसे वरिष्ठ होने की भूमिका वखूबी निभा रहे थे । टायलेट जाते समय वे यात्रियों की तरफ मुस्कुराते हुए एक विशेष भाव के साथ देखते थे तो ऐसा प्रतीत होता था कि वे आँखों से तथा अपने भाव से यात्रियों को सांत्वना दे रहे हैं तथा उन्हें ढाढ़स बंधा रहे हैं। जब कभी यात्रीा उनसे पूछताछ करते तो वे थोड़े शब्दों में जबाव देते कि ''सब ठीक हो जायेगा ''। अन्त में जाते समय बर्गर जब इंजीनियर के साथ यह कहकर मिला कि यह मेरे पिता के समान हैं तो इंजीनियर ने बर्गर को एक टार्च देकर कहा कि यह टार्च लोगों को रोशनी देता है । तुम भी सही रास्ते पर चलो और दूसरों को सही रोशनी दिखाओ।

दूसरी ओर पायलट भी शुरू से अन्त तक स्वयं का संयम बनाये रखते हुए यात्रियों को भी संयम बनाये रखने के लिए प्रोत्साहित करते रहे । यद्यपि वे अपनी मुस्कान से अपने तनाव को छुपाने का प्रयास करते रहे , परन्तु उनके चेहरे से तनाव के भाव परिलक्षित होते थे। फिर भी वे निरन्तर यात्रियों को सांत्वना देते रहे तथा उन्हें ढाढ़स बंधाते रहे । कैप्टन ने बताया कि शुरू के 15 घंटों में उन्होंने लगातार बन्दूक की नोक पर विमान को उड़ाया और उनके कहने पर बारबार लैंडिंग और टेक–आफ़ किया । ऐसे तनावपूर्ण स्थिति में बंदूक की नोक पर विमान उड़ाते हुए जिस सूझबूझ और संयम का परिचय उन्होंने दिया , वह निशचित ही सराहनीय था।

एक मौके पर उन्होंने यात्रियों को बताया – ''यदि ऐसा कोई मौका आयेगा तो मै स्वंय आप लोगों को दरवाजे से कूदकर भागने की सलाह दूंगा ,जिसमें कुछ लोगों के मरने की संभावना रहेगी ,परन्तु काफी लोग मरने से बच जायेंगे ।''

अपहरणकर्ता प्रायः उन्हें अन्दर (कॉकपिट में) ले जाते थे । संभवतः समझौता वार्तालाप में उनकी मदद लेते थे । पायलेट समय–समय पर भारतीय डेलीगेशन तथा अन्य बाहरी संस्थाओं ,जैसे– यू.एन.ओ.,सी.एन.एन.,बी.बी.सी. एवं अपहरणकर्ता से हुई बातचीत से यात्रियों को अवगत कराते रहते थे । समझौता वार्तालाप में विलम्ब होने के कारण यद्यपि वे भी दुःखी और निराश थे । परन्तु साथ में उन्होने यह भी समझाया कि संभवतः किन्हीं कारणों से फैसले में विलम्ब हो रहा है।

पायलट का कहना था कि भारत सरकार को यह करना चाहिए था कि हाईजैक होते ही एक–दूसरे हवाई जहाज को इस हवाई जहाज के पीछे लगा देना था कि ताकि अपहृत विमान की पूरी जानकारी निरन्तर मिलती रहती ।

उनका प्रयास यह भी रहता था कि अपहरणकर्ता भी तनावमुक्त और सामान्य मूड में रहें । अपहरणकर्ता विशेष रूप से बर्गर के साथ काफी घुलमिलकर बातें करते थे। एक बार उन्होंने बर्गर व्दारा कही गई बात को ही दोहराते हुए घोषणा की कि –''बर्गर ने हमें छोड़ने का वायदा किया है । वे एक सच्चे मुसलमान हैं, इसलिए अपने वायदे को निश्चित रूप से निभायेंगे, इसलिये आप लोग निश्चिंत रहें ''। पायलट माहौल को सामान्य बनाये रखने के लिए चुटकुले भी सुनाते रहते थे ।

जब पहली बार पायलट कॉकपिट से बाहर आये तो वे बिना कैप के थे और जब 31.12.99 को अपहरणकर्ता विमान छोडकर चले गये , तब पायलट कॉकपिट में गये और अपना कैप पहनकर बाहर आकर अपहरणकर्ताओं के विमान से चले जाने की घोषणा की । तब सब यात्रियों को यह लगा कि विमान अब पायलट के कमाण्ड में पुनः आ गया है । सभी ने ताली बजाकर और 'भारत माता की जय' के नारे लगाकर उनका स्वागत किया । 'थ्री चियर्स फार पायलट' के नारे भी लगे ।

परिचारिकाएँ

परिचारिकाओं की भूमिका भी अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही । अपहरण के प्रारंभ में अपहरणकर्ताओं ने उनका उपयेाग बंधकों को पट्टी बंधवाने ,केबिन से अपहरणकर्ताओं व्दारा नीचे गिराये गये लगेज को एक्जीक्यूटिव क्लास में रखवाने आदि कार्यों में किया , जिसे वे बड़ी शांत मुद्रा में मुस्कुराते हुए करती रहीं। बाद में अपहरणकर्ताओं व्दारा उन्हें समय–समय पर यात्रियों को पानी पिलाने तथा भोजन कराने के लिए निर्देश दिये जाते थे ।

ऐसा प्रतीत होता था कि उनका यह प्रयास रहता था कि यात्रियों को पानी और भोजन के लिए कोई तकलीफ न हो । ऐसी विषम परिस्थितियों में भी वे सामान्य परिस्थितियों की तरह पानी तथा भेाजन देने का प्रयास करती थीं ।

यात्रियों व्दारा बार–बार पानी ,भोजन की मांग या शिकायत करने पर अनायास ही उनके मुँह से निकलता था कि ''जो कुछ हमारे पास है या जो कुछ अपहरणकर्ताओं व्दारा दिया गया है, वह सब हम आपको दे रहे हैं ''। परन्तु वे कभी उत्तेजित नहीं हुई । कई बार पानी एवं भोजन वितरण करते हुए वे यात्रियों को विशेष रूप से सांत्वना देती थीं तथा यह भी जानकारी देती थी कि शायद अब हम लोग छूट जायेंगे । अन्तिम दो दिनों के तनावमुक्त माहौल में जब उनको शाबासी देते हुए कहा गया कि आप ऐसी स्थिति में भी मुस्कुराते हुए जो कार्य कर रही हैं , वह तारीफ योग्य है, तो उन्होंने कहा कि यह तो हमारा कर्तव्य है और ट्रेंनिग का एक पार्ट है। परन्तु यह निश्चित है कि वे भी तनाव में थीं तथा छः में से एक–दो परिचारिकाओं के चेहरे से तनाव विशेष रूप से झलकता था ।

जब 31 तारीख को छूटना लगभग तय हो गया था तब उनमें से कुछ रोते हुए दिखाई पड़ीं –शायद वे खुशी के आंसू थे या वे आँसू थे जिन्हें उन्होने अब तक रोक रख था ।

विदेशी यात्री

विदेशी बंधकों की संख्या लगभग 20 रही होगी । इनमें कुछ महिला तथा पुरूष काफी वृद्ध थे।अधिकांश विदेशी बंधक शांत एवं चुपचाप बैठे रहते थे । ऐसा प्रतीत होता था कि भाषा के कारण वे अन्य यात्रियों तथा अपहरणकर्ताओं से बहुत कम बोलते थे । दो–तीन यात्री जिन्हें अंग्रेजी आती थी , अन्य यात्रियों से बातें करते थे।

इनमें से एक दो यात्रियों की तबियत भी खराब हो गयी थी । दो महिला एवं दो पुरूष तो विशेष रूप से बहुत ही वृद्ध थे । ये लगभग 65–70 वर्ष के रहे होंगे । परन्तु बहुत शांत दिखाई पडते थे एवं आमना–सामना होने पर मुस्कुराते भी थे।

कुछ के चेहरे पर तनाव दिखाई देता था । एक युवा विदेशी यात्राी अपने आँसुओं के साथ मुस्कुराती रहती थी ।

इनमें एक यात्री ऐसा भी था , जो 1991 में विश्व बैंक में काम करता था तथा उससे मेरी मुलाकात 1991–92 में दिल्ली में हुई थी । शुरू में उसकी तबियत काफी खराब हो गयी । बाद में ठीक हो गयी । भारत सरकार का अपहरणकर्ताओं के साथ समझौता होने के उपरांत उसने मुझसे एक बार पूछा कि क्या भारत सरकार अपने समझौते पर कायम रहेगी । मेरे व्दारा '' लेट्स होप सो '' कहने पर संभवतः वह थोड़ा निश्चिंत हुआ और मुस्कुराते हुए वापस चला गया ।

दो विदेशी युवा महिलाओं, जो कि केवल टी–शर्ट पहनती थी, को बर्गर ने एक बार कहा कि ' जैकेट पहन लें'। वे महिलाएं संभवतः कारण नहीं समझ सकीं ,परन्तु उन्होंने जैकेट पहन लिया ।

एक नेपाली महिला विशेष रूप से परेशान रही ,क्योंकि 25 तारीख को उसके दो लड़के इंगलैडं से दिल्ली आने वाले थे और वह उन दोनों लड़कों को लेने दिल्ली जा रही थी । चूंकि बच्चे

छोटे थे और पहली बार भारत आ रहे थे ,इसलिये वह काफ़ी परेशान थी । उसका कहना था कि दिल्ली में अपनी मां को न पाकर बच्चे काफी परेशान होंगे । वह बार–बार अपहरणकर्ताओं से कहती थी कि '' भैया हमें कब छोड़ोगे'' । वह यह भी कहती थी कि –''हमें तो भारत , पाकिस्तान,कश्मीर किसी से कुछ लेना –देना नही है । हमें क्यों पकड़ रखा है ''।

उसकी परेशानी सुनकर विमान के फ़्लाईट इंजीनियर ने भी एक बार उसे छोड़ने की सिफारिश की, परन्तु अपहरणकर्ताओं ने उन्हें छोड़ने से मना कर दिया , परन्तु उसके पति को खबर करने के लिए आश्वासन दिया और उसके पति का टेलीफोन नम्बर लिया । एक बार जब उस नेपाली महिला ने डॉक्टर से पूछा कि 'भैया हमें कब छोड़ोगे' तो डॉक्टर ने जबाव दिया कि , 'जब आप लोग हमें छोड़ेंगे' । उस महिला ने कहा कि 'हमने आपको कहां पकड़ रखा है, इस पर डॉक्टर ने नाराज होकर कहा ''बस आगे एक लफ्ज़ भी नहीं कहना, चुप हो जाईये ।'' यह महिला अन्य यात्रियों से भी बहुत ज्यादा बातें करती रहती थी । एक बार डॉक्टर इस महिला को एक्जीक्यूटिव क्लास की ओर ले गया ,वापस आने के बाद उस महिला ने बातचीत बिल्कुल बन्द कर दी या कम कर दी । संभवतः या तो उसे धमकाया गया था या फिर समझाया गया था।

विदेशी यात्रियों में एक जापानी महिला भी आर्कषण का केन्द्र रही । वह बार–बार धुम्रपान करने के लिए टॉयलेट जाती थी और मना करने पर भी सिगरेट छुपाकर धुम्रपान कर आती थी और पूछने पर कहती थी कि 'मैंने धुम्रपान नहीं किया है '। बर्गर ने उस मोटी जापानी महिला तथा एक मोटे नेपाली बंधक के बीच दोस्ती कराने के लिए उनकी बातचीत कराई । बाद में बर्गर ने बताया कि उस जापानी महिला ने बर्गर को शादी का आफर दिया है।

अन्य यात्री

शेष यात्रियों में कुछ शांत होकर बैठे रहते थे ,कुछ परेशान रहते थे और पूछते थे कि कब छूटेंगे । उल्लेखनीय है कि बच्चे भी काफी शांत रहते थे । सिर्फ एक बच्ची ,जिसकी मां को दुबई (मिनहट) में उतार दिया गया था , रोती रहती थी और उसके पिता तथा अन्य महिलायें उसको संभालती थीं। शेष बच्चे पूरे समय शांत रहे ।

बर्गर बच्चों को समय–समय पर फल एवं चाकलेट देता रहता था । एक बच्चा बर्गर के साथ काफी घुलमिल गया था और बर्गर से चाकलेट तथा कोल्ड ड्रिंक्स की फरमाइश किया करता था । बर्गर भी उसकी फरमाइश को पूरा करने की कोशिश करता रहता था ।

विमान में लगभग 7–8 हनीमून कपल्स (युगल) भी थे ,जो एक–दूसरे को सांत्वना देते रहते थे । तीन –चार हनीमून कपल्स और शैबाल द्वारा एक ग्रुप बनाया गया था , जो माहौल को तनावमुक्त बनाये रखने के लिए कोशिश करता था । वे आपस में काफी बातचीत करते रहते थे। अपहरणकर्ताओं द्वारा जब भी यात्रियों के बैठने की व्यवस्था में परिवर्तन कर इन्हें इधर–उधर बिठाया जाता था तो इस समूह को छेड़ा नहीं जाता था ।

संभवतः एक भावना उनमें यह भी थी कि यदि अपहरणकर्ताओं द्वारा सेलेक्टिव किलिंग किया जाता है और कुछ ही लोगों को मारा जाता है तो उनको छोड़ दिया जायगा । यद्यपि इस समूह ने विमान के अन्दर पीछे की तरफ एक तनावमुक्त वातावरण बनाकर रखा था ,परन्तु 30 तारीख को जब बर्गर द्वारा सबको मार डालने की घोषणा की गई तो वे भी टूट गये और उन्होंने भी रोना तथा बिलखना शुरू कर दिया ।

अनुपमा ,जो हमारे सामने की सीट पर बैठी थी और रोते हुए सुचित्राा को सांत्वना दे रही थी, भी बाद में रोने लगी। अनुपमा और उसके पति संजय ने अपने चार साल की पुत्राी के लिए एक पत्रा लिखकर बर्गर को सौंपा । 29 तारीख को बर्गर ने वह पत्रा नहीं लिया,परन्तु 30 तारीख को वह पत्रा ले लिया । फिर 31 तारीख को वह पत्रा अनुपमा को वापस करते हुए उससे कहा कि –'अगर यह पत्रा मेरे पास से बरामद हो गया तो आप लोगों को काफी दिक्कत हो जायेगी '। ऐसा कहकर उसने वह पत्रा अनुपमा को वापस कर दिया ।

हमारे पीछे बैठी श्रीमति नैथानी को पूर्ण विश्वास था कि अन्ततः सब (या वे) बच जायेंगे । वह अन्त तक सभी से यही कहती रहीं और उसके चेहरे के भाव से भी ऐसा लगता था कि उन्हें पूर्ण विश्वास था कि कोई अप्रत्याशित घटना नहीं घटेगी । जब 30 दिसम्बर को बर्गर ने सबको मारने की घोषणा कर दी तब सुचित्राा ने उनसे पूछा–''अब आपको क्या लग रहा है!'' तब भी उन्होंने कहा कि –''अभी भी मुझे लग रहा है कि सब ठीक हो जायेगा।''

परन्तु उनके समूह के अनिल को यह विश्वास नहीं था और उसे लग रहा था कि कुछ भी हो सकता है ,क्योंकि अपहरणकर्ताओं द्वारा कई प्रकार की विरोधाभासी घोषणायें की गई थी । अनिल को शुरू में सामने हांथ बांधकर बैठा दिया गया था । इसलिए वह शायद ज्यादा भयभीत था और उसे बहुत अधिक भरोसा नहीं था।

हमारे बगल की सीट में बैठी हुई एक महिला अक्सर रोने लगती थी,विशेष रूप से जब अपहरणकर्ताओं द्वारा यात्रियों को मारने की धमकी दी जाती थी । उसकी आंखों में आंसू होते थे और होंठों पर 'हनुमान चालीसा' के बोल । उसके आसपास की दो महिलाएं भी 'हनुमान चालीसा' में उनका साथ दे रहीं थीं । बाद में 30 दिसम्बर को बर्गर द्वारा सबको मारने की घोषणा के बाद आसपास बैठी कुछ अन्य महिलाएं भी 'हनुमान चालीसा' पढ़ने में जुट गईं ।

तनावमुक्त माहौल में जब चुटकुले और शायरी का दौर चल रहा था , तब एक समय यह मालूम पड़ा कि बर्गर के एक लड़की हुई है । इस अपहरण की तैयारी में व्यस्त रहने के कारण वह दो माह से घर नहीं जा पाया था । एक महिला यात्री ने बर्गर से पूछा –' भैया आपने अपनी लडकी का क्या नाम रखा है।' बर्गर ने उत्तर दिया – 'अभी हमने कोई नाम नहीं रखा है । आप कोई नाम सुझाईये ?' एक अन्य यात्राी ने कहा – ''आपका नाम बर्गर है तो आप अपनी बिटिया का नाम पिज़्ज़ा रख दीजिये'' । बर्गर हँसा परन्तु चेहरा ढका होने के कारण यह समझ पाना मुश्किल था कि वह खुश हुआ या नाराज ।

तीसरे दिन से कुछ यात्री अस्वस्थ भी होने लगे थे । लगभग 10–12 यात्राी इस दौरान अस्वस्थ हुए और काफी यात्रियों ने दवाईयां लीं । तीन – चार यात्राी दिल की बिमारी और डायविटीज की शिकायत कर रहे थे । कुछ यात्राी भय से भी आक्रांत थे। कुछ यात्राी संभवतः अधिक बिमार होने का बहाना कर रहे थे ,क्योंकि जैसे ही यह जानकारी दी गई कि यात्रियों को छोड़ा जा रहा है ,तो वे स्वस्थ्य दिखाई पड़े । कुछ यात्रियों को इंजेक्शन एवं ड्रिप भी लगानी पड़ी ।

कुछ महिलाएं परिचारिकाओं से सेनेटरी पेड्स की मांग कर रहीं थी । विमान में पेड्स खत्म हो जाने के कारण अन्य दवाओं के साथ बाहर से सेनेटरी पेड्स भी मंगाए गए । परिचारिकाएं आपस में बात कर रहीं थीं कि तनाव के कारण संभवतः महिलाओं के मासिक (मेंसस) प्रभावित हो रहे हैं ।

बीमार यात्रियों की देखभाल में डॉ0अनीता जोशी सहित एक विदेशी चिकित्सक और एक अन्य चिकित्सक ने विशेष भूमिका निभाई । शुरू के तीन दिन डॉ0अनीता जोशी ने काफी मेहनत करके बीमारों की देखभाल की। परन्तु बाद में स्वंय भी अस्वस्थ हो गईं । उन्होंने बताया कि उन्हें नर्वस ब्रेकडाउन की बीमारी है।

विदेशी महिला चिकित्सक ने भी शान्त होकर बड़ी निष्ठा के साथ रोगियों की देखभाल की ।अन्तिम तीन दिनों में पुरूष चिकित्सक ने भी काफी मेहनत के साथ रोगियों की देखभाल की । ऐसा लग रहा था कि यदि दो दिन और विमान में रहना पड़ता तो यात्रियों की हालत बहुत अधिक खराब हो जाती ।

भारत सरकार द्वारा विलम्ब से कार्यवाही करने के लिए अधिकांश यात्राी विशेष रूप से व्यापारी एवं निजी संस्थाओं में काम करने वाले यात्राी भारत सरकार की आलोचना कर रहे थे। उनका कहना था कि सरकार का हर काम धीरे–धीरे होता है,कोई निर्णय लेना नहीं चाहता और कार्यो की प्राथमिकता तथा गम्भीरता को नहीं समझा जाता । हर अधिकारी दूसरे के ऊपर टालने की कोशिश करता है और अपने स्तर से निर्णय नहीं लेना चाहता । यात्राी शासन के साथ हुए अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति कर रहे थे । हमारे पीछे बैठे नैथानी दम्पत्ति ने सरकार की काफी आलोचना की । परन्तु बाद में छूटने के पश्चात समाचार पत्राों में अपने वक्तव्य में उन्होंने सरकार के प्रति संतुलित विचार रखा । संभवतः वापस होने के बाद उन्हें यह ज्ञात हो चुका था कि सरकार द्वारा समुचित कार्यवाही की गई एवं ऐसी परिस्थितियों में शीघ्र निर्णय लेना बहुत ही कठिन होता है। बर्गर ने एक बार यात्रियों से

पूछा –''आप लोग अपने डेलीगेशन के साथ क्या बर्ताव करना चाहेंगे ?'' उत्तर महिलाओं की और से आया –''हम उन्हें आपके हवाले करके जायेंगे ।''

सुचित्रा

अजय को छोड़कर घर वापस नहीं जाना है। जब तीन दिनों में हम क़ाफी हद तक मृत्यु के भय से उबर चुके थे, सोच लिया गया था कि इस बार इतना ही साथ सबके साथ लिखा था।
एक परेशान नेपाली महिला के बार–बार पूछने पर डॉक्टर कहता था ,''छोड़ देंगे आपको,औरतों और बच्चों को''। तब भय होता था कि क्या केवल मैं घर वापस जाऊॅगी ? और अजय नहीं । नहीं,यदि मारो तो सबको एक साथ। ये किस्तों में छोड़ना और समूहों (Categories) में छोड़ना ठीक नहीं लगता। पहले तीन दिन असहायता ,अनिश्चितता की स्थिति में जब कुछ भी खाया नहीं जाता था ,तब अजय चुप कराते ,खिलाते और स्थिर बने रहते,मुझसे शांत रहने को कहते । मैंने सोच लिया था कि इस ऊब ,भय और अनिश्चितता की स्थिति में अजय को छोड़कर घर वापस कतई नहीं जाना है ।

हिन्दुस्तानी जल्द ही भूल जाते हैं

हम भारतीय भी इस प्रकृति के हैं कि त्रासदी को शीघ्र ही भूल जाते हैं । विमान में उन तथाकथित मनोरंजन के क्षणों में यात्री उनके कहे शेरों पर इस कदर झूम उठते थे अथवा चुटकुलों पर रीझकर तालियां बजाते थे ,मानों अपहरणकर्ताओं से कोई सकारात्मक समझौता हो चुका हो । 'बर्गर भाई'का सम्बोधन ही अटपटा लगता था । दूसरे ही क्षण यह सुनकर कि ज्यादा रिलेक्स (त्मसंगद्ध होने की जरूरत नहीं,अथवा आपकी सरकार मुद्दे की बात तो करती नहीं ,घुमा–फिरा रही है ,ऐसे में आप हमसे क्या उम्मीद करेंगें ? या फिर आपकी सरकार समझती है हम कुछ कर नहीं सकते ,तब यात्रियों के भयभीत , गुम चेहरे (विशेष कर युवाओं के) देखकर लगता था कि ये लोग इतने अस्थिर मानसिकता के क्यों हैं ? कुछ ही लोग थे जो हमेशा तटस्थ ,सतर्क बने रहे । एक यात्री ने तो सरकार व व्यवस्था पर एक कविता भी रच डाली और पढ़कर सुनाया । तालियां बजी। अपहरणकर्ताओं ने भी व्यंग्य का आनन्द उठाया तो लगा कि हम क्यों नहीं सही स्थिति का आकलन कर सकते? हमें कोई भी फुसला ले ,और हम सही समय पर सही प्रतिक्रिया नहीं दर्शा सकते । शायद पाकिस्तान अणुबम गिराए ,और विश्व हमें फुसलाए कि आपको जबाव नहीं देना है । ऐसा नहीं कि भारतीय वीर नहीं हैं ,पर इतनी जल्दी कोई कैसे हमें फुसला सकता है ।

टूथ पेस्ट, ब्रश और टिश्यूनैपकिन बॉटे जा रहे थे, युवक –युवतियॉ और कुछ उम्र दराज लोग भी चिल्ला चिल्ला कर सामान मॉग रहे थे ; एक मिला तो उसे छुपाकर दूसरा भी रख लेने की कोशिश कर रहे थे। सीमित मात्राा मे दूध भी बॅटवाया गया जो पहले बच्चों को मिलना चाहिए था ; कई लोग झूठ बोल–बोल कर दोबारा प्राप्त करने में लगे थे। मेरे बगल में बैठे एक पंजाबी साहब अपनी पत्नी से बोले,– ' ले, ये दूध जल्दी से पी ले, ग्लास खाली कर दे तो मै और लेता हूं,' और सच में श्रीमती जी ने झट से दूध किसी दूसरे पात्रा में डाला और पुनः उनके पतिजी परिचारिका के पीछे पड़ गए '' हमें नही मिला ।'' एक हॉस्टेस ने टोका भी कि '' प्लीज ऐसा मत कीजिए , आप को मिल चुका है, हमें बच्चों और बीमारों को पहले देना है।'' तो वे बोले '' हम लोग वैज (शाकाहारी) हैं जी, कुछ खाया नहीं, इसलिए दूध ही पी लेते है।'' उन्ही के एक भाई, खाना पहुंचने में जरा देर हो जाए तो दोनो हाथ उठाकर '' इधर, नो खाणा – नो खाणा '' का शोर मचा देते थे। इन दोनो की पत्नियां खुश मिजाज , स्वस्थ व पूजा पाठ में लगी रहती थी, उन्हें खाना न मिलने का इतना भय क्यों था ? ईश्वर पर इतना भरोसा और स्वंय पर इतना कम ? '' क्या हम खाली पेट नहीं मर सकते थे?

इस बीच जब यात्राी एक एक करके अपना आवश्यक सामान उठाने एक्सीक्यूटिव क्लास मे जाते रहे, तब कुछ लोगों के पैसे भी गुम गए। मृत्यु के भय से उबरते ही पहली–भावना जो हमारे मन आती है वो है ''ठग लेने की , मुफ़त में कुछ मिल रहा है तो ज़रुरत न होने पर भी लूट लेने की''

जब विमान में पानी ही नही है तो कुल्ला – मंजन, ब्रश, पेस्ट, का क्या काम?

सुलह की व घर वापस जाने की घोषणा के होते ही सबको अपने–अपने सामान की सुध हो आई; कोई कुछ तलाश रहा था, कोई कुछ। डॉक्टर अनिता जोशी ने टिप्पणी की, – ''क्यों ? जान बचते ही आ गया मन में लालच ''?

खुदा झूठ न बुलवाए तो हम आम हिन्दुस्तानी ऐसे ही हैं। दूसरी ओर कभी खाना कम पड़ गया, किसी को केवल चावल का पैकेट तो किसी को राजमा ही मिल पाया, असमान वितरण हो पा रहा था। खाने के नाम पर शोर हल्ला मच जाता तब पीछे बैठी श्रीमती नैथानी अपने बेटे से कहतीं जाओ बेटा हमारे पास बहुत है, पूरा खाया भी नहीं जाएगा, एक रोटी से तो तीन लोग खा लेंगे, तुम जरा एक पैकेट आगे देकर आ जाओ। ऐसी मानसिकता क्यों नही बना पाते हम। मैने भी परिचारिका को एक सेट भोजन हमेशा वापस किया कि दो व्यक्ति के लिए एक पैकेट भोजन भी आवश्यकता से अधिक होता है, जबकि कुछ लोगों को बिल्कुल नही मिल पा रहा हो। हमारे देश में भी ऐसी ही स्थिति है, कृपया विचार करें ।

लौटकर कुछ और अच्छे काम करने हैं

अजय से कुछ सार्थक वार्तायें हुई । जब एक दिन वे अस्थिर दिख रहे थे ,शायद यह सोचकर– सुनकर कि सभी यात्रियों को तो नहीं ,पर कुछ यात्रियों को चुनकर अवश्य शूट ;ीववजद्ध कर दिया जायगा। तब मैंने प्रार्थना की।'पंचमुखी'हनुमान जी का स्मरण किया । मैंने याद दिलाया कि 'बाबा'(पिताजी) कहते रहते हैं कि ये (अजय) तो सबका भला करते हैं ,हर संभव प्रयास करते रहते हैं । सद आचरण वाले हैं,अतः इनका अशुभ हो ही नहीं सकता,आप निश्चिन्त रहें। अजय की आंखें भीग गईं और बोले ,नहीं अभी और अच्छाई करना बाकी है। शायद यह काफ़ी नहीं। हम अक्सर लोगों की मदद करके अन्दर से दम्भी हो जाते हैं कि हम अच्छे हैं। हम कितने योग्य व साधन –सम्पन्न हैं कि हम 'अच्छा' करते हैं । पर वास्तव में आदमी कितना दुर्बल होता है ,वह स्वंय कितना अवश है ,कि उसे ,उजाला ,हवा,पानी,भोजन व स्वच्छ अदूषित वातावरण भी दूसरों की इच्छा से मिलता है । अतः हम ईश्वर का धन्यवाद करें कि उन्होंने हमें बिना याचना के यह सब दिया है,और हमें इस योग्य बनाया है कि हम दूसरों के काम आयें ।

पर मनुष्य की सहनशीलता अद्भुत है

जब–जब हम असहिष्णु हुए ,तब–तब हमें अपनी स्थिति दयनीय लगी । वर्तमान समय में समाज में ,परिवार में,आपसी संबंधों में व्याप्त असहिष्णुता ही कटुता का कारण है । टी.वी. की बहुचर्चित समीक्षक नलिनी सिंह जी ने भी एक बार इस विषय की चर्चा की थी ।

हम शटर खोलकर बाहर दिन का उजाला नहीं देख सकते थे । हमारे इस अनुरोध को कि 10 सेकेण्ड के लिए ही सही ,हमें प्रकाश देख लेने दीजिए ,अनसुना कर दिया जाता था। हम कृत्रिम रोशनी में दिन चढ़ने और ढलने का अनुमान लगाते रहे। हम सूर्य की रोशनी देखे बिना हतोत्साहित होते , हमने पानी मांगा ,तो डॉक्टर बोले,पिश्ते हैं , किशमिश हैं, बादाम ले लीजिए , पानी मत मांगिए । एक बीयर से दोनों पानी का गुजारा करते , कभी सोड़ा दिया गया तो कभी बीयर ।

कभी हम 'चहलकदमी' करने की अनुमति मांगते,तो कभी अपना ही आवश्यक सामान ले आने के लिए पूछते । अजय की हर सुबह चाय से शुरू होती है ,जो वे पानी के महत्त्व के आगे भूल चुके थे । कितने मजबूर थे हम, जब हमें उन्हीं शौचालयों का प्रयोग 'एक दिन और' करना पड़ता था ।

वे कहते थे कि सिर झुकाकर नीचे देखते रहना है ,ताकि हम उनकी गतिविधियां देख न पायें और 5–6 दिनों तक वही 'मोटी रोटी' और चिकन का ठण्डा टुकड़ा।

हमने याद किया मार्टिन लूथर किंग को और नेल्सन मण्डेला को । अत्यन्त विषम परिस्थितिओं में भी मर्टिन लूथर ने कहा – ''हम होगें कामयाब '' ।हमने तय किया कि इन लोगों से ज्यादा मांगा न जाए । जितना ये उपलब्ध करा दें ,उतना ही यथेष्ट है । और सोचा कि मनुष्य कितना सह लेता है,दुर्दिन में। ईश्वर ने हमें कितनी सहनशीलता दी है,कितनी शक्ति दी है कि हम कठोर हो जाते हैं,बुरे समय में।

बच्चे तो सुरक्षित हाथों में हैं

एक महिला यात्री को उसके 12–13 वर्षीय बेटे ने उबकर पूछा–मम्मी क्या हाल है ,क्या सोच रही हैं ? वे बोली–'खुश हूँ,अपने बेटे के पास हूँ' मुझे लगा कि काश ,मेरी बेटियां भी मेरे पास होतीं । छोटी शोमिता ने तो खाना भी छोड़ दिया होगा अब तक। चलने से पहले मैंने उससे कहा था कि बस परसों ही मम्मा तुम्हारे पास आ जाएगी,तुम्हारे लाल Handglovè (दस्ताने) लेकर । काश मैं एक बार जा सकती अपने बच्चों के पास ,उनके छोटे–छोटे फरमाइशी उपहार लेकर । उन्हें वे सब कब दूंगी और खुश होते हुए देखूंगी । शोमिता कहेगी – '' लाल Handgloves, लाल घड़ी और लाल जूता भी; ''मम्मा तुम बहुत अच्छी हो''। जोयिता परफ्यूम खोलकर लगाते हुए कहेगी –''मम्मा तुम्हें परफ्यूम खरीदना तो आया ही नहीं ।''

ये सारे क्षण कितने दुर्लभ हो जाते हैं कभी–कभी । हम नहीं रहेंगे तो मॉ–बाबा इन्हीं के साथ समय काट लेंगे,पर कितने दिन ? जोयिता के कैरियर बनाने का समय शोमिता की देखभाल में बँट जाएगा । फिर आगे, और आगे कौन देखेगा बच्चों को ? बच्चे कहीं और पल तो जाएगें पर जाने कितनी बार उन्हें भावनात्मक चोटों का सामना करना पड़ेगा । जब हमारे मॉ–बाबा और बच्चों को हमारी आवश्यकता है,जब कर्तव्यों को निभाना है,तब ये कुछ स्वार्थी लोग हमारा परिवार ही उजाड़ने जा रहे हैं । पर हम भाग भी नहीं सकते। कुछ कर भी नहीं सकते ।

सामने वाला छोटा बच्चा रह रहकर रो उठता है,उसकी मॉ को उसके छोटे भाई के साथ उतार दिया गया था। रोकर ,थककर उसने अँगूठा मुँह में डाला और सोने लगा । हम अँगूठा पीने वाली शोमिता को याद करके द्रवित होने लगे । फिर सोचा अच्छा ही हुआ इस परेशानी में बच्चे साथ नहीं,*उन्हें तो सुरक्षित हाथों में छोड़ आए हैं* ।

अपहरणकर्ता के विमान छोड़कर जाने के बाद अचानक हमें याद आया कि हमने कई दिनों से लोगों से साधारण तौर पर बातचीत नहीं की है । थोड़ी देर पहले ही हमें नये तरीके से सीटों पर बिठाया गया था । आसपास नए लोग । अब बातें हो सकती थीं । 'भारत माता की जय' के नारे लग चुके थे । जिन्हें हम जानते भी नहीं, वे सब एक ही परिवार के होने का एहसास दिला रहे थे ।

हमने एक–दूसरे के बारे में पूछा । ये सब साधारण,बेमानी बातें भी लम्बी बरसात के बाद धूप का सा एहसास दिला रहे थे । युद्ध समाप्ति के बाद का अनुभव ।

पिछले आठ दिनों में जो हमें यह समझा चुके थे,कि वे भी सताए गए लोग ही हैं,जो खुदा के बन्दे हैं,सहानुभूति के पात्रा हैं,वे अचानक जल्लाद लगने लगे फिर इंडियन एयरलाइंस के रेस्क्यू (Rescue) विमान तक पहुॅचते–पहुॅचते कई बातों की जानकारी मिली ,जैसे कि विमान के कार्गो (Cargo) में बम इत्यादि बिछाकर छोड़ जाना ,पैसों की व अन्य मांगे ,रूपिन कत्याल की निर्मम हत्या आदि–आदि, –और यह भी कि अभी वे एयरपोर्ट के आसपास ही कहीं हैं,तब ऐसा लगा कि काश ये लोग पकड़ लिए जाएँ।

कागज का वह टुकडा जिसके दोनों तरफ सुचित्रा ने पायलट द्वारा घोषित विमान के पड़ावों की जानकारी को नोट किया ।

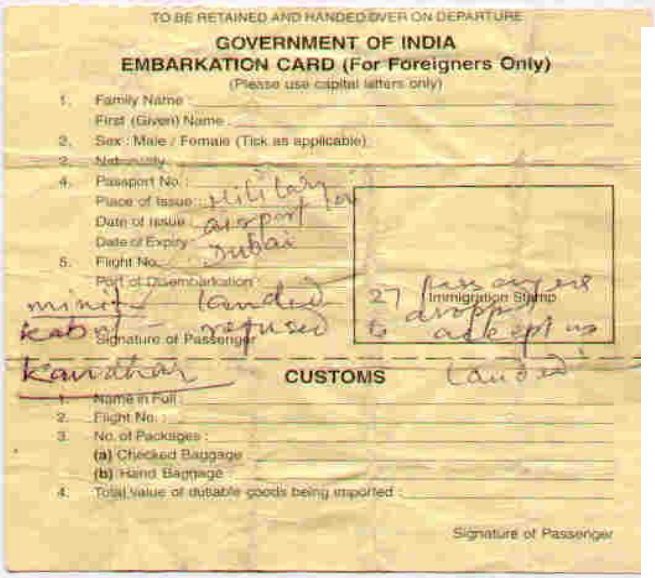

TO BE RETAINED AND HANDED OVER ON DEPARTURE

GOVERNMENT OF INDIA

EMBARKATION CARD (For Foreigners Only)

(Please use capital letters only)

1. Family Name :
First (Given) Name :
2. Sex : Male / Female (Tick as applicable)
3. Nationality :
4. Passport No :
Place of Issue :
Date of Issue :
Date of Expiry :
5. Flight No :
Port of Disembarkation :

Immigration Stamp

Signature of Passenger

CUSTOMS

1. Name in Full :
2. Flight No. :
3. No. of Packages :
(a) Checked Baggage :
(b) Hand Baggage :
4. Total value of dutiable goods being imported :

Signature of Passenger

[illegible]
... अतुलित बलधामा अंजनि पुत्र पवनसुत नामा।
महावीर विक्रम बजरंगी कुमति निवार सुमति के संगी
कंचन बरन बिराज सुबेसा कानन कुंडल कुंचित केसा
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै कांधे मूंज जनेऊ साजै
संकर सुवन केसरी नंदन तेज प्रताप महा जगवंदन
विद्यावान गुनी अति चातुर राम काज करिबे को आतुर
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया राम लखन सीता मन बसिया
सूक्ष्म रूप धरि सियहि दिखावा विकट रूप धरि लंक जरावा
भीम रूप धरि असुर संहारे सियारामजी के काज संवारे
अष्ट सिद्धि नवनिधि के दाता अस बर दीन जानकी माता
राम रसायन तुम्हरे पासा सदा रहो रघुपति के दासा
अंत काल रघुवर पुर जाई जहां जन्म हरि भक्त कहाई

विमान में दहशत की स्थिति में हम लोग हनुमान चालिसा भूल गये थे । सुचित्रा ने कागज़ के इस टुकडे के दोनों ओर याद कर–कर के हनुमान चालिसा को लिखा और फिर पाठ किया ।

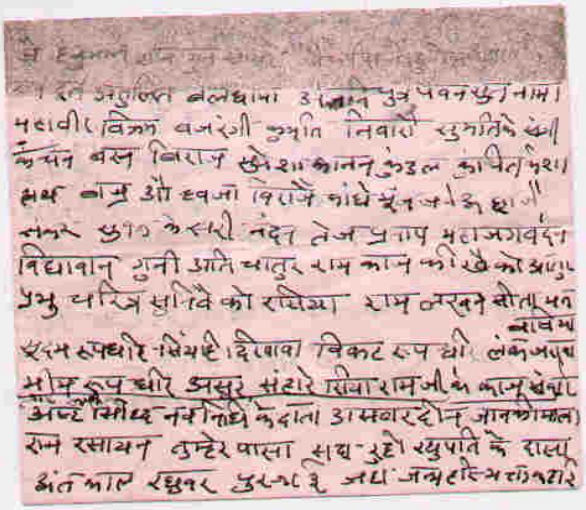

अजय

जैसे ही अपहरणकर्ताओं ने आगे–पीछे भागादौड़ी शुरू की , यात्रियों को निर्देश देने शुरू किये और विमान को अपने नियंत्राण में लेने की कार्यवाही शुरू की , घबड़ाहट के साथ एक अजीब उत्तेजना की स्थिति उत्पन्न हुई । खाना खाना बंद हो गया । आधा खाना ही खाया था कि खाने की ट्रे को नीचे रखना पड़ा । आधा खाना के साथ ट्रे दो दिन तक उसी प्रकार पड़ी रही । खाने से बदबू भी आने लगी । तीसरे दिन खाने की ट्रे हटाई गई ।

अपने स्थान पर सीधे बैठने फिर पट्टी बांधने और फिर सर झुकाकर नीचे बैठने की कार्यवाही के बाद एक अपहरणकर्ता ने शरीर की नीचे से उपर तक चैकिंग की । जैकेट खुलवाकर भी चैकिंग की गई। उस समय तक कुछ समझ में नहीं आ रहा था । जैसा अपहरणकर्ता कह रहे थे वैसा ही करते जा रहे थे । ऐसा लग रहा था कि अपहरणकर्ता हवाई जहाज को दिल्ली ही ले जाएंगें और वहां सब कुछ ठीक हो जाएगा ।

हम लोग सीट नम्बर 14 जी और 14 एच पर बैठे थे । हमें उठाकर 20 जी और 20 एच पर, और फिर कुछ देर बाद 30 ए और 30 बी पर बिठा दिया गया । दूसरी बार सीट बदलने पर मैंने अपहरणकर्ता से कहा भी कि हमारा सीट अभी–अभी बदला गया था । अपहरणकर्ता ने जवाब दिया – ''आप ही के फायदे में है'' । बाद में मुझे भी कई बार एहसास होता था कि शायद क़िस्मत से ही इतने पीछे की सीट मिली है , क्योंकि यदि बाहर से हमला होता है ,तो हमला सामने के कॉकपिट पर या सामने के दरवाजों पर ही होगा ।

घबड़ाहट , उत्तेजना , असमंजस, भय , असहायता और क्रोध की मिश्रित भावना मन में आती थी । तीसरे दिन कभी–कभी दिमाग में यह आता था कि यदि इनमें से किसी एक को पकड़कर उसका मास्क पहन लिया जाये तो स्थिति से किस प्रकार निबटा जा सकता है ।

अंतिम तीन दिनों में जब टॉयलेट की बदबू और बिजली प्रणाली फेल होने के कारण बीच–बीच में पीछे का दरवाजा खोलकर बर्गर और डॉक्टर दरवाजे के पास खड़े होकर बात करते थे तो दिमाग में आता था कि यदि इनको धक्का दे दिया जाए तो लगभग 20 फीट नीचे गिरने पर निश्चित ही इनके हाथ पैर टूट जाएंगे और ये कुछ नहीं कर पायेंगे ।

परन्तु जो स्थिति थी ,उसमें ऐसा कुछ भी कर पाना संभव नहीं था । हमेशा बेल्ट बांधे रहना पड़ता था । बीच–बीच में बेल्ट को टाईट बांधने के भी निर्देश दिए जाते थे । एक–दूसरे से बात करने का भी मौक़ा नहीं मिल पाता था , ताकि कोई प्लानिंग की जा सके ।

ऐसा भी लगता था कि संभवतः अपहरणकर्ताओं को यह मालूम था कि ऐसी स्थिति में यात्रियों के दिमाग़ में क्या–क्या आ सकता है और वे क्या–क्या कर सकते हैं । इसके लिए अपहरणकर्ता पूरी तरह तैयार थे और उसी के अनुसार कार्यवाही भी कर रहे थे । उनकी गतिविधियों से ऐसा लगता था कि उन्होंने काफी सूझबूझ के साथ प्लानिंग की है और छोटी से छोटी बात का भी ध्यान रखा है । इसीलिए कुछ भी अधकचरा कार्यवाही करना खतरे को बुलावा देना था। बल्कि मैंने आसपास के यात्रियों से कहा कि उत्तेजना में या घबड़ाकर अपहरणकर्ताओं पर झपटने की ग़लती न करें ।

शैबाल भी यात्रियों को ज्यादा बात न करने और खाने–पीने की ज्यादा मांग न करने के लिए समझा रहे थे । लेकिन वह खुद अपहरणकर्ताओं से काफी बातें कर रहे थे ।

मेरी अपहरणकर्ताओं से बात करने की इच्छा बहुत कम होती थी । मैंने उनसे बहुत ही कम बातें की ।

मैंने एक बार बर्गर को 10 सेकिंड के लिए धूप आने के लिए खिड़की खोलने के लिए कहा था। उन्होने खिड़की खोलने नहीं दिया ।

डाक्टर से तीन बार बात हुई । पहली बार माईग्रेन के डर से डॉक्टर से दवा लेने गया था । उसने दाहिने हाथ का पिस्तोल उठाकर बांयां हाथ पूरा फैलाकर मुझे दूर रहने को कहा और मेरी बात सुनी , लेकिन दवा नहीं मिली । दूसरी बार जब पीने का पानी लेने गया था ,तब बात हुई । और तीसरी बार सुचित्राा के कहने पर तब बात हुई, जब वह हमारे पीछे खड़ा था और हमने उससे पूछा कि उन्हें भोपाल के इस्ज़तिमा के बारे में जानकारी है क्या । डॉक्टर ने बताया कि उसमें तो काफी लोग आते हैं और इस्लाम पर काफी चर्चा होती है । उनकी बातों से ऐसा लगा जैसे वे भी भोपाल आ चुके हों । मुझे ऐसा लगा कि इनसे पूछूं कि क्या इस्लाम जुल्म करना सिखाता है। लेकिन चुप रहना ही मुनासिब समझा ।

वैसे तो अनिश्चित्ता की स्थिति निरन्तर बनी हुई थी, परन्तु बीच–बीच में मुझे भी लगता था कि शायद सब ठीक हो जाएगा और घर वापस जाने को मिलेगा । मैं बारबार छोटी बिटिया शोमिता की याद करता था । चूंकि बच्चों में भगवान के होने की मान्यता है ,इसलिए ऐसा भी लगता था कि उसकी वजह से हमें वापस घर जाने को मिलेगा ।

मृत्यु की अनुभूति

विमान के काठमांडू से उड़ान भरने के बाद जैसे ही अपहरणकर्ता प्रकट हुए और द्रूतगति से अपना कार्य करना प्रारम्भ किया तो पहले तो कुछ समझ में नहीं आया फिर घबराहट हुई और हम सभी सकते की स्थिति में आ गये। केप्टन द्वारा अपहरण की घोषणा किये जाने पर घबराहट ने भय का रूप ले लिया , जैसे–जैसे समय बितता जा रहा था ,भय और खौफ की स्थिति गहराती जा रही थी ।

आंखों पर पट्टी बांधने से जो खौफ होता है ,उसका एहसास पहली बार हुआ । पट्टी बांधते ही ऐसा लगा कि चारों तरफ अंधेरा छा गया है और आसपास की दुनिया से संबंध टूट गया है। अब क्या होगा पता नही , इस अनिश्चितता के खौफ ने , कि अब क्या होगा , और अधिक आतंकित कर दिया । शुरू के 15 घण्टे भय और मौत के खौफ में बीते ,जैसे–जैसे समय बितता जा रहा था अनिश्चितता और मौत का खौफ बढ़ता जा रहा था।

बीच–बीच में अपहरणकर्ताओं द्वारा मौत की धमकी दी जा रही थी और ऐसी स्थिति निर्मित हो रही थी,जिससे यह लग रहा था कि अपहरणकर्ताओं द्वारा कुछ या सब को मार दिया जायगा । ऐसा आभास हुआ कि मृत्यु के भय से कठिन और कष्ट दायक अनिश्चितता की स्थिति होती है ।

अनिश्चितता का भय मृत्यु के भय से कहीं अधिक पीड़ादायक थी । ऐसा लग रहा था कि यदि अपहरणकर्ता मार दें तो ज्यादा अच्छा रहेगा । वैसे भी तीसरे दिन से मैं मानसिक रूप से मृत्यु के लिए तैयार हो गया था ,क्योंकि ऐसा लग रहा था कि अपनी मांगे मनवाने के लिए अपहरणकर्ता या तो कुछ यात्रियों को दबाव डालने के लिए मार देंगे या एक स्थिति ऐसी भी निर्मित हो सकती है कि उनको पकड़ने या मारने के लिए बाहर से हमला हो,जिसमें यात्री भी मारे जायें ।

इस प्रकार की अनिश्चितता की स्थिति अन्तिम क्षण तक बनी हुई थी । जब अपहरणकर्ता विमान छोड़ कर जाने लगे तब भी ऐसा लग रहा था कि उन्हें पकड़ने अथवा मारने के प्रयास में कुछ भी हो सकता है ।

मृत्यु कैसी होगी ? यह प्रश्न कई बार दिमाग में आता रहा । मौत के लिए मैं – शायद हम – तैयार हो गए थे परन्तु मौत के विकराल रूप का खौफ हमें भयभीत कर रहा था । मौत बम से होगी , या पिस्तौल की गोली से, या चाकू से – यह अनिश्चितता भी मौत के खौफ के समान कई बार हमें भयभीत किये हुए थी। कहीं ऐसा तो नहीं कि हम बच जाएं और मौत से बदतर जिन्दगी जीनी पड़े।

भय और मृत्यु के आक्रांत की स्थिति में मौत के विभिन्न स्वरूप मस्तिष्क में आ रहे थे । कभी–कभी ऐसा लगता था कि अपहरणकर्ताओं के हाथ के ग्रेनेड अगर छूट गये ,तो भी कुछ लोगों की मृत्यु हो सकती है । भावावेश और दहशत में यदि कुछ यात्री उनके ऊपर झपट पड़ते हैं तो भी उनको और कुछ अन्य लोगों को अपहरणकर्ता शूट कर सकते हैं ।

जब भोजन ठीक से नहीं मिल पा रहा था और पानी सीमित मात्राा में दिया जा रहा था,तब ऐसा भी दिमाग में आता था कि यदि कुछ दिन और विमान में रहना पड़ा तो शायद भूख और प्यास से भी कुछ लोगों की मृत्यु हो सकती है । जब अन्तिम दो दिनों में हवाई जहाज की विद्युत प्रणाली ने काम करना बन्द कर दिया था तो अन्दर ठण्ड काफी बढ़ने लगी थी । बाहर के बहुत कम तापक्रम (–15 से–07 डिग्री सेंटीग्रेड) के अनुरूप अन्दर का तापक्रम भी बहुत कम हो रहा था । रात को भी अधिक ठण्ड लगती थी और ऐसा लगता था कि कुछ लोगों की मृत्यु कहीं ठण्ड से ही न हो जाय ।

रात्रि के समय भी अंधेरे या कम रोशनी में अपहरणकर्ता चौकसी करते रहते थे । सामने और पीछे की तरफ काले मुखौटों में खड़े दोनों अपहरणकर्ता मृत्यु के दूत के समान प्रतीत होते थे । दो–तीन बार रात्रि के समय भी अपहरणकर्ताओं ने आंखों पर पट्टी बंधवाकर ,घुटने पर सिर रखवाकर खौफ की स्थिति उत्पन्न की और मृत्यु के पूर्व ही मृत्यु की अनुभूति कराई ।

28 तारीख की रात को अपहरणकर्ता उत्तेजित होते हुए अन्दर आए। सबसे आगे भोला था जो चिल्लाकर बोला– ''सब लोग अपने सिर पर तकिये का लिहाफ ओढ़ लें । आपकी सरकार को आपकी कोई फिक्र नहीं है । वे समझते हैं कि हम आपको कुछ नहीं करेंगें ।'' अपहरणकर्ताओं की बातों से यह समझ में आया कि भारत सरकार की ओर से निर्णय लेने में विलम्ब होने के कारण वे उत्तेजित हो रहे हैं । फिर अपहरणकर्ताओं ने विमान परिचारिकाओं को निर्देश दिया कि वे यात्रियों के सर पर तकियों के लिहाफ लगादें । भोला ने फिर से चिल्लाकर कहा – ''अगर किसी ने लिहाफ नहीं पहना तो उसकी खैर नहीं ।'' लिहाफ पहनकर जो खौफ हुआ उसका वर्णन शब्दों में किया जाना संभव नहीं हो पा रहा है । लगभग एक घंटे बाद बर्गर ने लिहाफ उतार लेने के लिए कहा । लिहाफ उतारने के बाद हमें वे स्वाधीनता सेनानी याद आ रहे थे जिन्हें फांसी के पूर्व सिर पर चोगा पहनाया जाता था ।

30 दिसम्बर,99 को जब बर्गर ने यह घोषणा कर दी कि सब को मार दिया जायगा तो उस समय ऐसी स्थिति उत्पन्न हो गई , जैसे कि किसी की मृत्यु पर हो जाती है । कुछ लोगों ने रोना शुरू कर दिया , कुछ लोगों ने चिल्लाना शुरू कर दिया । एक यात्री खड़े–खड़े गिर पड़ा । एक यात्री को हार्ट अटेक हुआ । एक लड़का जो बिमार था उसकी भी स्थिति इसके बाद और बिगड़ गई । एक यात्री ने भावावेश में अपहरणकर्ता को पकड़कर रोते हुए बोला कि हमें मत मारो ,मेरी पत्नी मां बनने वाली है ।

इस घोषणा और बर्गर की अगली घोषणा, जब उसने यह कहा कि तालिबान सरकार की पहल पर भारत सरकार से बातचीत पुनः प्रारम्भ हो गई है और मसला भी हल हो रहा है, के बीच के लगभग 6 घण्टे तक मौत का खौफ छाया रहा ।

मैरे दिमाग में मौत से जुड़ी हुई बातें आती–जाती रहीं । मेरे मरने के बाद बच्चों का क्या होगा और घर में क्या–क्या होगा आदि । हाल ही में जिन रिस्तेदारों की मृत्यु हुई थी ,उनकी मृत्यु के बाद उनके घर की क्या स्थिति हो रही है ,दिमाग उसका भी विश्लेषण करने लगा ।

मुझे पूर्ण विश्वास था कि सुचित्रा को ये लोग नहीं मारेंगें । मैंने जब उसे यह बताया तो वह रोने लगी और अकेले वापस जाने से मना किया । मेरे द्वारा समझाया गया कि बच्चों के पास हम दोनों में से किसी एक को रहने का मौका मिलेगा । ऐसा लगा कि अब तक सुचित्रा भी किसी भी परिस्थिति का सामना करने के लिए मानसिक रूप से तैयार हो गई थी । फिर दिमाग में बीच–बीच में यह विचार भी आता था कि जब मैं ही नहीं रहूँगा तो फिर मेरे बाद क्या होगा , इस बारे में क्या सोचना ? ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे मृत्यु हम लोगों के साथ आंख–मिचौली खेल रही हो ।

जब 31 दिसम्बर को शाम पांच बजे अपहरणकर्ता विमान से बाहर निकले और हम लोगों ने खिड़की से बाहर का दृश्य देखा,वह दृश्य भी अत्यन्त भयावह था । विमान को चारों तरफ से शस्त्राधारी सेना ने घेर रखा था। राकेट लॉन्चर लिये हुए सेना के जवान खड़े हुए थे । तोप वाले वाहन और टैंकर्स भी थे । लोगों की भीड़ भी थी। चूंकि बाहर के अन्तर्राष्ट्रीय, राजनैतिक और प्रशासनिक समीकरणों का हमें कुछ भी अंदाजा नहीं था,इसलिए हमें लगा कि संभवतः अपहरणकर्ताओं को पकड़ने अथवा मारने के लिए सेना खड़ी है और अपहरणकर्ताओं को पकड़ने या मारने के प्रयास में अभी भी कुछ अप्रत्याशित घटना घट सकती है ।

जब अन्ततः अपहरणकर्ता विमान से निकल गये और कैप्टन ने अपना केप पहनकर यह घोषणा की कि अपहरणकर्ता जा चुके हैं ,तब धीरे–धीरे मौत का खौफ विलुप्त हुआ और एक नये जीवन की उमंग की भावना से हम इस अपहरित विमान से बाहर निकलने को अग्रसर हुए।

अपहरणकर्ता दिनांक 31–12–99 को विमान से निकल कर अफगान अधिकारियों के साथ *(इंडिया टुडे)*

बन्धक मुक्त – अपहरणकर्ता भी मुक्त; –अपहरणकर्ता अपनी मंजिल की और जाते हुए *(फ्रंटलाइन)*

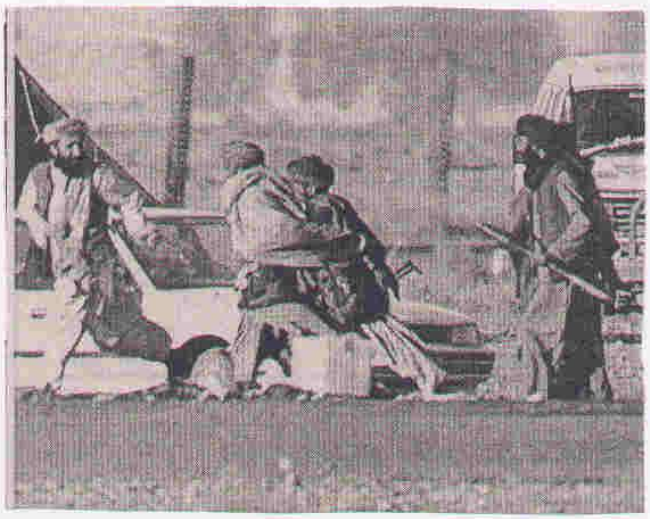

अपहरणकर्ताओं के पीछे दौड़ते तालिबान सैनिक *(दैनिक भास्कर)*

kandhar1304a

52

मुक्ति

31 दिसम्बर 1999 को अपरान्ह 3 बजे अपहरणकर्ताओं ने यात्रियों की बैठने की व्यवस्था फिर से बदली । बच्चों एवं महिलाओं को आगे बैठाया । फिर बीमार एवं वृद्ध लोगों को और उसके बाद दम्पत्तियों एवं पुरूष यात्रियों को । पीछे की सभी सीटें खाली कर दी गईं ।

उत्तेजना और असमंजसय की स्थिति बनी हुई थी । अपहरणकर्ता विमान छोड़कर कब जाएंगें ? संभवतः सभी यही सोच रहे थे। सुचित्राा बार–बार दबे आवाज़ में कह रही थी – ''ये जा क्यों नहीं रहे ?''

अंततः 5 बजे के लगभग अपहरणकर्ताओं ने पुनः विमान में आगे से पीछे चहल–कदमी शुरू कर दी । सभी अपहरणकर्ता काकपिट की ओर दौडते हुए चले गये । सबसे पीछे बर्गर दौड़ा और जाते–जाते ''बाय बाय , फिर मिलेंगे , आई लव यू '' आदि शब्द बोलते हुए निकल गया ।एक यात्राी ने जाते हुए बर्गर को गले लगाकर विदा किया ।

ऐसा लगा कि सभी अपहरणकर्ता कॉकपिट के दाहिने दरवाजे से नीचे उतरे ।

उसके बाद कैप्टेन धीरे–धीरे काकपिट में गये और तुरन्त वापस आ गए । इस समय वे अपना कैप पहने हुए थे । अब हम लोगों को लगा कि हवाई जहाज कैप्टेन के अधिकार में आ गया है । कैप्टेन ने अवगत कराया कि अपहरणकर्ता विमान छोड़कर जा चुके हैं । सभी यात्रियों ने ताली बजाई और *'भारत माता की जय'* के नारे लगाये ।

उसी समय कैप्टेन के पीछे कॉकपिट की ओर से एक व्यक्ति प्रकट हुआ जिसने स्वंय को भारत सरकार का प्रतिनिधि बताया । इन्होंने सभी यात्रियों , कैप्टेन तथा उनके सहयोगियों को सहनशीलता और संयम के लिये बधाई दी और कहा कि पूरे देश को आप सभी पर गर्व है ।

भय, उत्तेजना, घबड़ाहट आदि की भावना से मुक्त होकर अब ऐसा लग रहा था कि क्या हम वाकई अपहरणकर्ताओं से मुक्त हो चुके हैं । सभी यात्राी खड़े हो कर बाहर निकलने के लिये गेट की तरफ बढ़ने लगे। 169 घंटे अधर में रहने के उपरान्त शायद हर व्यक्ति को ज़मीन को छूने की इच्छा हो रही थी ।

यात्राी धीरे–धीरे नीचे उतर रहे थे ।

महिलाओं को पीछे कर दिया गया था । पहले पुरूषों को उतरने के लिये कहा गया । 'लेडीज़ फर्स्ट' की प्रथा का पालन शायद यहां नहीं होता है । बताया गया कि महिलाओं को अलग बस में दूसरे विमान तक ले जाया जाएगा ।

हवाई जहाज के गेट और जमीन की दूरी उस समय 'ओंठ एवं कप्स' (cups and lips) की दूरी के समान काफी लंबा दिखाई दे रहा था । सीढ़ी पर अफगानी कर्मचारियों/अधिकारियों द्वारा सामान की चैकिंग की जा रही थी।

एक अफगानी कर्मचारी ने हंसते हुए पूछा कि सफर कैसा रहा ? मैंने कहा–यह तो मौत का सफर था । उसने जवाब दिया – आप तो दिल्ली जा रहे थे । मैं उसका अर्थ नहीं समझ पाया परन्तु उसकी मुस्कुराहट मुझे व्यंगात्मक और कुटिल लगी ।

हवाई जहाज के गेट से सीढ़ी से होते हुए नीचे उतरने तक का सफर भी अब बहुत लम्बा प्रतीत हो रहा था । मात्रा 20 सीढियों की यह दूरी तय करने में भी करीब 20 मिनट लग गये । इस बीच स्थानीय कर्मचारियों द्वारा दो बार सामान की चेकिंग की गई ।

अन्ततः जब उस मनहूस विमान से बाहर निकलकर धरती पर कदम पड़े तो एक अजीब सी राहत की अनुभूति हुई । 169 घण्टे के बाद अधर से धरा पर कदम रखने का मौका मिला। नीचे चारों तरफ भीड़ जमा थी।

चारों तरफ भारी संख्या में वाहन और लोगों की भीड़ थी । बन्दूक और राकेट लॉन्चर लिये हुए आफगानी सैनिक भी मौजूद थे । विदेशी प्रतिनिधि अपने–अपने देशों के प्लेकार्ड (पहचान तख्ती) लेकर खड़े थे। साथ ही मीडिया के लोग भी कैमरा आदि के साथ उपस्थित थे ।

नीचे खड़ी एक बस में बैठकर हम लोग उस (रेसक्यू) विमान की तरफ बढ़े जिससे कंधार से दिल्ली रवाना होना था । विमान के पास पहुॅचकर फिर से सामान की चेकिंग हुई । चूॅकि सुचित्राा दूसरी बस में आ रही थी ,इसलिए मुझे वहां काफी देर तक प्रतीक्षा करनी पड़ी । रेस्क्यू विमान का एक कर्मचारी मुझसे सुचित्राा का नाम लेकर उसको लेने के लिए रवाना हुआ ।

यहां मुझे पहली बार पता चला कि विमान में यात्राा कर रहे रूपिन कत्याल की हत्या अमृतसर या दुबई के पास कर दी गई थी और उसके शव को दुबई (मिनहट) में उतार दिया गया था । तब मुझे याद आया कि विमान में एक बार डॉक्टर ने यह कहा था कि –''हम किसी को मारना नहीं चाहते । अगर हमने किसी को मारा है तो उसकी गल्ती की वजह से ''। डॉक्टर का तात्पर्य रूपिन कत्याल से ही रहा होगा ।

मिनहट हवाई अड्डे पर रूपीन कत्याल के शव का परीक्षण करते हुए चिकित्सकों का दल *(फ्रंटलाइन)*

मानो अभयदान मिला

इसी बीच सुचित्रा वहां आ पहुँची और हमने दिल्ली जाने वाले उस विमान के अन्दर प्रवेश किया । हम जैसा सोचते हैं , हमारे आसपास का वातावरण (surrounding) भी वैसा ही दिखने लगता है । उस मनहूस विमान से आकर इस खुशनुमा विमान में बैठकर हम आश्वस्त (relaxed) और सुरक्षित महसूस कर रहे थे। विमान के अन्दर सामान रखकर बैठने की तैयारी कर ही रहे थे कि सामने से अभिवादन स्वीकारते हुए कुछ बुजुर्ग आते दिखे। वे थे – भारत के विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह और संभवतः अफगानिस्तान के विदेश मंत्री। श्री जसवंत सिंह ने अन्दर आकर सबका अभिवादन किया । मेरे भी निकट आये और नमस्ते करने के बाद विनम्रता से हाथ जोड़े वे किसी पारिवारिक स्नेही वृद्ध की तरह सुचित्रा के सर पर हाथ रखकर बोले "अब डरो नहीं , मैं आपके साथ हूँ ।" पहली बार ऐसा लगा कि कोई राहत देने वाला हमारे साथ है,किसी बुजुर्ग का हाथ हमारे ऊपर है । संभवतः उस समय अपनों से उसी स्नेह और सांत्वना की अपेक्षा थी । ऐसा लगा मानो वे अभयदान दे रहे हैं ।

विमान में परिचारिकाओं द्वारा नाश्ता ,भोजन आदि का दौर चलाया गया। उन्हें ज्ञात था कि पिछले 185 घण्टों में हम लोगों को सही प्रकार से खाना नहीं मिल पाया है। संभवतः इसलिए हर पांच मिनिट में चाय,साफ्ट ड्रिंक ,स्नेक्स ,खाना आदि आ रहा था । परन्तु खाने की कोई विशेष इच्छा नहीं हो रही थी ।

विमान ने उड़ान भरी और वह कंधार को अलविदा कहते हुए दिल्ली की तरफ उड़ चला । लगभग 1.45 घण्टे का सफर तय करते हुए रात के 9.15 बजे विमान ने दिल्ली हवाई अड्डे पर लैण्ड किया । बीच में जब विमान ने भारतीय सीमा में प्रवेश किया तो केप्टन ने घोषणा की कि विमान अब भारतीय क्षेत्रा में प्रवेश कर चुका है । यात्रियों ने फिर से ताली बजाई । शायद वे अब अपने आप को अधिक सुरक्षित महसूस करने लगे थे ।

हवाई जहाज दिल्ली हवाई अड्डे के रनवे पर धीरे–धीरे चलते हुए अपने गन्तव्य स्थल पर पहुॅचा। हवाई जहाज रूका , उसका गेट खुला और यात्राी धीरे–धीरे बाहर निकलने लगे । बाहर का नजारा भव्य था। चारों तरफ रोशनी और भीड़ थी । हवाई अड्डा रोशनी का उत्सव मना रहा था – हमारे लौटने का उत्सव ; सभी खुश , हमारी धरती , अपने लोग – और इतना स्नेह–प्यार बरसा कि पूरा भारत हमारा हो गया ।

यात्रियों का स्वागत करने के लिए उड्डयन मंत्राी , दिल्ली के मुख्यमंत्री तथा अन्य व्ही.आई.पी. लोगों के साथ नीचे खड़े थे , टी.वी.कैमरा लिए हुए पत्राकार । नीचे कुछ अधिकारीगण फूलों से यात्रियों का स्वागत कर रहे थे। शैबाल ने एवं और भी कुछ यात्रियों ने फूल लेने से मना कर दिया । सुचित्रा को भी संभवतः इस समय फूल पसंद नहीं आये । शायद फूल हमारी यातनाओं को नहीं भुला सकते थे ।

हम लोग भीड़ में से होते हुए एयर पोर्ट के लाउंज में पहुॅचे । लाउंज के मार्ग में भी एयर पोर्ट का स्टाफ लाईन से खड़ा हुआ 'वेलकम बैक' कहकर सबका स्वागत करता जा रहा था । लाँज में एयर पोर्ट के अधिकारीगण और चिकित्सक उपस्थित थे । ये लोग यात्रियों से पूछताछ करते जा रहे थे और यह भी जानकारी ले रहे थे कि यात्रियों का रूकने अथवा आगे जाने का क्या कार्यक्रम है ।

लाउंज में सुचित्रा को यह महसूस हुआ कि उसे कुछ सुनाई नहीं दे रहा है । अधिकारीगण उसे चिकित्सक के पास ले गये ,परन्तु कोई विशेषज्ञ नहीं मिल पाया । इस बीच हमें अवगत कराया गया कि हमारे रहने की व्यवस्था होटल सेन्टोर में की गई है और कल किसी भी समय दिल्ली से भोपाल जाने की व्यवस्था कर दी जायेगी।

हम लोगों को किसी तरह भीड़ में से मीडिया के लोगों से बचाते हुए एयर पोर्ट के वाहन तक पहुँचाया गया । बाहर भी बहुत अधिक भीड़ थी । यात्रियों के रिश्तेदार और मीडिया के लोग चारों तरफ फैले हुए थे। हम लोग बहुत ही मुश्किल से वाहन तक पहुॅचे । इसी बीच हमारे विभाग के दो अधिकारी भी वहां मिल गये । हम लोग सब होटल सेन्टोर पहुँचे ।

नये वर्ष के उपलक्ष्य में होटल सेन्टोर को पूरी तरह से सजाया गया था । वहां भी काफी भीड़ थी । रिसेप्शन पर औपचारिकता के बाद हमें 412 नम्बर कमरे की चाबी दी गई । हम लोग अपने कमरे में पहुॅचे और सबसे पहले बिसलरी की रखी बोतल से जी भर के पानी पिया, और पिया, फिर तृप्त होकर भोपाल में घर पर फोन करके दिल्ली पहुॅचने की जानकारी दी । वैसे घर पर सभी ने हम लोगों को दिल्ली हवाई अड्डे पर विमान से उतरते हुए देख लिया था ।

होटल का शोर –शराबा और भीड़–भाड़ कुछ अच्छा नहीं लग रहा था । घर जाकर घरवालों से मिलने की तीव्र इच्छा हो रही थी । इसलिए हम लोगों ने तय किया कि रात्रि ट्रेन से ही भोपाल जायेंगे । ट्रेन ल्रगभग 11.00 बजे थी और 10.00 बज चुके थे ,इसलिए हम लोग तत्काल रेल्वे स्टेशन रवाना हुए । स्टेशन पहुॅचकर हमारे स्थानीय अधिकारी श्री बडोला एवं श्री अतुल खेड़ा ने टिकट प्राप्त करने में मदद की और हम लोग हबीबगंज–निजामउद्दीन एक्सप्रेस में सवार हो गये । ट्रेन लगभग 11.15 बजे रवाना हुई । जब ट्रेन प्लेटफार्म पर खड़ी थी और चलना शुरू नहीं किया था तब ऐसा लग रहा था जैसे ट्रेन हिल रही हो । ऐसा संभवतः थकान और मानसिक तनाव के कारण लग रहा था ।

पूरे सात दिन बाद सीट पर पूरी तरह लेटना हो पाया और कम्बल प्राप्त हुआ, क्या ही दुर्लभ घटना थी!

नई सदी का सूर्योदय ट्रेन में देखने को मिला । पूरे सात दिन बाद सूरज देखने का मौका मिला था। सूरज की किरणों से ऐसा आभास हुआ कि एक नये जीवन का उत्सर्ग हुआ हो । तत्काल याद आया कि किस तरह से अपहरित विमान में सूरज की रोशनी के लिए हम लोग तरसते थे और कुछ यात्राी चोरी–छिपे खिड़की का शटर ऊपर करके रोशनी देखने का प्रयास करते थे । सूरज की रोशनी के महत्त्व का अनुभव पहली बार हुआ।

भोपाल रेल्वे स्टेशन पर हम लोगों को लेने के लिए काफी लोग इकट्ठे हुए थे । हमारी दोनों बिटिया थीं। साथ ही हमारे विभाग के अधिकारीगण भी थे । काफी अच्छा लग रहा था । लेकिन जोयिता को शिकायत थी कि वह चाह रही थी कि वह अकेले ही अपने मम्मी–पापा को लेने आये ।

स्टेशन से हम लोग सीधे घर की और रवाना हुए । रास्ते में कार में श्रीमति रामप्रसाद सुचित्राा को ढाढ़स बंधा रही थी और दोनों रो रहीं थी । हम अपने घर के पास पहले घर से लगे हुए पंचमुखी हनुमान के मन्दिर गये। काठमांडू में धुलीखेल जाते हुए रास्ते में एक मन्दिर पड़ा था । सब लोगों के साथ हम भी उस मन्दिर में गये थे । मन्दिर मे जाकर देखा तो वह पंचमुखी हनुमान का मन्दिर था । सुचित्राा ने कहा कि–'' देखो हमारे घर के पास पंचमुखी हनुमान का मन्दिर है । हम लोग कभी नहीं गये । इसलिए इन्होंने हमें यहां पर बुला लिया ''। इसलिए सुचित्राा ने रास्ते में ही तय कर लिया था कि पहले पंचमुखी हनुमान मन्दिर जायेंगे । मन्दिर से घर पहुॅचकर फिर से भावावेश का एक दौर चला और आंसूओं की बरसात के बीच मां, पिताजी और बच्चों से मिले ।

भोपालवासी, हमारे दोस्त एवं स्नेहियों ने शुभकामनाओ में फूल के रूप में अथाह स्नेह बरसाया । इतना प्यार, इतने फूल, इतनी प्रार्थनाएॅ, दुआएॅ हमारे लिए, मन पूरी तरह से भर गया। पर मानसिक यातना के वे क्षण भुलाए नहीं जाते। घर से दूर, वृद्ध माता पिता , मासूम बच्चों से इस तरह अचानक बिना विदा कहे बिछड़ने की त्रासदी हमेशा याद रहेगी। कौन कहता है कि मनुष्य दुख के क्षण समय के साथ भूल जाता है। वे स्मृतियां भी हमारी अपनी थाती हैं, संजोकर रखने योग्य।

इसी बीच मीडिया के लोग भी घर पर पहुॅच गये थे और सवालों की बौछार करना शुरू कर दीया । चूॅकि पूरे 185 घण्टे हो गये थे एक ही कपड़ों में ,इसलिए नहाने की इच्छा हो रही थी। परन्तु मिलने वालों शुभचिन्तकों तथा मीडिया के लोगों की वजह से बड़ी मुश्किल से 4.00 बजे तक नहा पाया ।

घर लौटकर इस बात का एहसास हुआ कि हम लोग अलग–अलग होते हुए भी कितने जुड़े हुए हैं । हमारे अपहरण के दौरान हमारे अनेक मित्राों के फोन घर पर आते रहे तथा बहुत से लोग निरन्तर घर आकर पूछताछ करते रहे ।

माननीय मुख्य मंत्राी जी ने भी इस दौरान घर पर पूछताछ की थी ।

मेरे पुराने मित्रा प्रभूदयाल मीना ने दूरभाष पर अवगत कराया कि उन्हें इस अपहरण की घटना की जानकारी उस समय मिली जब वे खण्डवा के दौरे पर थे । वे तत्काल खण्डवा में धूनी बाबा के मन्दिर गये और वहां पर मन्नत मांगी । वे वहां यह कहकर आये कि जब अजय लौट आयेंगे तो अजय को लेकर फिर आऊॅगा। प्रभुदयाल मीना ने बताया कि हम लोगों को एक बार खण्डवा जाना पड़ेगा । मैंने कहा कि निश्चित चलेंगे ।

अमरिका से अरूण अग्रवाल का इ–मेल मिला कि जब से उन्हें हमारे अपहरण का पता चला ,उन्होंने एक मोमबत्ती (केण्डल) जलाकर रखी थी और उसे तब तक बुझने नहीं दिया ,जब तक हम छूटकर वापस नहीं आ गये ।

तत्कालीन माननीय केन्द्रीय पर्यटन मंत्राी सुश्री उमा भारती भी घर पर आईं और लौटने की बधाई के साथ–साथ हमारी बेटी जोयिता की विशेष रूप से सराहना की । इससे यह लगा कि बाहर लोग कितने चिंतित थे और हम लोग एक–दूसरे से कितने जुड़े हुए हैं ।

दिल्ली एयरपोर्ट पर रेस्क्यू विमान से उतरते हुए हर्षोन्मादित यात्री । रूपीन कत्याल की पत्नि रचना कत्याल पीछे से उतरती दिखाई दे रहीं है (←) *(फ्रंटलाइन)*

kandhar1304a 60

अपहरण के सात दिन बाद का पहला सूर्योदय : दिल्ली से भोपाल के सफर में ट्रेन की खिडकी में से सदी के पहले सूर्योदय की किरणें देखने को मिलीं

kandhar1304a 59

आभार सर्वशक्तिमान का

"मृत्यु तो मां है जो नया जन्म देती है'' ,ऐसा किसी यात्री ने कहा था माइक पर आकर, शायद अशोक आदिल ने । अनुपमा ने भी कहा, 'मर जायेंगे पर इन सूफी बनने वालों के सामने रोएंगे नहीं, 'आप भी मत रोईए। पहले कुछ घण्टे जब बुद्धि हारी हुई थी और हम असहाय भयभीत थे तब मृत्यु से भयभीत ,स्वजनों से असमय वियोग से दुखी ,बच्चों के अकेले हो जाने की कल्पनामात्र से आशंकित थे।

परन्तु शायद लगातार धमकाए जाने से हमें यह आभास हो चला था कि अब मृत्यु निश्चित है और हमें मानसिक रूप से तैयार रहना चाहिए । और जिस क्षण हमने सत्य को स्वीकारा , हृदय में बल, संकल्प व देश प्रेम की भावना पाई। यही सत्य है । शाश्वत् सत्य का यह विचार उन क्षणों में कैसे पनपा ?

31–12–99 को सेंटोर होटल से तेजी से स्टेशन की ओर जाते हुए श्री बडोला से ज्ञात हुआ कि बेटी ने बड़ा साहस व धैर्य दिखाते हुए अच्छे वक्तव्य दिये । घर आकर ज्ञात हुआ कि उसने न केवल घर पर सबको सम्भाले रखा, बल्कि आने–जाने वालों को भी संभाला तथा इतनी विषम स्थितियों में भी देश की 'शान–सम्मान' को ही प्राथमिकता दी । घर में प्रवेश करते ही सब बोले अब तो जोयिता हमारे स्नेह की ही नहीं श्रद्धा की पात्राा बन चुकी है ।

शैशव काल से उसमें साहस व आत्म विश्वास सामान्य से अधिक पाया है ,परन्तु उसकी कई गैर जिम्मेदाराना गतिविधियों को हम सभी यही सोच कर उपेक्षा कर जाते हैं कि चलो उम्र के साथ सब ठीक हो जाएगा ।

'देश प्रेम' की हमने उसे अलग से कोई शिक्षा नहीं दी थी । सभी माता–पिता बच्चों को परिवार के वरिष्ठों ,प्रतिवेशियों ,समाज व राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों से अवगत कराते हैं व इनका यथा योग्य सम्मान करने की शिक्षा देते हैं ।

परन्तु ऐसी विषम स्थिति में ,जब मनोबल टूट जाता है ,सांत्वना की आवश्यकता होती है ,तब उसमें जो स्थिरता और विश्वास देखा गया ,उससे देशवासी प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाए । आश्चर्य की बात है कि बन्धक होने की स्थिति में जो विचार हमारे मन में थे ,पर हम लोगों तक पहुॅचा नहीं पा रहे थे वही बात जोयिता ने लोगों से कही । विलम्ब से ही सही ,पर कोई न कोई शान्तिपूर्ण सुराहा हो जाएगा यह बात हमने भी विमान में बन्धकों को बताया व हमारी बेटी का भी यही विचार–विश्वास था । मातृभूमि को हमारा 'नमन' हमारी बेटी ने आप सब तक पहुॅचाया तथा इस प्रकार मुक्ति के पश्चात् हमें सभी बन्धकों में विशिष्टता प्रदान की । ऐसी बात नहीं कि राष्ट्रप्रेम की यह भावना उस समय और बच्चों में न हो ,देश के सभी शहीदों ने राष्ट्रप्रेम की भावना से ही आत्मोत्सर्ग किया , परन्तु सही परिस्थितियों में ,सही समय पर , सटीक उद्गारों का प्रकट होना क्या एक दैवीय घटना नहीं लगती ?

बन्धक विमान से उतर कर हम सभी महिलांए बचाव (Rescue) विमान तक पहुॅचने के लिए वहां उपलब्ध एक मात्रा सीढ़ी की प्रतीक्षा कर रहे थे । एक विमान पास में ही तैयार खड़ा था , व आधे यात्राी उसमें बैठ चुके थे , व कू सदस्य खिड़कियों से ही हमारा अभिवादन कर रहे थे । महिलांए अपने पतियों व कुछ अपने साथ के लोगों को तलाश रहीं थीं , वे सब एक साथ ही रहना चाह रहीं थीं । कुछ अधिकारी हमें समझा रहे थे कि कृपया दूसरे जहाज में बैठ जाइए ,इससे समय भी बचेगा ,दोनों जहाज लगभग एक डेढ़ घण्टे के अन्तर पर ही दिल्ली पहुंच जाएंगें। पर कईयों को कहते–रोते भी देखा कि अब हमें अपने भाग्य पर विश्वास नहीं रहा । अधिकांश यात्री प्रियजनों व अपने समूहों (Groups) के साथ फोटो खिंचवाने में व्यस्त थे व कुछ बचाव दल (Rescue team delegation) व हाईजैकर्स

की मांग (Demands) के बारे में ,विमान के बाहर की स्थितियों को अधिक से अधिक जान लेना चाहते थे।

मैंने अनुमान लगाया कि अजय दूरस्थ वाले विमान में पहुँच गये होंगें । और अब बातचीत करने वाला कोई नहीं ,सैकड़ों तालिबानी सैनिक ,अधिकारी हमें देख रहे थे । इतने दिनों में जो यात्री एक परिवार के से ही हो गए थे वे अब अलग होने वाले थे । और फिर पता नहीं कब मिलें । मैंने स्वेटर लपेट कर बनाया गया अपना नकाब हटाया और उस महिला के पास मिलने गई जिसने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया था , डॉक्टर अनिता जोशी । उन भीषण मानसिक व शारीरिक यंत्राणा की परिस्थितियों में वे सामान्य सा स्मित लेकर हर उन यात्रियों के पास पहूँच रहीं थी जो उन्हें बुलाकर अपनी व्यथा बतलाता था । यात्रियों से वे ऐसी बातें कर रही थीं मानों कुछ खास घटा ही नहीं । वे समस्यांऐ सुनती ,दवाएं देती ,यात्रियों से दवाएं मांग कर –उपलब्ध करवातीं तथा अपहरणकर्ताओं से भी कुछ विशेष दवाएं निरन्तर मंगवाती गयीं । मैंने उन्हें 25–12–1999 से ही सक्रिय देखा । एक दिन वे भी अस्वस्थ हो गईं ,परन्तु ठीक होते ही फिर से वही कर्तव्यपरायणता । मैं आश्चर्य से उन्हें विमान के अन्दर इधर से उधर चहलकदमी करते देखती रहती । जब हम सभी भयाक्रान्त होकर सब कुछ भूल चुके थे तब उन्हें अपना कर्तव्य याद था । मैंने विमान में भी उनके पास जाकर उनके स्वास्थ्य की खबर ली थी ,उस दिन भी पूछा ''अब आप कैसीं हैं ,घर जाने पर खुश तो हैं ।'' उन्होंने बताया कि उनका 12 वर्षीय बेटा प्रतीक्षारत होगा । उन्हें नर्वस ब्रेकडाउन हो गया था ,अब ठीक है । कारण पूछने पर बतलाया कि 2 वर्ष पहले ,सम्भवतः इन्हीं दिनों रोड एक्सिडेंट में वे अपना पति खो चुकी थीं , तभी से वे नर्वस ब्रेकडाउन की शिकार हो जाती हैं । कर्तव्य भावना के आगे अपने दुःख इतने गौण हो जाते हैं ,मेरा मन उनके प्रति करूणा व श्रद्धा से भर गया । ईश्वर कितना दयालु है कि संकटकाल में उन्होंने अपना एक प्रतिनिधि हमारे पास भेजा ।

धन्यवाद ईश्वर का ,सदबुद्धि देने का । कुल 169 घण्टों में जहां सभी यात्रियों ने कुछ न कुछ शारीरिक तकलीफ झेली ,कई बन्धकों की पिटाई भी हुई पर महिलाओं ने स्वंय को कभी असुरक्षित नहीं महसूस किया । अपहरणकर्ता जो स्वंय को भी खुदा का बन्दा कहते थे ,सभी महिला यात्रियों को बहन या आंटी कह कर सम्बोधित किया तथा अत्यधिक सम्मानजनक व्यवहार किया । यह याद रखने योग्य है ।

दिनांक 29–12–99 की रात को जो महिलाएं एक्जीक्यूटिव क्लास में पृथक कर दी गई थीं, उनके अनुसार 'चीफ' व्यवहार व बातचीत में अत्याधिक ज़हीन थे ।

पुनश्चः धन्यवाद ईश्वर का ।

हमें आभास था कि जिस समय घर पर मां–बाबा हताश होकर बैठे होंगे, मामीजी और मामाजी उनके पास होंगे ,उनका मनोबल बढ़ाने के लिए । फिर समयावधि बढ़ने के साथ विश्वास होता गया और 31–12–99 को दिल्ली पहुॅचकर घर पर बात की तो पुष्टि भी हो गई कि वे लोग निरन्तर साथ हैं, अपना घर ,अपनी सुविधाएं और परेशानियों को भुलाकर ।

मामाजी के असाध्य रोग से ग्रस्त होने के बावजूद मामीजी को ईश्वर पर अटूट विश्वास है । उनका दृढ़ विश्वास है कि ईश्वर विषम परिस्थितियों में यथायोग्य सहनशक्ति भी देते हैं । हमें भी उन्होंने उजस्विता प्रदान की ।

अंधविश्वास कहिए या आशीष , दो घटनाएँ विशेष रूप से स्मरण हो आती है। नेपाल में शांग्रीला से हम प्रतिदिन 'भगवती स्थान ' जाते थे, तथा वहां स्थित भगवती माँ के मन्दिर के पास बस रूकती तो हम उतरकर दर्शन करते, फिर अपने–अपने ग्रुप्स के साथ सर्वे पर निकल जाते थे।

पहली बार शाम को मंदिर के अन्दर प्रवेश किया तो धातु की बनी प्रतिमा, फूलों से सजी, व चॉदी के जेवर व मुकुट धारण किए माँ भगवती के दर्शन अत्यधिक तृप्तिदायक लगे । चारों ओर दालान में दर्पण लगे थे जो भक्तों द्वारा चढ़ाए गए थे, सम्भवतः वहां की कोई परिपाटी थी। प्रवेश द्वार पर दोनों ओर तेल युक्त दीपक जले थे। ऊपर देखा तो मंदिर की छत भी कलात्मक पैगोडा आकार की धातु की बनी हुई थी । शिखर पर कबूतर ही कबूतर बैठे थे। संध्याकाल में यों भी पक्षियों का कलरव अधिक सुनाई देता है। अचानक अन्तिम भाग में अन्दर से झक सफेद उल्लूक दिखाई दिया। शायद वो वही निवास करता था कबूतरों के बीच। अजय अपना कैमरा लिए मंदिर परिसर में ही घूम रहे थे। सफेद उल्लू का दर्शन अत्यधिक शुभ माना जाता है, अतः मैने अजय को भी वहां बुलाया। जब तक अजय आए और मै वो उल्लू दिखाती तब तक वह अन्दर जा चुका था और वहां सफेद कबूतर ही कबूतर अन्दर बाहर होते दिख रहे थे। अजय बोले वो उल्लू नहीं सफेद कबूतर ही था व मेरा भ्रम था। ये दो पक्षी एक साथ कैसे हो सकते हैं, एक रात्रिाचर और दूसरा दिनचर; सम्भवतः मुकुन्दजी बता सकें। पर मुझे लगा मैने उल्लू ही देखा था और यह किसी बहुत ही शुभ घटना का लक्षण था, कोई दैवि आशीर्वाद का प्रतीक !

वैसे भी भारतीय दर्शन के अनुसार सत्य और भ्रम, रज्जू व सर्पभ्रम वाली स्थिति है। भ्रम की यह स्थिति 'अनिर्वचनीय ख्याति' कहलाती है।

मंगलवार 21 दिसम्बर को वर्कशाप (कार्यशाला) का अन्तिम फील्ड ट्रिप था । सुबह भगवती स्थान रुके, मॉ के दर्शन किए और स्थानीय बच्चों से पूजा सामग्री क्रय करके, अन्दर बैठकर तृप्ति से पूजा भी चढ़ाई, फूल/सिन्दूर, पत्ते में मोड़कर रख लिए। दिनभर वहीं घूम–घूम कर सर्वे किया, लोगों से पूछताछ की, स्थानीय जानकारी प्रपत्रा (च्तवचितउंद्ध में भरा, और अनिच्छा से डब्बेवाला खाना (च्ंबामक सनदबी) खाकर अब वापस जाने की इच्छा हो रही थी। नेपाल, जो एक मात्रा हिन्दु देश है, में मंगलवार का दिन देवी जी एवं महावीरजी दोनों का होता है और दोनों के दर्शन शुभ माने जाते हैं। वापसी में 'मुकुन्दजी' बोले कि वे रुककर हम सबको एक सुंदर से हनुमान मंदिर ले जाएंगे। कुछ लोग उत्साहित थे और कुछ सीधे शांग्रीला पहुंचना चाह रहे थे। मंदिर के पास आते आते थोड़ा विवाद भी हुआ पर अंततः बस रुकी और आधे से अधिक लोग उतरकर कर मंदिर की ओर चल पड़े। मंदिर ऊंचाई पर था और प्राकृतिक सुंदरता से घिरा हुआ था। मैने खिड़की से देखा मंदिर दूर था और पैदल चढ़ाई थी। अजय बोले चलो उतरो, दर्शन कर आते हैं। थकावट व आलस्य से शिथिल होकर मैनें जाने से मना कर दिया, ''नहीं जाना है हनुमान जी के दर्शन करने।'' अंत में अजय के बारबार कहने पर हम दोनों उतरकर चल दिए। मैं कार्यशाला में भाग लेने आये सीता के साथ यहां वहां होते हुए मंदिर की ओर चल पड़ी। रास्ते में अनिमेश ने (कार्यशाला का एक अन्य भागीदार) पत्थर उछाल–उछालकर कुछ चीड़ पाईन के शंकु गिरा दिए। उन्हें बटोरकर बस में रखवाकर,सड़क पार कर सीता के साथ सीढ़ियाँ चढ़ने लगे। अजय पहुंच चुके थे पर दर्शन नहीं किए थे। मंदिर परिसर स्वच्छ, सुंदर विशाल और संगमरमर के विशाल दालान से घिरा था। हमने जूते उतारे, हाथ धोए और दालान से होते हुए हनुमानजी की मूर्ति के पास पहुंचे। दर्शन करते ही हम आश्चर्य चकित रह गए। ये तो वही पंचमुखी हनुमान थे जो भोपाल में हमारे घर से पार्श्व में है, व हमें नित्य ही दर्शन देते हैं। यहां इस बार ऐसा प्रतीत हुआ मानों वे स्मरण दिला रहे हों कि मेरे दर्शन में, मेरे स्मरण में पाठ मे, ही तुम्हारी मुक्ति है।

तत्काल ही मैने अजय को कहा कि सम्भवतः हमें कुछ समझाया जा रहा है, जो महत्वपूर्ण है। मैने प्रसाद लिया अपनी भूल/मूर्खता की क्षमा माँगी, व दर्शन देकर जो उन्होंने कृपा की उसका आभार माना। फिर तो अभागी आठ दिन तक बस ''संकट से रक्षा करो पवन पुत्रा हनुमान'' ।

घर पर हनुमान चालीसा का पाठ यदाकदा कर लिया करते थे। विमान में ठीक से क्रमवार याद नहीं आ रहा था। '' संकट ते हनुमान छुड़ावै मन क्रम बचन ध्यान जो लावें, छूटहि बंदि महा सुख होई ''।

अजय से एक कागज का टुकड़ा लेकर तीन खण्ड (स्टेंजा) लिखा गया । कागज अपर्याप्त था तो सामने रखे समाचार पत्रा के हाशिए पर लिख लिया। जब चालीसा प्रथम से पूरी लिखी गई तो शंका हुई कि जाँचें कैसे?

बगल की सीट पर दो पंजाबी महिलाएं व एक नेपाल वासी महिला के भी कुछ पाठ के धीमे स्वर सुनाई दिए। ध्यान से सुना, लिप रीडिंग (Lip reading) की और पाया कि वे सब भी हनुमान चालीसा का ही सस्वर पाठ कर रहीं थीं। वे नियमित रूप से बार–बार (repeatedly) पाठ करती थीं । मैने भी ध्यान लगाया और लिखे हुए पन्नों को लेकर उनके साथ–साथ पाठ करने का प्रयास किया। कभी रोकर, कभी दृढ़ता से, कभी निर्विकार होकर बस उन्हें ही स्मरण किया। और वे तो भक्तवत्सल हैं। बस दोनों हाथ उठाकर विव्हल होकर ह्रदय से बुलाना होता है। रामकृष्ण परमहंस के अनुसार– ''पानी में डूबता आदमी, जैसे सबकुछ भूलकर दोनों हाथ उठाकर ईश्वर को पुकारता है, तभी वे आते हैं।'' हमारे पास भी वे आए। मंत्र, पूजा, विधि पाठ कुछ भी तो नहीं जानते हम।

न जानामि दानं न च ध्यानयोगं, न जानामि तंत्रा न च स्त्राोत मंत्र।
न जानामि पूजां न च न्यासयोगं , गतिस्तवं त्वमेका भवानि।।

मैं दान नहीं जानती, मैं ध्यान नहीं जानती, शास्त्रा नहीं स्त्राोत नहीं, जानती, मन्त्रा पूजा न्यास नहीं जानती , हे भवानी, तुम ही गति हो , तुम्हारी एकमात्र गति हो।

न जानामि पुण्यः न जानामि तीर्थं, न जानामि मुक्ति लयं वा कदाचित्।
न जानामि भक्ति व्रतं वाडपि मार्तगस्त्विं त्वमेका भवानि।।

मैनें कभी पुण्य न जाना, तीर्थ न जाना, मुक्ति, समाधि, भक्तिं, व्रत नहीं जानती। हे भवानी तुम ही मेरी गति हो, एकमात्रा तुम ही मेरी गति हो।

''नमन तुम्हें शत् बारम्बार'' ।

घर में

जहां हम लोग एक ओर विमान में एक अनिश्चितता की स्थिति से जूझ रहे थे ,वहीं घर में भी सभी सदस्य एक मानसिक संवेदना व उद्वेग से जूझ रहे थे । घर पर सुचित्राा के वृद्ध मां और पिता तथा हमारी दो पुत्रियां जोयिता एवं शोमिता घर को संभाले हुई थीं और हम लोगों के आने की प्रतिक्षा कर रहीं थीं । हमारी अनुपस्थिति में घर में जो प्रतिक्रिया हुई , इन्होंने जो अनुभव किया उन्हीं के शब्दों में हम यहां प्रस्तुत कर रहे हैं ।

पिताजी

वैसे तो विमान अपहरण की घटना कोई नई बात नहीं है और मैंने अपने जीवन काल में अनेक विमान अपहरण की घटनाओं के बारे मे सुना है । परन्तु कंधार विमान अपहरण की घटना हमारे जीवन काल की और विशेष रूप से हमारी वृद्धावस्था की महत्वपूर्ण घटना थी । क्योंकि इस अपहरण की घटना से मेरी पुत्राी और उसके पति जुड़े हुए थे। यह घटना अपने आप में एक विछिन्न घटना नहीं है ,बल्कि यह घटना जुड़ी हुई है हमारी पूरी सामाजिक व्यवस्था के साथ और यह प्रमाणित करती है कि मनुष्य अपने व्यक्तिगत जीवन में भी विभिन्न प्रकार की विचारधाराओं में विभाजित है । यह घटना मात्रा राजनैतिक,अर्थनैतिक या जातिगत विभेदजनित नहीं है ,बल्कि इसमें धर्म की विशेष भूमिका है । सर्वधर्मप्रार्थना एवं सर्वधर्मसमभाव दोनों भिन्न बातें हैं जो व्यवहारिक जीवन में संभव नहीं हैं , क्योंकि सर्वधर्मप्रार्थना में यह विचार प्रच्छन्न रूप में रहता है कि ''मेरा धर्म ही श्रेष्ठ है । अतः उसका प्रचार एवं प्रसार वांछनीय है । दुःख की बात यह है कि जिस धर्म को आश्रय करके हम लोगों की जीवन यात्राा का निर्वाह होता है ,वही धर्म जब धर्मोन्माद में परिणत होता है तब मनुष्य की सहिष्णुता का अन्त हो जाता है, मनुष्य हिंसक हो जाता है और हम धर्म युद्ध की पुकार सुनते हैं । हमारा यह सोचना कि ''मेरा धर्म अन्य धर्मो का सम्मान करता है'' हमारी सत्येत्तर धारणा है ।

यदि हम देखें तो धर्मशासित देशों का दृष्टिकोण अत्याधिक सरल है ,जहां उस देश के धर्म के बिना अन्य धर्मावलम्बी स्वतः ही द्वितीय श्रेणी का नागरिक होता है । या तो वह अपना धर्म त्याग दे ,अथवा समूल नष्ट हो जाय ।

मेरा अभिमत यह है कि विश्व में जो कुछ अशान्ति हो रही है वह धर्म की नासमझी के कारण ही हो रही है । अजय से सुना कि अपहर्ता 'डाक्टर' का भी यही कहना था कि– 'यदि हममें कोई कमी है , बुराई है तो इसलिए कि हम इस्लाम को ठीक से समझ नहीं पाए हैं और जो अच्छाई आप हममें देख रहे हैं वह इसलिए कि हम इस्लाम के अनुयायी हैं '।

धर्म की व्याख्या हर कोई अपने –अपने ढंग से करता है। धर्मवाद व उससे पनपा आतंकवाद अब हमारे नियंत्रण से बाहर होता जा रहा है। इतिहास भविष्य में इन मूल्यों पर प्रश्न उठाएगा और इसकी विवेचना करेगा।

मैं अपनी पुत्री और जामाता के उन असंख्य सहकर्मी एवं शुभाकांक्षी मित्रों को धन्यवाद देता हूँ, जिन्होंने हम लोगों के मनोबल को निरन्तर अक्षुण्ण रखा और लगातार हम लोगों को भरोसा दिया । हमारे साथ हमारी दो नातिनें हैं,जिनकी हमें विशेष चिन्ता हो रही थी । परन्तु उन्होंने हमसे ज्यादा धैर्य का परिचय दिया । हमारी बड़ी नातिन जोयिता 15 साल की है ,परन्तु उसने हमारे धैर्य और हमारे मानसिक संतुलन को अटूट बनाये रखा जो कोई वयस्क भी नहीं कर सकता । हम लोगों ने दूरदर्शन पर उसके साक्षात्कार में उसके देश प्रेम की जो बात सुनी वह हमें एक दैविक घटना ही लगी । यहां पर मुझे अनायास ही याद आ रहा है कि जोयिता के पिताजी के एक मात्रा सगे मामा जी प्रयात् श्री

सत्यव्रत चक्रवर्ती एक स्वाधीनता सेनानी थे और अंडमान की सेलूलर जेल में बन्दी भी थे । हो सकता है कि जोयिता की परिणत बुद्धि व विषम परिस्थितियों में भी देशप्रेम की भावना में उन्हीं का प्रभाव हो। हमारी छोटी नातिन शोमिता 5 साल की है । चारों ओर की अप्रत्याशित घटना और हम लोगों की गम्भीर मुद्रा को देखकर वह अधिकांश समय शांत होकर पेंटिंग करती रहती थी । बीच–बीच में दूरदर्शन पर कंधार में अपहरित विमान के समाचार सुनते हुए बोलती रहती थी कि–'डाकू लोग मां – बाबा को कब छोड़ेगें, वे लोग कब आयेंगे' ?

हम लोगों को सारी जानकारी दूरदर्शन और समाचार पत्रों से मिल रही थी । फिर भी जाने–अनजाने दूरभाष के द्वारा असंख्य लोग हम से ही पूछते थे कि–''आप लोगों को कुछ खबर मिली क्या ?'' परिचित–अपरिचित सभी लोग यही बात पूछते थे ,जबकि वे भी जानते थे कि समाचार का माध्यम केवल दूरदर्शन व आकाशवाणी तक ही सीमित था । उन लोगों की यह उद्विग्नता व समवेदना यह दर्शाती थी कि उन लोगों में कितनी चिन्ता स्नेह,शुभेच्छा और सहानुभूति विद्यमान है । यह निश्चित ही भगवान की अनंत करूणा का प्रकाश है ।

एक प्रश्न जो अब उठ रहा है कि विमान के बंदियों ने 'शहीद' हो जाने का अवसर क्यों खो दिया और तीन आतंकवादियों को क्यों मुक्त करना पड़ा ? यह एक तर्क सापेक्ष विषय है । नेताओं का राजनैतिक स्वार्थ तथा प्रभुसत्ता पाने का लोभ आतंकवाद को निरन्तर धीरे–धीरे प्रश्रय देता रहा है । उस समय बंधकों की मनःस्थिति गीता में वर्णित 'स्थितप्रज्ञ' अथवा ब्राह्मी स्थिति में पहुँच गई थी ।

कवि रविन्द्रनाथ की भाषा में जीवन–मृत्यु पैरों के भृत्य के समान व चित्त भावना शून्य है । उन्हीं के अनुसार 'पृथ्वी हिंसा से उन्मत्त है एवं यहां नित्य निष्ठुर द्वन्द हो रहा है' । हम प्रार्थना करते हैं कि संसार में हिंसा ,द्वेष ,धर्मगत विभेदजनित रक्तपात का अन्त हो । भारतीय परम्परा के अनुसार मनुष्य में जो धर्म को लेकर अन्तः कलह है ,वह शान्त हो जाना चहिए । भारतीय दर्शन के अनुसार केवल प्रस्थान भेद है , प्रस्थेय भेद नहीं है । राकृष्ण परमहंस के अनुसार –''जितने मत उतने ही पथ हैं ''।

मैं ईश्वर से यही प्रार्थना करता हूँ कि विश्व में आपसी युद्ध बन्द हो ,आतंकवाद का अन्त हो और विश्व में शान्ति स्थापित हो ।

माताजी

जब 24 तारीख को रेडियो में विमान अपहरण का समाचार मिला तो एक दम से सदमा पहुँचा और हम लोग स्तब्ध रह गये । 25 तारीख को सुचित्राा और अजय को आना था । 25 की सुबह हमारी छोटी नातिन ने उठते ही कहा चलो मां और बाबा को स्टेशन लेने चलते हैं । तब हम लोगों की दुश्चिन्ता शुरू हुई कि इसको कैसे समझायेंगे । सुबह से ही सुचित्राा और अजय के सहकर्मी ,सहयोगी एवं मित्रों का आना शुरू हो गया था और रात तक यह सिलसिला चलता रहा । लोग आते रहे और हम लोगों को सांत्वना देते रहे ,हम लोगों का मनोबल बढ़ाते रहे । पूरे सात दिन तक यह सिलसिला चला । इन लोगों के जाते ही फिर वही दुश्चिन्ता शुरू हो जाती थी । जोयिता और शोमिता की चिन्ता होती थी कि हम लोग वृद्ध हैं, हम लोगों के बाद इनका क्या होगा ,इनको कौन देखेगा ,इनका क्या भविष्य होगा । साथ ही साथ यह भी लगता था कि इतने लोगों की स्नेह,शुभेच्छा और प्रार्थना का क्या कोई मूल्य नहीं है ? क्या ये खाली जायेंगे ? हम लोगों के परिचित मिलने आते थे और हम लोगों को आश्वासन देते थे कि सब ठीक हो जायेगा । हमारी बड़ी नातिन जोयिता ने जिस प्रकार हम लोगों का मनोबल बनाये रखा , वह निश्चित ही आशातीत था और वह जिस तरह से एक व्यस्क व्यक्ति की तरह हम लोगों को भरोसा दे रही थी ,उससे हमें अच्छा भी लग रहा था और आश्चर्य भी हो रहा था । हमारी दोनों नातिन – जोयिता और शोमिता पूरे समय कभी विचलित नहीं

हुई । शोमिता बीच–बीच में पूछती रहती थी कि इतने लोग क्यों आ रहे हैं और फिर अपनी पेटिंग में जुट जाती थी । दूरदर्शन पर अपहरण के समाचार सुनकर पूछती रहती थी कि मां–'बाबा क्यों नहीं आ रहे हैं' ? उनके वापस आने के बाद बोलती थी कि मां –बाबा को काठमांडू के डाकूओं ने पकड़ रखा था । इन दोनों नातिन को देखकर ही हम लोगों को शक्ति मिलती थी और उनका चेहरा देखकर ही हमें जीवन के प्रति एक मोह पैदा हो रहा था । हम भगवान से प्रार्थना कर रहे थे कि मनुष्य को सद्बुद्धि दे ।

सुचित्रा और अजय के लौटने के बाद अनेक रिश्तेदारों और जान पहचान वालों, सभी ने अभिनंदन भेजे और बताया कि वे सात दिन तक लगातार ईश्वर से उनके लौटने की प्रार्थना करते रहे हैं। तब ऐसा लगने लगा कि लोगों की प्रार्थना ने ही इन लोगों को वापस लौटाया है । इससे मनुष्य और मनुष्यता के प्रति हमारा विश्वास और भी दृढ़ हुआ । मैं उन देशवासियों के प्रति कृतज्ञ हूँ ,जिन्होंने भगवान की तरह हमें सांत्वना दी। जब दूरदर्शन पर कार्यक्रम देखने में भी डर लग रहा था कि कहीं कोई अशुभ समाचार देखने का न मिले,तब मेरे भाई और विशेष रूप से हमारी भाभी , जो इन दिनों हम लोगों के पास आकर रह रहीं थीं , ने कहा कि भगवान हम लोगों की परीक्षा ले रहा है । चिन्ता की कोई बात नहीं है । भगवान से प्रार्थना करो कि मनुष्य को सद्बुद्धि दे , और कोई भी मनुष्य इस प्रकार की असहाय ,कष्टदायक स्थिति में न रहे।मैं इस घटना का राजनैतिक,आर्थिक या अन्य कोई कारण समझ नहीं पा रही थी और मुझे लगा कि मुझे उनको समझने की आवश्यकता भी नहीं है।

जोयिता

दिनांक 24 दिसम्बर,1999 को रात्रि लगभग 8–00 बजे मैं क्रिसमस ट्री सजा रही थी । अचानक नाना जी ने अपने कमरे से बाहर आकर घबड़ाते हुए कहा कि ट्रांजिस्टर पर समाचार में उन्होंने सुना है कि नेपाल से दिल्ली आने वाली फ्लाईट का अपहरण हो गया है । पहले तो मुझे विश्वास नहीं हुआ और लगा कि नाना जी ने पता नहीं क्या सुन लिया है । नाना जी ने यह भी बताया कि चार यात्रियों की अपहरणकर्ताओं ने हत्या भी कर दी है । इस दिन हमारे घर का फोन खराब था,इसलिए कहीं फोन भी नहीं कर पाई । थोड़ी देर बाद हमारे एक परिचित तिवारी जी आये । उनके साथ जाकर एस.टी.डी. बूथ से मैंने दिल्ली में अपनी नानी जी के भाई को फोन किया । उन्होंने बताया कि काठमांडू से आने वाले हवाई जहाज का अपहरण हो गया है । मुझे पक्का नहीं था कि मां–बाबा इसी फ्लाईट से आ रहे थे । पिताजी के आफिस से यह बताया गया कि मम्मी–पापा बनारस में उतर गये हैं । मुझे लगा कि यदि बनारस में उतर गये हों तो अच्छा है। रात को 11–00 बजे हमारे पहचान के पुलिस अधिकारी सांई मनोहर आये और उन्होंने बताया कि उनको पिताजी के सहयोगी अधिकारी बिन्दुजी ने भेजा है और उन्होंने हम लोगों को सांत्वना दी कि घबड़ाने की कोई बात नहीं है । घर पर केबल कनेक्शन नहीं होने के कारण दूरदर्शन के अलावा और कोई चैनल हम लोग नहीं देख पा रहे थे । 25 तारीख की दोपहर तक केबल कनेक्शन लगा और फिर हम लोग अन्य चैनलों पर भी समाचार देखने लगे ।

25 तारीख की सुबह सात बजे के लगभग यह पक्का हो गया था कि मां–बाबा वाले हवाई जहाज का अपहरण हो गया है । सुबह–सुबह पापा के आफीस से अनेक अधिकारी – श्री आर0डी0शर्मा, श्री व्ही0आर0खरे श्री आर0के0सिंह ,श्री ए0पी0दुबे, श्री एल0एम0बेलवाल और बहुत सारे अन्य अधिकारी आये । उन्होंने भी कहा कि घबराने की जरूरत नहीं है ,सब ठीक हो जायगा । 25 तारीख को सुबह से ही मीडिया (दूरदर्शन ,समाचार पत्रा) वाले आने लगे । मजेदार बात यह है कि मीडिया वाले हम ही से पूछ रहे थे कि –'कोई खबर आई क्या ? आपकी मम्मी–पापा से बात हुई क्या ?' सुबह से रात तक समय ही नहीं मिल पा रहा था । लोग–बाग आते–जाते रहे। चूँकि मीडिया से

यह समाचार मिल रहा था कि अपहरित विमान में यात्रियों को खाना बगैरह मिल रहा है और किसी को कोई तकलीफ नहीं हो रही है , इसलिए कोई घबड़ाहट नहीं हो रही थी । रोज–रोज लोग यही कह रहे थे कि आज कुछ न कुछ हो जायगा । तीन दिन बाद मुझे ऐसा लग रहा था कि एक तारीख से पहले कुछ नहीं होगा । मुझे पूरा विश्वास था कि सब लोग छूट जायेंगे ,कुछ गलत नहीं हो सकता । ऐसा विश्वास मैरे खुद के अन्दर ही हो रहा था ,मुझे न तो भगवान के ऊपर कोई भरोसा था और न ही सरकार के उपर । मेरा स्वंय का ही दृढ़ विश्वास था कि मां–बाबा वापस आ जायेंगें । नाना–नानी वैसे तो काफी आशावादी रहे, परन्तु जिस दिन अपहरणकर्ताओं ने डेड लाईन देकर सबको मारने की धमकी दी ,तो थोड़े नर्वस हुए । लेकिन मुझे उस समय भी कोई घबड़ाहट नहीं हुई । मुझे ऐसा लग रहा था कि जब कुछ खराब होना होता है तो अन्दर से खटकता है , और ऐसा कुछ भी नहीं हो रहा था । इसलिए मुझे लग रहा था कि सब ठीक हो जायगा और वही हुआ । 31 दिसम्बर, 1999 को मां–बाबा अपहरणकर्ताओं के चंगुल से छूट गये और 1 जनवरी को घर वापस आ गये । वैसे मुझे यह लगा कि आतंकवादियों को नहीं छोड़ना चाहिए था । हमारी कहीं न कहीं हार हुई है । हमने बेटल (Battle) तो जीत लिया है , लेकिन वार (War) हार गये हैं ।

शोमिता

शोमिता को निश्चित ही कुछ अजीब सा लग रहा था ,जो वह अपनी भाषा में प्रकट नहीं कर पा रही थी। वह सभी लोगों को गम्भीर , चिन्तित और उद्विग्न देखकर अधिकतर समय शांत रहती थी। अपनी पेन्टिंग लेकर व्यस्त रहती थी और दूरदर्शन के समाचार देखती थी । हम लोगों के वापस आने पर हम लोगों को बिलकुल छोड़ना नहीं चाहती थी और कहीं जाने नहीं देना चाहती थी । इससे यह पता चलता है कि उसने उस समय अपने मां–बाबा का अभाव किस प्रकार महसूस किया होगा । इस पूरी घटना से उसे शायद एक नया सबक मिला । हम लोगों के वापस आने पर वह कहने लगी कि –''आप लोग जब बाहर जायें तो अपने साथ पिस्तौल और ग्रेनेड भी साथ में लेते जाना ''। शायद उसके शैशव जीवन का यह एक बहुत बड़ा उन्मेष है ।

शाबास जोयिता

यहां जोयिता के बारे में विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक है । लौटकर हमें ज्ञात हुआ कि जोयिता ने ऐसी विषम परिस्थितियों में जिस प्रकार अपने देश प्रेम ,आत्म विश्वास और सहिष्णुता का परिचय दिया ,वह न सिर्फ सराहनीय है बल्कि अपने आप में एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक घटना भी है । जोयिता ने स्पष्ट रूप से यह विचार व्यक्त किया कि– 'आतंकवादियों को किसी भी हालत में नहीं छोड़ना चाहिए । आज अपहरणकर्ता आतंकवादी की मांग कर रहे हैं । कल कश्मीर की मांग करेंगे तो क्या हम उन्हें कश्मीर दे देगें ? सरकार को उनकी मांगों को बिलकुल नहीं मानना चाहिए '। जोयिता ने बताया कि उसे पूर्ण विश्वास था कि बंधक छूट जायेंगे और इसी विश्वास के कारण शायद वह चाहती थी कि आतंकवादियों को न छोड़ा जाय । मीडिया ,प्रेस ,दूरदर्शन सभी ने जोयिता के साहसिक और विरतापूर्ण विचारों को सराहा । उसके ये विचार उस समय इसलिए भी अधिक महत्वपूर्ण थे क्योंकि उसी समय दिल्ली में बन्धकों के रिश्तेदार प्रधान मंत्री के निवास पर धरना दिये हुए थे और आतंकवादियों को छोड़ने के लिए दबाव डाल रहे थे । लोगों का ऐसा मानना है कि जोयिता की अभिव्यक्ति ने अन्य लोगों को भी प्रभावित किया और दूसरे दिन से बन्धकों के रिश्तेदारों के व्यवहार और विचारों में भी परिवर्तन आया । मीडिया के अनुसार पायलट शरण की पत्नी ने भी इसी प्रकार के साहस का परिचय देते हुए कहा कि –''उन्हें शरण पर पूरा विश्वास है कि वह सभी यात्रियों को छुड़ाकर लायेंगे।'' पायलट शरण की पत्नी और जोयिता दोनों ने देश के समक्ष अपने आत्म विश्वासपूर्ण विचार रखकर दूसरे लोगों के लिए शायद एक उदाहरण प्रस्तुत किया । हमारे वापस आने के बाद जब मीडिया वालों ने पूछा कि–'अब तुम्हारे माता–पिता वापस आ गये हैं ,अब तुम्हारा क्या कहना है ?' उसने जबाव दिया –''इससे बड़ी खुशी मेरे लिए क्या हो सकती है ? माता–पिता का नई सदी के

प्रथम दिन वापस आना मेरे लिए नये साल की सबसे बड़ी सौगात है ,परन्तु हमने निश्चित ही कुछ खोया है । मैं अभी भी यही कहूँगी कि–आतंकवादियों को नहीं छोड़ना चाहिए था । ''

फिर भी उनकी बेटी नहीं चाहती कि आतंकवादियों को छोड़ा जाए

उनके लिए फिलहाल हर पल सदियों के बराबर है। न आंखों में नींद है न मन में चैन । हालांकि मन में पूरा विश्वास है कि ईश्वर सब ठीक करेगा ,लेकिन इसके बावजूद संभावित अनिष्ट की आशंका उन्हें अन्दर तक हिला देती है , सारा शरीर सिरहन से भर जाता है । वे 'इंतजार' और 'प्रार्थना' के सिवाय अपने परिजनों के लिए कुछ और कर ही नहीं सकते ।

जैसे–जैसे विमान यात्रियों के बंधक बने रहने की समयावधि बढ़ती है , वैसे–वैसे उनके परिवार जनों का तनाव भी बढ़ता जा रहा है । परिवारजन लगभग लगातार टकटकी लगाए टीवी पर समाचार देख रहे हैं । सोमवार की दोपहर को जब उग्रवादियों ने मांग न मानने पर हर आधे घण्टे में एक यात्राी को मौत के घाट उतारने की धमकी दे डाली ,तो अचानक ही कई परिवारों में सन्नाटा खिंच गया । क्या उग्रवादियों की मांगें मान लेना चाहिए ? यह पूछे जाने पर अपहृत विमान में सवार भट्टाचार्य दम्पत्ती की पुत्राी जोयिता कहती हैं कि ऐसे कायराना कृत्य करने वाले अपराधियों को रिहा करना या उनकी मनमानी मांगें मान लेना कतई उचित नहीं है । कक्षा 10 में पढ़ने वाली जोयिता कहती है कि उग्रवादी सिर्फ कोरी धमकी भर दे रहे हैं कि हम यात्रियों को मार देंगे । उन्हें पूरा विश्वास है कि अंतरराष्ट्रीय दबाव के चलते उग्रवादियों को झुकना पड़ेगा और सब कुछ ठीक–ठाक निपट जाएगा । जोयिता यह सब कहते हुए अचानक भावुक हो उठती है । वह कहती है कि वैसे तो मुझे मां–पिता दोनों की चिन्ता सता रही है,लेकिन चूँकि मां ब्लड प्रेशर की मरीज हैं ,इसलिए उनकी कुछ ज्यादा ही चिन्ता है । शाहपुरा निवासी भोजवानी परिवार भी इन दिनों अनिश्चितताओं के घेरे में है । इस परिवार के भी दो सदस्य अपहृत विमान में सवार हैं । इसी परिवार की रेखा भोजवानी तैश में कहती हैं कि जब एक मंत्राी की पुत्राी को छुड़ाने के लिए उग्रवादियों को छोड़ा जा सकता है,तो डेढ़ सौ से भी ज्यादा लोगों की जान की खातिर यह सौदा क्यों नहीं किया जाता ।

(दैनिक भास्कर, भोपाल, 28–12–1999)

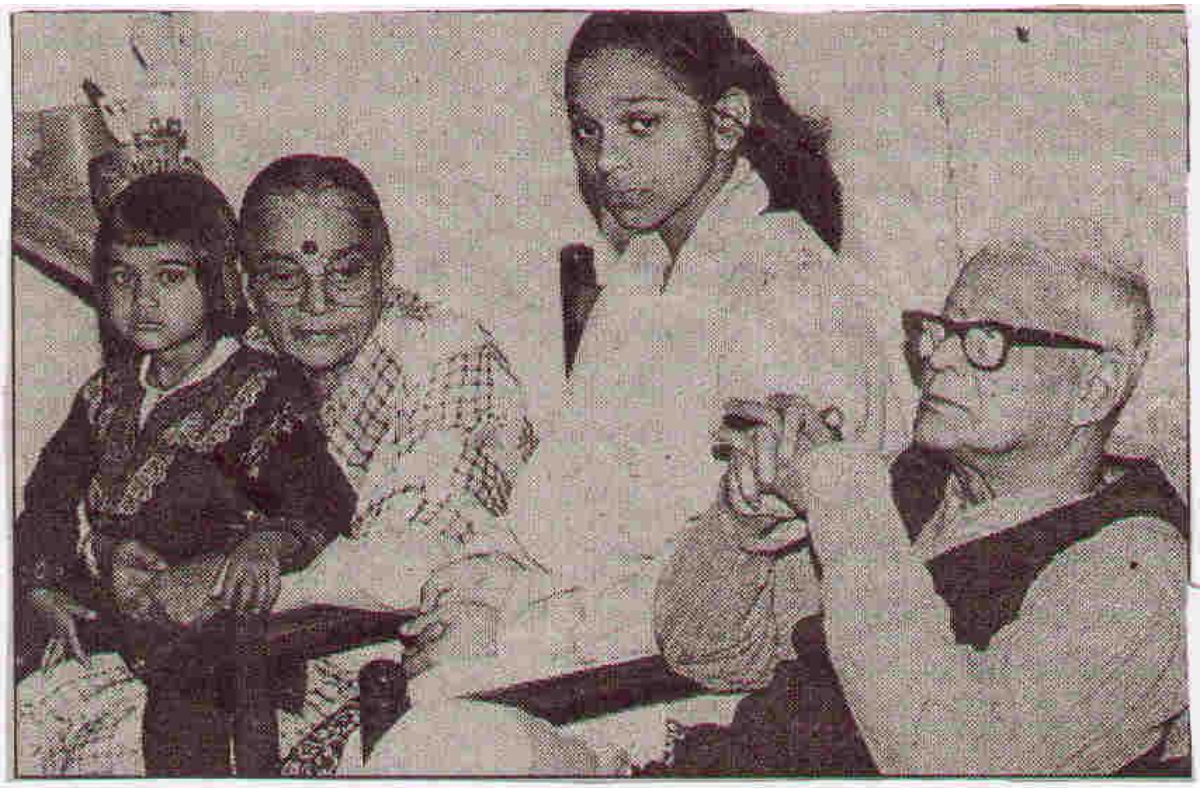

घर पर प्रतिक्षारत माताजी, पिताजी, जोयिता एवं शोमिता ।

मामाजी

(हमारे मामा–मामी ने अपहरण के दौरान हमारे घर में रह कर हमारे वृद्ध माता–पिता का मनोबल बनाये रखने के साथ –साथ पूरे घर को भी संभाले रखा)

इन्डियन एयर लाईन्स विमान 814 के अपहरण में फॅसे हुए यात्रियों में मेरी भान्जी सुचित्राा एवं दामाद अजय जिन आठ दिनों तक अनिश्चितता की भयावह परिस्थितियों से गुजर रहे थे ,उस अवधि के हर क्षण मेरे मन में तरह–तरह की आशंकाएँ ऑखों के सामने उत्पन्न होकर मेरे मन को असहाय और बेचैन कर रहीं थीं ।

यदि भारत सरकार किसी कारणवश बन्धक यात्रियों को छुड़ाने में विफल हुई तो भट्टाचार्य परिवार के दो छोटी –छोटी मासूम बच्चियों तथा सुचित्रा के वृद्ध माता–पिता जो इसी परिवार के साथ रहते हैं ,इनका क्या होगा ? चार एवं पन्द्रह वर्ष की बच्चियों का जीते जी भविष्य अन्धकार में डूब जावेगा तथा आजीवन मॉ–बाप के साये से वंचित होना पड़ेगा ।

अस्वस्थ्यता से घिरे सुचित्राा के माता–पिता क्या इस हादसे से अपने आप को उबार पाऐंगे ? चार वर्ष की बेसुध अबोध बच्ची को प्रतिदिन जब मैं देखता था तो यह सोचकर कि इसे माँ–बाप का प्यार –दुलार आगे भी मिल पायेगा या नहीं ,मेरा रोम–रोम काँप उठता था ।

उस पल को आज भी मैं भुला नहीं पाता जब आतंकवादियों ने उनकी मांग को निर्धारित समय सीमा के अन्दर भारत सरकार द्वारा न मानने की दशा में विमान को सारे बन्धकों के साथ उड़ा देने की धमकी दी थी ; उस क्षण समस्त बन्धकों की रक्षा एवं भट्टाचार्य परिवार की दोनों मासूम बच्चियों की मंगल कामना हेतु अनायास मेरे पग माथा टेकने हेतु उस शिव मन्दिर की और दौड़ पड़े जहां पहले से मंदिर के बिल्कुल पास आकाश गंगा कालोनी में रहते हुए कभी भी दर्शनार्थ मैं नहीं गया ।

मीडिया में

अपहरण से वापस अपने घर आने पर ज्ञात हुआ कि अपहरण की घटना की मीडिया में बहुत अधिक चर्चा हुई । समाचार पत्रा ,रेडियो और विशेष रूप से दूरदर्शन द्वारा पूरे घटनाक्रम को प्रथम दिन से ही अपने समाचारों में सुर्खियों में रखा गया । दूरदर्शन में घटना को विशेष स्थान मिला और लगातार सात दिन दूरदर्शन पर सभी चैनलों में विशेष रूप से स्टार चैनल पर विमान अपहरण ही छाया रहा ।

जहां एक ओर हम विमान में बैठकर कभी–कभी यह सोचते थे कि पता नहीं हमारे घर वालों को हमारे अपहरण ,हमारी हालत और हम कहां हैं–इनकी जानकारी होगी या नहीं ,वहीं दूसरी और हमारे तथा सभी बन्धकों के रिश्तेदार और परिचित ,बल्कि पूरा देश टकटकी लगाकर दूरदर्शन के सामने बैठा था । हमारे कुछ रिश्तेदारों और मित्रों ने कहा –''हम तो बस तुम लोगों को टी वी पर देखने का इन्तजार कर रहे थे और जब 31–12–99 को दिल्ली में रेस्क्यू विमान से तुम लोगों को बाहर निकलते देखा तो राहत मिली ।''

सात दिन तक मीडिया ने अपहरण से संबंधित सभी प्रकार की खबर दी ,परन्तु ऐसा लगा कि जिस प्रकार हमें अन्दर से बाहर होने वाली गतिविधियों की कुछ जानकारी नहीं मिल पा रही थी ,उसी प्रकार मीडिया को भी अन्दर होने वाली गतिविधियों की जानकारी सही प्रकार से नहीं मिल पा रही थी । मात्रा विमान की तस्वीर दिखा कर विभिन्न प्रकार की कल्पनाएं की जा रही थीं तथा विमान के आसपास कुछ भी गतिविधि दिखाई देती भी तो उसी के आधार पर कुछ अन्दाजा लगाकर एक समाचार तैयार किया जा रहा था ।

समाचार पत्रों ,पत्रिकाओं एवं इन्टरनेट पर प्राप्त समाचारों का विश्लेषण कर हमने उस समय के सभी प्रकाशित समाचारों को तीन भागों में विभक्त किया है –

- वे समाचार जो विमान के अन्दर के घटनाक्रम से भिन्न थे ।
- वे समाचार जिनका प्रभाव विमान के अन्दर के घटनाक्रम से परिलक्षित हो रहे थे ।
- वे समाचार जिनके द्वारा हमें ऐसी नई जानकारी मिली जो विमान में घटित हुआ परन्तु हमें पता नहीं चला पाया था।

समाचार जो विमान के अन्दर के घटनाक्रम से भिन्न थे

- दिनांक 25–12–99 के सामाचार पत्राों से लोगों को यह ज्ञात नहीं हो सका कि विमान दुबई के बाद कहां गया और उसका अन्तिम पड़ाव क्या था ? कंधार में प्रातः लगभग 8.30 बजे विमान उतरने के एक घंटे के अतंराल से दूरदर्शन चैनलों द्वारा यह जानकारी टेलीकास्ट की गई । इस बात से विमान पायलट का यह अभिमत प्रमाणित होता था कि जैसे ही विमान आई सी 814 का अपहरण हुआ ,उसके पीछे एक और विमान लगा देना था,जिससे अपहृत विमान की पूरी जानकारी संबंधित संस्थाओं को और देश को मिलती रहती । विमान के अंदर अधिकांश यात्रियों को तीन दिन बाद यह ज्ञात हुआ कि विमान कंधार अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर खड़ा था । उड़ान हेतु उपयोग के लिए इस हवाई अड्डे पर संयुक्त राष्ट्र द्वारा प्रतिबंध लगाया गया है ।

- दिनांक 25–12–99 तक इस बात की पुष्टि स्थानीय समाचार पत्राों में नहीं हो पाई थी कि हम लोग अपहृत विमान में हैं । समाचार पत्राों द्वारा मात्रा अनुमान लगाया जा रहा था कि संभवतः हम विमान में थे; साथ में ये शब्द जोडे गये थे कि –' इस बात की पुष्टि नहीं हो सकी'।

- मीडिया द्वारा यह जानकारी दी गई कि अपहरणकर्ताओं द्वारा चार यात्रियों की हत्या कर दी गई थी – जबकि केवल एक यात्री (रूपीन कत्याल) की हत्या हुई थी और उसका शव दुबई में अपहरणकर्ताओं द्वारा विमान के बाहर कर दिया गया था ।

- अपहरणकर्ताओं की संख्या के बारे में भी समाचार पत्रों में अंदाजा लगाया गया, चार–पांच–सात आदि। अपुष्ट स्त्रोतों के आधार पर उनके नाम भी छापे गये जो कि सही नहीं थे । कुछ समाचारों के अनुसार –एक अफगानी ,एक नेपाली और तीन कश्मीरी अपहरणकर्ता थे । दिनांक 31–12–99 तक अपहरकर्ताओं में एक नेपाली होने का समाचार गरम रहा । वास्तव में अपहृत विमान में पांच अपहरणकर्ता थे ,जिनमें से कोई भी नेपाली या अफगानी नहीं था ।

- समाचार पत्रों के अनुसार भारतीय बचाव दल 25–12–99 को कंधार रवाना हो चुके थे ,जबकि अपहरणकर्ताओं ,पायलट और फ्लाइट इंजीनियर के अनुसार भारतीय डेलीगेशन दिनांक 27–12–99 की अपरान्ह में कंधार पहुॅचा था । समाचार पत्रों के अनुसार यू.एन.ओ. की टीम 25–12–99 को कंधार पहुॅच चुकी थी ,परन्तु यू.एन.ओ. टीम भी 26–12–99 को वहां पहुॅची थी ।

- कुछ समाचार पत्रों के अनुसार अपहरणकर्ताओं ने पगड़ी पहन रखी थी । संभवतः दुबई से मुक्त किये गये यात्रियों ने मंकी कैप को पगड़ी बताया, या फिर समाचार पत्रों ने गलत तरीके से छापा । सभी पांच अपहरणकर्ता मंकी कैप पहने हुए थे ।

- अपहरणकर्ताओं के पास क्या –क्या अस्त्रा–शस्त्रा थे, – इस बारे में भी समाचार पत्रों में अलग–अलग तरह के समाचार छपे थे । कुछ समाचार दुबई में उतरे यत्रियों के हवाले से दिया गया और कुछ समाचार संभवतः अटकलपूर्ण अनुमान था । वास्तव में अपहरणकर्ताओं के पास अपहरण के समय दो पिस्तौल या रिवाल्वर (चूॅकि विमान में अधेंरा था इसलिए यह पुष्ट रूप से कहना कठिन था कि पिस्तौल थे या रिवाल्वर) दो हैण्ड ग्रेनेड तथा एक चाकू था । कंधार में उनमें से प्रत्येक के पास एक हैण्ड ग्रेनेड और एक पिस्तौल था।

- कंधार हवाई पट्टन के अधिकारी के हवाले से यह समाचार छपा कि वे अपहरणकर्ताओं को गिरफ्तार करने की कोशिश कर रहे हैं । कंधार में ऐसी कोई घटना नहीं घटी जिससे यह लगे कि कंधार हवाई अड्डे के अधिकारियों द्वारा अपहरणकर्ताओं को गिरफ्तार करने के प्रयास किये जा रहे हैं ।

- तालिबान हवाई पट्टन के किसी अधिकारी के हवाले से यह समाचार छपा कि बन्धकों के रात्रि भोज का इन्तजाम तालिबान प्रशासन द्वारा किया गया है । घर पर और मित्रों के माध्यम से भी यह जानकारी मिली कि दूरदर्शन पर भी यह जानकारी दी गई थी कि बन्धकों के खाने का पूरा इन्तज़ाम है । साथ ही दवा, कम्बल आदि सभी कुछ बन्धकों को उपलब्ध कराये जा रहे हैं । बन्धकों के रिश्तेदारों को ऐसा महसूस हो रहा था कि बन्धकों को किसी प्रकार की कोई तकलीफ़ नहीं है । परन्तु वास्तविकता यह है कि विमान में पानी ,भोजन सभी कुछ अनिश्चित थे–जब और जो भी भोजन स्थानीय प्रशासन द्वारा भेजा जाता था –बन्धकों को वितरित कर दिया जाता था । जो भी सीमित संख्या में कम्बल विमान में उपलब्ध थे ,उन्हें ही यात्री उपयोग कर रहे थे । चूॅकि कम्बलों की संख्या सीमित थी , इसलिए जिन्हें शुरू में ही कम्बल मिल गये ,वे ही कम्बलों का उपयोग कर रहे थे । हमारे पास कोई कम्बल नहीं था । हमें अपने कोट और जैकेट से ठण्ड का मुकाबला करना पड़ रहा था । दो रात अधिक ठण्ड होने के कारण बैठ कर और करवट बदल कर ही बिताना पड़ा । हर रात यही लगता था कि शायद आज की रात की ठण्ड आखरी ठण्डी

रात हो । विमान की दवाएं भी खत्म हो गई थी । एक बार बाहर से दवाईयां मंगाकर दी गई थीं परन्तु शायद जो दवाएं यात्रियों को जरूरी थीं वे दवाएं नहीं मिली थीं ।

- दो यात्रियों के हाथ–पैर बांध दिये हैं – ' इन्हें फेंक देंगे–मार देंगे '। संभवतः अपहरणकर्ताओं द्वारा ऐसी जानकारी दी गई होगी और इसे मीडिया ने प्रसारित किया । परन्तु विमान में इस प्रकार की कोई घटना घटित नहीं हुई । अपहरणकर्ता बड़े आराम से यात्रियों को डराते–धमकाते हुए भारतीय सरकार को निर्णय लेने के लिए पूरा समय दे रहे थे । एक यात्री ने 29–12–99 को बर्गर द्वारा चीफ को यह कहते सुना था कि –अब इन्हें 'टाईम लिमिट' दे देते हैं । चिफ ने कहा ''इसकी अभी जरूरत नहीं है –सब ठीक चल रहा है''। स्पष्ट था कि अपहरणकर्ता अपने मकसद को पूरा करने के लिए बिल्कुल ठण्डे दिमाग से काम कर रहे थे ।

- दिनांक 27–12–99 को दो भारतीय विमानों के कंधार पंहुचने का समाचार प्रकाशित किया गया । विमान में प्राप्त जानकारी के अनुसार भारतीय डेलीगेशन को लेकर एक विमान 27–12–99 के सांयकाल पहँचा था। दूसरा विमान 31–12–99 को पहुँचा था ,जिससे विदेश मंत्री श्री जसवंत सिंह कंधार पहुँचे । कंधार में कुल दो ही भारतीय विमान पहुँचे थे । यू.एन.ओ. के दो विमान कंधार हवाई पट्टन पर दिखे थे ।

➢ अपहरणकर्ताओं व्दारा यात्रिओं को रनवे (टारमेक) पर टहलने की छूट दिये जाने का समाचार छपा। न सिर्फ यात्री पूरे समय विमान के अंदर ही बैठे रहें, बल्कि अपहरणकर्ता लगातार चौकसी करते रहे। सभवतः फ्लाइट इंजीनियर को छोड़कर किसी भी यात्री को विमान के बाहर निकलने नहीं दिया गया। दिनांक 30/12/99 को एक विमान यात्री को एयरपोर्ट के अस्पताल ले जाया गया था, जो कि लगभग एक घंटे के अंदर लौट आया था। विमान के अंदर भी उन्हीं को टहलने की इजाजत दी जाती थी जिनके लिए चिकित्सक सिफ़ारिश करते थे कि डायबिटीज के रोगियों को चलने फिरने दिया जावे। हाँ, 30/12/ के शाम के बाद जब बंधकों के बदले आंतकवादियों को छोड़ने का समझौता हो गया था तो, विमान के अंदर चलने फिरने पर पाबंदी थोड़ी कम हो गई थी, फिर भी यदि ज्यादा लोग एक साथ खड़े दिखाई देते थे तो अपहरणकर्ता सख्ती से पेश आने लगते थे।

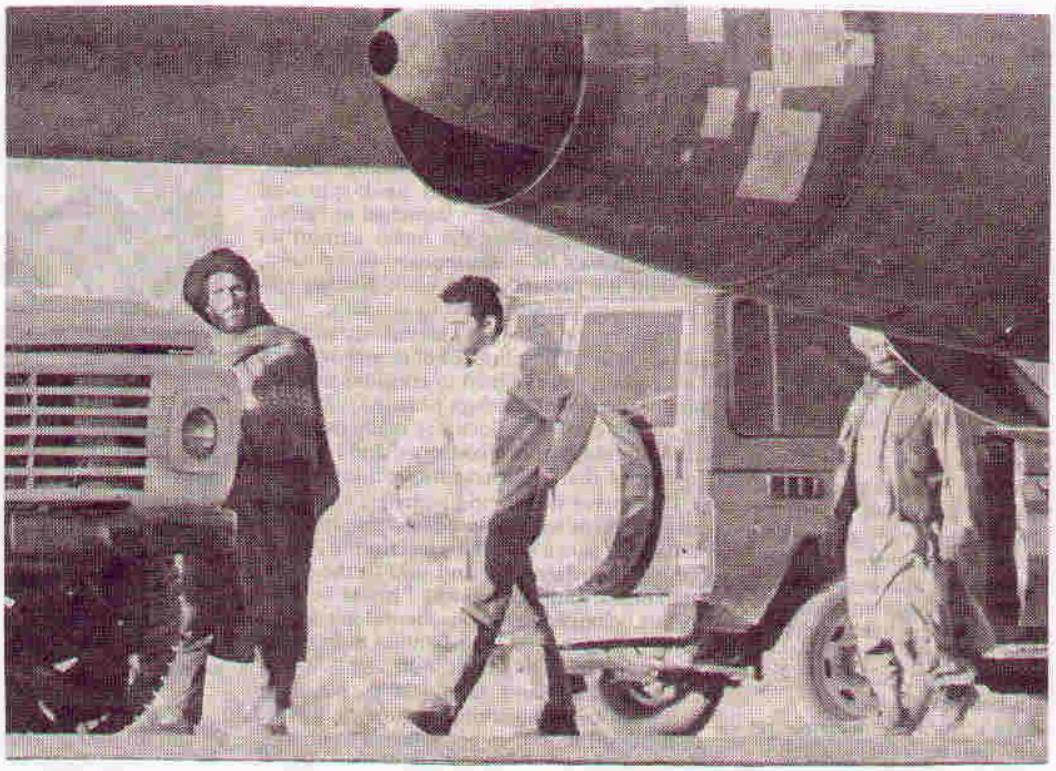

एक बन्धक को कंधार एयरपोर्ट स्थित अस्पताल ले जाते हुए अफगानी कर्मचारी । लगभग एक घण्टे बाद बंधक को वापस विमान में ले आया गया । *(हिन्दु)*

➢ अपहरणकर्ता को भारतीय डेलीगेशन के साथ आमने सामने बातचीत होने की खबर विमान के अंदर की घटनक्रम से मेल नहीं खा रहा था। चीफ को छोडकर सभी अपहरणकर्ता अधिकतर समय यात्रिओं के समक्ष ही रहते थे और जब भी कॉकपिट मे जाते थे तो थोड़े समय बाद ही वापस आ जाते थें । बाहर से विमान के किसी के आने या अपहरणकर्ता व्दारा डेलीगेशन के साथ आमने सामने बातचीत होने के कोई भी संकेत नहीं मिले। ऐसा लग रहा था जैसे बातचीत वायरलेस पर ही या तो सीधे या फिर ए.टी.सी. (एयर ट्राफिक कंट्रोल) के माध्यम से हो रही थी।

- शौचालय के नियमित सफाई के समाचार मीडिया में प्रकाशित हुए। वास्तविकता यह है कि मात्रा 29/12 को ही टायलेट की सफाई हुई, और उस सफाई का भी कोई विशेष महत्व नही था क्योंकि टॉयलेटस पूरी तरह से बंद (चोक) हो चुके थें । सफाई में केवल बाहर पड़े हुए कागज़ों को हटाया गया और एक घंटे बाद टायलेटस पुनः अपनी पुरानी स्थिति में आ गये। दिनांक 31/12 के अपरान्ह में पुनः सफाई करने वाले विमान के अंदर आये थें परंतु सफाई कार्य पूरा होने के पहले ही उन्हे विमान के बाहर भेज दिया गया क्योंकि तब तक अपहरणकर्ताओं के विमान छोड़कर जाने का समय हो गया था।

- एक समाचार यह भी छपा था विमान के अंदर बैठक व्यवस्था में सीटों की एक पंक्ती खाली छोड़ते हुए दूसरे में बंधको को बिठाया था। इस प्रकार की बैठक व्यवस्था विमान में संभव नही था, क्योंकि इसके लिए 180 बंधको के लिए लगभग 40 से अधिक सीटों की पंक्तियों की जरुरत पड़ती जबकि विमान के एकॉनामी क्लास के मात्रा 22 ही पंक्तियां थीं। दूसरी ओर अपहरणकर्ताओं का यही प्रयास रहता था कि बंधकों को एक ही साथ बैठाकर रखे और पीछे की सीट्स खाली रखते थे।

- दिनांक 30/12/99 के समाचार पत्राों मे विमान में ताश, शतरंज खेलने और संगीत सुनने तथा अच्छे प्रकार का खाना पीना और बंधकों के नींद अच्छी आने की खबरे प्रसारित की गई। रेडीफ वेबसाइट ने भी कंधार हवाई पट्टन के एक वरिष्ठ अधिकारी मोहम्मद खीनर के हवाले से यह समाचार दिया की यात्राी अखबार पढ़ रहे थे ,खिड़कियां खुली हुई थीं ,लोग ताश और शतरंज खेल रहे थे और आपस में बातें भी कर रहे थे। विमान के अंदर दिनांक 29/12 तक इस प्रकार की कोई भी स्थिति नहीं थी। जिन यात्रियों के पास ताश था, वे अपने बच्चों को ताश से दिल बहला रहे थे। एक विमान परिचारिका भी बीच–बीच में बच्चों के साथ ताश खेलकर उनका दिल बहला रही थी। शतरंज खेलते हुए कोई भी दिखाई नहीं दिया । संभव है कि कोई यात्राी पुराना अखबार पढ़ रहा हो । खिड़कियों के शटर 31/12 को ही खोले गये थे । विमान में किसी प्रकार के संगीत की भी आवाज नहीं आयी। कुछ यात्राी निश्चित ही हनुमान चालीसा पढ़ रहे थे। खाना पीना भी अनिश्चित ही था– जो भी मिल जाता था यात्राी उसे खा रहे थे। अंतिम दो दिनों में कुछ विशेष खानों के पैकेटस वितरित किये थे। एक बार यह बताया गया कि खाना भारतीय डेलीगेशन की ओर से था और दूसरी बार खाना यू.एन.ओ की ओर से । नींद के लिए कोई निश्चित समय नही था। क्योंकि वहां दिन रात का एहसास नहीं हो पा रहा था। रात्राी को अंदर की रोशनी कम कर देते थे जिससे यह मान लिया जाता था कि रात हो गई है। घबराहट में, तनाव में, या निराशा में लोग आंख बंदकर भी पड़े रहते थे, उसे नींद कहें या निस्तेज (ट्रांस) की स्थिति – यह वर्णन करना कठिन है।

- समाचारों में वर्णित विमान मरम्मत के लिए अफगान विमान अधिकारी के विमान के अंदर आने की कोई जानकारी एकॉनामी क्लास में नहीं मिल पाई थी। विमान में एकानामी क्लास के अंदर कोई भी अफ़गानी अधिकारी नहीं आये थे । संभव है अधिकारी कॉकपिट में आया हो।

- ताजी हवा के लिए अपहरणकर्ताओं व्दारा पिछले दरवाले खोले जाने की खबर आंशिक रुप से सही है। 29 तारीख से जब टायलेट्स की स्थिति खराब हो गयी थी और अधिक बदबू आ रही थी, तब अपहरणकर्ताओं व्दारा बीच बीच में आधे–एक घंटे के लिए पिछला दरवाजा खोला जाता था। और अपहरणकर्ता निरंतर वहीं खुले दरवाजे के सामने खड़े रहते थे। यात्रियों को दरवाजे के पास खड़े नहीं होने देते थे और फिर अचानक ही दरवाजे को बंद कर दिया जाता था।

- अंतरराष्ट्रीय एंजेंसी के हवाले से यह समाचार प्रसारित किया गया कि तालीबान के 25 कमांडो बंधकों को छुडाने कंधार हवाई अड्डे पहुच चुके हैं जबकि तालीबान व्दारा यह बताया गया कि यह अभियान सुरक्षा का हिस्सा है। विमान में कभी ऐसा नहीं लगा कि हवाई जहाज पर हमला कर हमें छुड़ाने का प्रयास किया जा रहा हो। हम निश्चित ही ऐसे किसी प्रयास की प्रतीक्षा करते रहे। विमान के बाहर चारों ओर अफ़गान सैनिक राकेट–लॉचंर के साथ दिखाई दे रहे थे। इनकी संख्या लगभग 20 रही होगी।

- अपहरणकर्ताओं व्दारा विमान में अपने एक साथी के हत्या का समाचार प्रकाशित हुआ और बाद में फिर इसका खंडन भी किया गया। वास्तव में रुपीन कत्याल के हत्या के अलावा कोई हत्या नहीं हुई।

- 'यात्राी एकदम चलने फिरने लायक नहीं रह गये थे'। यह समाचार किसी भी यात्राी के परिप्रेक्ष्य में सही नहीं था क्योंकि सभी यात्राी अपहृत विमान से निकल कर चल कर नीचे आये और फिर दूसरे विमान में गये। कुछ वृद्ध यात्राी काफी थके हुए थे परंतु वे भी चल कर नीचे आये। संभवतः अपहरण से मुक्ति की भावना ने सभी में नई स्फूर्ति पैदा कर दी थी।

- अपहरणकर्ताओं के पास ए–के–47 रायफल दिखाई देने के समाचार की पुष्टि विमान के अंदर के घटना क्रम से नही होती है। विमान में पिस्तौल और हैंड ग्रेनेड के अलावा और कोई हथियार नही दिखा। हाँ, एक बार बर्गर ने एक बार यह अवश्य कहा था कि – ' हमारे पास ऐसे हथियार है जिन्हें आप देखकर ही मर जायेंगें हमें चलाने की जरुरत नही पडेगी'।

- अपहरणकर्ताओं के स्वंय बुरी तरह डरे रहने का समाचार विमान के अंदर के परिस्थितियों से मेल नही खा रहा था। कंधार मे अपहरणकर्ता काफी आश्वस्त और तनावमुक्त दिख रहे थे एंव अपने मकसद और अंजाम के प्रति पूरी तरह आश्वस्त थे और समय व्यतीत कर रहे थे।

- विमान में पति पत्नि को अलग बैठाने और अहपरणकर्ताओं व्दारा पुरुषों को भोजन न देने का समाचार भी सही नहीं था। शुरु से महिलाओं और बच्चों को एक साथ और पति पत्निओं को एक साथ ही बैठाया गया था। अंत तक यही बैठक व्यवस्था रही। खाने पीने के मामले में भी महिला और पुरुष के बीच कोई भेद–भाव दिखाई नही दिया । हाँ, बच्चों को निश्चित ही थोड़ी प्राथमिकता दी जा रही थी, फल और कोल्ड ड्रिन्क्स के मामले में।

- केन्द्रीय मंत्राी सुश्री ममता बनर्जी के हवाले से समाचार पत्रा में यह समाचार छपा था कि अपहरणकर्ता चार–पांच भाषा बोलते थे, – बंगाली भी । अपहरणकर्ता अधिकतर उर्दू मिश्रित हिन्दी बोल रहे थे । बर्गर कभी–2 विदेशी यात्रियों के साथ थोड़ी अंग्रेजी में बात कर लेते थे । बंगाली बोलते हुए कभी भी सुनाई नहीं पड़े । हां , एक बार बर्गर शैबाल कर नामक बंगाली यात्राी से पूछ रहे थे –''आई लव यू'' को बंगला में क्या कहते हैं ? और शैबाल ने उत्तर दिया था – 'आमि तोमाके भालो बाशी'। इसके अलावा हमारी जानकारी में अन्य किसी भाषा में अपहरणकर्ताओं ने कभी बात नहीं की ।

- विमान में यात्राा कर रहे डा. अनिता जोशी के हवाले से यह समाचार प्रसारित किया गया कि अपहरणकर्ताओं को शर्मिंदगी का एहसास था । इस अभिव्यक्ति का क्या आधार हो सकता हैं ? यह समझना कठिन है , क्योंकि अपहरणकर्ताओं द्वारा यह स्पष्ट कर दिया गया था कि वे एक मकसद के लिए यह काम कर रहे हैं । उनकी बातों से यह लगा कि संभवतः उनके लिए यह एक ज़ेहाद था । उन्होंने कई बार यह भी कहा था कि – ' हमें मालूम है कि आप लोग निर्दोष हैं , परन्तु हमारे जिन साथियों के साथ अत्याचार हुए हैं और हमारे जो साथी जेल में हैं – वे भी

निर्दोष हैं ''। उनके किसी भी बातों से यह नहीं लगा कि उन्हें थोड़ी भी शर्मिन्दगी या पश्चाताप हो ।

- रेडीफ वेबसाइट के अनुसार सात–सदस्यीय भारतीय टीम को अपहरणकर्ताओं द्वारा बन्धकों के साथ मिलाया गया । यह सही प्रतीत नहीं होता है क्योंकि न तो बन्धकों को किसी भी बाहरी व्यक्ति से मिलाया गया और न ही भारतीय डेलीगेशन के किसी व्यक्ति के अन्दर आने की कोई जानकारी हमें मिली । हाँ, 29–12–99 को अपहरणकर्ताओं द्वारा ऐसा हमें बताया गया था कि कोई व्यक्ति विमान के अन्दर आयेगा परन्तु उनसे बन्धकों को कोई बात नहीं करना है । अंततः कोई नहीं आया ।

समाचार जिनका प्रभाव विमान के अन्दर के घटनाक्रम से परिलक्षित हो रहे थे

- 'अपहरणकर्ताओं ने कंधार छोड़ने से इंकार किया' ,यह समाचार था। अपहरणकर्ता कंधार हवाई पट्टन पर क़ाफी तनावमुक्त और संतुष्ट प्रतीत हो रहे थे । ऐसी परिस्थितियों में जिस प्रकार के तनाव की अपहरणकर्ताओं में अपेक्षा की जा सकती है –उस प्रकार का कोई तनाव अपहरणकर्ताओं के चेहरे अथवा व्यवहार से परिलक्षित नहीं हो रहा था । ऐसा प्रतीत हो रहा था कि कंधार उनके लिए क़ाफी उपयुक्त एवं अनुकूल स्थल था ।

- दिनांक 26–12–99 के समाचार पत्राों में अपहृत विमान को अफगान सेना द्वारा घेरने का समाचार था।दिनांक 25–12–99 एवं 26–12–99 को ऐसा कुछ पता नहीं चला । दिनांक 27–12–99 के रात्रि में अपहरणकर्ताओं ने चहल कदमी करते हुए यात्रियों के आंखों में पट्टी बंधवाई और सर नीचे करके बैठे रहने के आदेश दिये गये । करीब एक घण्टे तक यह अभियान चला । दूसरे दिन अपहरणकर्ताओं ने बताया कि उन्हें लगा था कि अफगानी सेना अस्त्रा–शस्त्रा, तोप ,राकेट –लॉन्चर आदि के साथ उनके विमान की तरफ बढ़ रहे हैं। शायद इसी रात अफगानी सेना ने विमान को घेरा। किस लिए ? यह एक प्रश्न चिन्ह हैं ।

- भारत के प्रधान मंत्राी श्री अटल बिहारी बाजपेयी द्वारा यह कहा गया कि –आतंकियों के आगे झुकेंगे नहीं ? प्रधान मंत्राी द्वारा आतंकवादियों के साथ समझौते से इंकार की खबर भी छपी । दिनांक 28–12–99 को अपहरणकर्ताओं द्वारा यात्रियों को जान से मारने की धमकी दी गई । अपहरणकर्ताओं ने उग्र रूप धारण किया । बाद में पायलट ने भी बताया कि प्रधान मंत्राी ने इस प्रकार के वक्तव्य दिये । इससे यह स्पष्ट हुआ कि दूरदर्शन पर और समाचार पत्रों में जो खबरे आ रहीं थीं ,उनकी जानकारी अपहरणकर्ताओं को विमान में मिल रही थी और उनका सीधा असर उनके व्यवहार में परिलक्षित हो रहा था ।

- रक्षा विशेषज्ञों के अभिमत के आधार पर यह समाचार छपा कि अपहरणकर्ताओं की मांग नहीं माननी चाहिए । कुछ और समुदाय ने भी यही राय दी । बीच–बीच में अपहरणकर्ताओं द्वारा उत्तेजना एवं तनावपूर्ण भाव में यह कहा जाता था कि ''आपकी सरकार को आपकी कोई फिक्र नहीं है ,वे समझते हैं कि हम आपको मार नहीं सकते हैं '–और फिर वही आदेश – ' आंखे बन्द ,सीधे बैठे ,हिलें नहीं ,सामने देखें आदि–आदि ''। इसका तात्पर्य यह है कि भारत में समाचार पत्राों ,टीवी और रेडियो पर प्रसारित खबरों की जानकारी निरन्तर अपहरणकर्ताओं को मिल रही थी ।

- यह समाचार छपा था कि तालिबान शासन–प्रशासन द्वारा अपहृत विमान पर धावा बोला गया और अपहरणकर्ताओं को यह चेतावनी दी गई कि यदि अपहरणकर्ताओं द्वारा यात्रियों की हत्या की जाती है तो तालिबान द्वारा विमान पर हमला कर दिया जावेगा । दिनांक 27–12–99 की रात्रि

को अपहरणकर्ता काफी सक्रिय और विचलित होते दिखे । आगे पीछे चहल कदमी ,खिड़कियों से बाहर देखना , आपस में फुसफुसाहट से बातें करना आदि गतिविधियां लगभग घण्टे भर चलती रहीं । साथ ही साथ यात्रियों को आंखों में पट्टी बांध कर ,सर नीचे कर बैठने के आदेश भी दिये गये । दूसरे दिन अपहरणकर्ताओं द्वारा बताया गया कि उन्हें बाहर से हमला होने का खतरा लग रहा था और वे हमले का सामना करने की तैयारी कर रहे थे । वास्तव में क्या हुआ और इसके पीछे क्या उद्देश्य था – हमारे लिए यह एक प्रश्न चिन्ह ही बना है ।

- अपहृत विमान में खराबी ,रिसाव और तालिबान हवाई प्राधिकरण द्वारा ईंधन उपलब्ध कराने का समाचार छपा था । अपहरणकर्ताओं द्वारा कई बार फ्लाइट इंजीनियर को कॉकपिट में ले जाया गया था । 72 घण्टे बाद विमान की बिजली प्रणाली ने कार्य करना बन्द कर दिया था । लगभग सात–आठ घण्टे बाद ठीक हुआ था । इसे ठीक करने में भारतीय डेलीगेशन के साथ आये विमान के इंजीनियर दल ने भी सहयोग किया था । ऐसा अपहरणकर्ताओं की बातों से पता चला ।

- भारत सरकार व्दारा दिनांक 29 दिसम्बर को अपहरणकर्ताओं के मांगे अस्वीकार करने के निर्णय के खबर का असर दिनांक 30/12 को प्रातः ही विमान में परिलक्षित हुआ । प्रातः लगभग 9.00 बजे बर्गर ने सबको जगाकर यह चेतावनी स्पष्ट रुप से दे दी कि सभी यात्रीयों को मार दिया जावेगा और उसके बाद लगभग 2 बजे तक एक सन्नाटा और मौत का खौफ़ विमान में तब तक छाया रहा जब तक कि बर्गर व्दारा पुनः यह ऐलान न किया गया कि – 'बातचीत पूरी हो गई और इन्शाअल्लाह आप सभी अपने घर आज ही रात को लौट जायेगें '।

- अपहरणकर्ताओं व्दारा किसी तीसरे पक्ष से सलाह लेने की समाचार विमान से अपहरणकर्ताओं की गतिविधिओं से सही प्रतीत हो रहा था। एक आधुनिक मोबाइल फोन या वायरलेस अपहरणकर्ताओं के हाथ में–अधिकतर भोला के हाथ में–रहता था। जैसे ही उसमें बीप की आवाज आती वह दौड़कर कॉकपिट के अंदर चला जाता था। इनके पास सेटेलाइट फोन ,लैपटॉप आदि आधुनिक संचार उपकरण होने के समाचार भी प्रकाशित हुए। ऐसा लग रहा था कि वे मोबाइल/सेल फोन व्दारा बाहर से सम्पर्क बनाये हुये थे।

- अफगानिस्तान के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के समन्वयक एरीक डे मूल ने अपहरणकर्ताओं के संबंध में जो जानकारियां थीं उनकी पुष्टि अपहरणर्कताओं के व्यवहार से हो रहीं थी । उन्होंने बताया कि – ''अपहरणकर्ता पूरी तरह से प्रशिक्षित , हर तरह से तैयार हैं । वे दृढ़ निश्चय और पक्के इरादे वाले समर्पित लोग हैं तथा पूरी तरह से अपने मिशन के प्रति कटिबद्ध हैं । इनकी बातों को और इनकी धमकियों को सामान्य रूप से लेना या उनपर कार्यवाही नहीं करना उचित हीं होगा'' । विमान में अपहरणकर्ताओं के व्यवहार में उनके पक्के इरादे का पूरा आभास मिल रहा था ।

- अन्तरराष्ट्रीय समाचार एजेंसी के हवाले से यह समाचार प्रकाशित किया गया कि अपहरणकर्ता दृढ़ संकल्प वाले अभिप्रेरित भृत सैनिक (मरसीनरीज) है ,जिन्हें अपहरण की इस सुनियोजित योजना को क्रियान्वित करने के लिए आधुनिक हथियारों और उपकरणों के साथ किसी के द्वारा नियुक्त किया गया है । विमान के अपहरणकर्ताओं के व्यवहार से कई बार यह लगता था कि वे न सिर्फ पूरी तरह से प्रशिक्षित हैं बल्कि उनका हर कदम (एक्शन) सोची– समझी एवं पूर्वनियोजित है । वे हर कार्यवाही सोच–समझ कर ,पूछ–पूछ कर या निर्देशानुसार कर रहे हैं । वे केवल एक खास मकसद के लिए कार्य कर रहे हैं ,जिसके लिए उन्हें भेजा गया है –बाकि उन्हें किसी भी चीज से कोई मतलब नहीं है ।

- कुछ समाचारों में यह टिप्पणी भी की गई कि अपहरणकर्ताओं द्वारा समझौता वार्ता में अपनी सुरक्षा की कोई मांग नहीं की गई । सामान्यतया ऐसे प्रकरणों में समझौता वार्ता में अपहरणकर्ता एक शर्त

अपने सुरक्षित निकलने और आश्रय की मांग करते हैं । परन्तु इस घटना में अपहरणकर्ताओं द्वारा कभी भी अपनी सुरक्षा की कोई बात नहीं रखी गई । विमान में भी वे अपनी सुरक्षा के बारे में पूरी तरह से आश्वस्त दिखाई दे रहे थे ।

- भारतीय विमानन अधिकारी अपहृत विमान के यात्रिओं को रेस्क्यू विमान से 31–12–99 को दिल्ली लाना चाहते थे–जिसका एक कारण यह भी था कि कंधार एयरपोर्ट पर 'वाय–2 के' कम्प्यूटर विवाद के संबंध में कोई कार्यवाही या व्यवस्था नहीं की गई थी । 'वाय–2 क' के संबंध में विमान के कुछ बन्धक यात्रिओं ने भी पायलट से पूछताछ की थी–''यदि विमान को आधी रात को बारह बजे के आसपास उड़ाना पड़ता है और यदि आकाश में ही घड़ी बारह बजे का समय दर्शाती है तो विमान के कम्प्यूटर प्रणाली में कोई व्यवधान तो नहीं आयेगा ?'' पायलट ने जबाव दिया था कि –''ऐसी कोई भी समस्या नहीं आयेगी ,मैं आप सभी को सही सलामत दिल्ली पहुँचाऊँगा ।''

समाचार जिनके माध्यम से हमें जानकारी मिली

- विमान के अन्दर अपहृत यात्रियों की वास्तविक संख्या की जानकारी समाचार पत्राों से मिली । विमान में कुल 178 यात्राी और 11 क्रू सदस्य यात्राा कर रहे थे । यात्रियों में से 57 महिलायें थीं और 11 बच्चे थे। दुबई में 27 यात्रियों (10 महिलाओं एवं 14 बच्चों) को उतारा गया । साथ ही रूपीन कत्याल का शव दुबई में छोड़ा गया एवं एक यात्राी (डॉ0खुराना) को अस्वस्थ्य होने के कारण छोड़ा गया । इस प्रकार अपहृत विमान में 149 यात्राी और 11 क्रू सदस्य रह गये थे । केवल भोपाल से ही 16 यात्राी उस विमान में यात्राा कर रहे थे , अर्थात अपहृत यात्रियों में से 10.7ः यात्राी भोपाल से थे । यह निश्चित ही एक विशेष संयोग था ।

- मौलाना मसूद अजहर नामक जिस आतंकवादी को छुड़ाने के लिए अपहरणकर्ताओं ने विमान का अपहरण किया था , वह अपहरणकर्ताओं के चीफ का भाई था । अन्य अपहरणकर्ताओं के वास्तविक नामों की जानकारी भी समाचार पत्राों के माध्यम से मिली –
    - चीफ – इब्राहिम अथर
    - डाक्टर – शाहिद अख़्तर सईद (स्थानीय नाम –गुलशन इकबाल)
    - बर्गर – सनी अहमद काज़ी
    - भोला – मिस्त्राी जहूर इब्राहिम
    - शंकर – शाकिर (राजेश गोपाल वर्मा)

(छायाचित्र –22)

(इंडिया टुडे)

- दूरदर्शन पर कुछ यात्रियों के साक्षात्कार तथा समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ अपहरणकर्ताओं द्वारा कुछ यात्रियों (लगभग 5–7) को पीटा गया था । इन्हें शुरू में ही कॉकपिट में ले जाकर पीटा गया था । कुछ लोगों के सिरों को दीवाल पर ठोका था । इन यात्रियों में से सभी हट्टे–कट्टे और मजबूत दिखने वाले थे। संभवतः अपहरणकर्ताओं को इनसे लड़ाई या हमले का खतरा हो रहा था और इनकी पहले से ही पिटाई कर दी ताकि ये लड़ने या हमले की हिम्मत न कर सकें ।

- समाचार पत्रों से ज्ञात हुआ कि रूपीन कत्याल को इसलिए मारा कि उसने अपहरणकर्ताओं की बात नहीं सुनी । डॉक्टर को यह कहते सुना गया कि – ''वह बार–बार पट्टी खोल रहा था –इसलिए उसे फिट कर दिया ''। कंधार पहुँचने तक , विशेष रूप से अमृतसर और दुबई में अपहरणकर्ता चूँकि स्वंय व्यवस्थित (मजजसमद्ध नहीं हुए थे और तनाव में थे और ऐसी हालत में रूपीन कत्याल बार–बार पट्टी उतार कर अपने से अलग हुए पत्नी को देखने की कोशिश कर रहे थे कि ''वह ठीक–ठाक तो है न''?, इसलिए संभवतः अपहरणकर्ताओं ने उसे मार दिया । ऐसा बताते हैं कि रूपीन कत्याल को चाकू से मारा और उसे लगभग पच्चीस घाव किये । उसके बगल में बैठे यात्री ने चाकू घोंपने की आवाज सुनी और उसे यह कहते सुना –''पापा–पानी;पापा–पानी'' ।

- ' दिनांक 27–12–99 को अपहरणकर्ताओं द्वारा समय सीमा निर्धारित कर यह धमकी दी गई थी कि यदि 1.40 अपरान्ह तक उनकी मांगे नहीं मानी गई तो वे यात्रियों की हत्या कर देंगे और बाद में यह समय सीमा बढ़ाकर 4.40 कर दिया गया था'। विमान में अपहरणकर्ताओं के व्यवहार से यह पता नहीं चल सका था कि उन्होंने इस प्रकार की धमकी दी है । बल्कि बर्गर बार–बार सामान्य तरीके से यह जानकारी दे रहे थे कि भारतीय डेलीगेशन कंधार आने वाली है ,डेलीगेशन हिन्दुस्तान से रवाना हो चुकी है ,कंधार पहुॅचने वाली हैं आदि–आदि । हां ,यह जरूर कह रहे थे कि – यू.एन.ओ. और दूसरे कई देशों के डेलीगेशन यहां पहुॅच चुकी हैं परन्तु आपके सरकार को कोई फ़िक्र नहीं है ।

- वापस आकर ही अपहरणकर्ताओ के पूरी मांगों की विस्तृत जानकारी मीडिया मे मिल पाई। विमान अपहरणकर्ताओं व्दारा शुरु से केवल मौलाना मसूद को छोड़ने और बाद में तीन आंतकवादियों को छोड़ने की मांग की जानकारी दी गई थी। समझौता हो जाने के बाद डॉक्टर ने एक बार बताया था कि हम लोंगों ने 36 आंतकवादियों को छोड़ने की मांग रखी थी परंतु आप लोगों के लिए हम तीन के बदले आप सभी को छोड़ने पर ही राजी हो गये है। उनकी अन्य मांगों यानि एक आतंकवादी के शव (काफ़िन) वापस करने तथा 860 करोड़ रुपये की मांग की जानकारी हमें विमान में नहीं मिल पायी थी।

- समाचार पत्रों से ही हमे ज्ञात हुआ कि विमान में स्वीटजरलैंड, स्पेन, ईटली, बेल्जीयम, फ्रांस, आस्ट्रेलिया, कनाडा, आदि अनेक देशों के नागरिक बंधक थे और इन सभी देशों के राजनयिक कंधार में पहुंचे हुये थे।
- कुछ यात्रियों (विशेष रुप से हटटे कटटे यात्रियों) – के हाथ पैर बांधने तथा कुछ यात्रियों को पीटने की जानकारी हमें समाचार पत्राो में छपे यात्रियों के साक्षात्कारों से ही पता चला । दुर्गेश नामक यात्राी ने अपने साक्षात्कार मे बताया था कि उसे भी अपहरणकर्ता ने थप्पड़ मारा था। विमान में सात दिनों में केवल दो ही बार भोला दो यात्रियों को पीटते हुए देखा गया; एक बार उस समय जब दो यात्रियों को अलग अलग बैठने के लिए कहा गया और वे तैयार नहीं हो रहे थे और दूसरी बार उस समय जब यात्राी चुटकुले सुन रहे थें और भोला अचानक नाराज़ हुये और विफ़र पड़े । संभवतः शुरु के 15 घंटो में ही यात्रियों को पीटने और बांधने की घटना हुई।

- समाचार पत्रों से एक अजीब बात की जानकारी मिली कि बर्गर एक बंधक के कंधे पर सिर रख कर रोया था । यह एक अप्रत्याशित घटना प्रतीत होती है क्योकि बर्गर एक सफल परफॉमर की तरह पेश आ रहे थे, और बड़े नाटकीय ढंग से अपनी भूमिका निभा रहे थे । यदि बर्गर वाकई रोये थे तो यह समझना कठिन है कि यह व्यवहार उनके कुटनीति (स्ट्रेटेजी) का अंग था या वे वाकई भावावेश (जज़बात) में आये थे।

- समाचार पत्रों में ही यह ज्ञात हुआ कि अपहृत विमान में रॉबर्टो गिओरी नामक एक ऐसा यात्राी भी बंधक थे जो विश्व के 150 देशों के मुद्रा छापने का कार्य करते थे । विमान में हमारी उनसे कई बार बात भी हुई थी । उन्होंने यह शंका भी व्यक्त की थी क्या भारत अपने आश्वासन पर टिका रहेगा? बीच में कुछ अस्वस्थ भी हो गये थे और बिल्कुल पीछे के सीटों को मिलाकर लेटे रहते थे । उन्होने ही अन्य विदेशी यात्रियों से राशि संग्रहित कर अपहरणकर्ताओं को भेंट दिया था । संभवतः वे अकेले ही अपहरकर्ताओं की 860 करोड़ रूपये की मांग को पूरा कर सकते थे ।

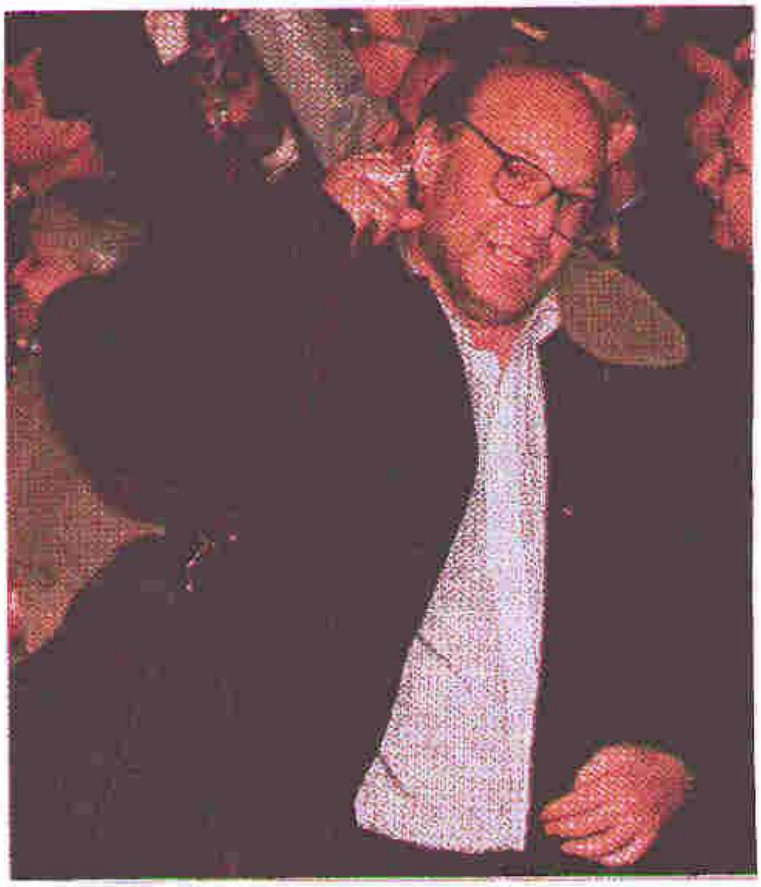

रॉबर्टो गिओरी : डेढ़ सौ देशों की मुद्रांए छापने वाला बन्धक *(टाईम)*

डेढ़ सौ देशों की मुद्राएं छापने वाला भी बंधक था

क्या आप यकीन करेंगे कि पिछले मिलेनियम के अंतिम सप्ताह में काठमांडू से दिल्ली जा रहे जिस भारतीय विमान का अपहरण किया गया था उसमें एक ऐसी हस्ती भी मौजूद थी जिसकी कंपनी दुनिया के 150 देशों की अधिकृत मुद्रा छाप कर देती है । इसी व्यक्ति की मौजूदगी के कारण सब झगड़ों में तटस्थ रहने वाले स्विट्जरलैंड ने भारत सरकार पर इस प्रकरण को जल्द व शांतिपूर्ण तरीके से निपटाने के लिए दबाव डाला था।

कोरिएरे देला सेरा में प्रकाशित रिर्पोट के अनुसार इस 58 वर्षीय व्यक्ति रॉबर्टो गिओरी को अब स्विट्जरलैंड लौटने पर कड़ी सुरक्षा व्यवस्था में रखा गया है । इनकी कंपनी है 'देला रूए गिओर ।' बताया जाता है कि दुनिया भर के 150 देशों के लिए अधिकृत मुद्रा छापने के क्षेत्रा में इसका एकछत्रा राज है । रॉबर्टो गिओरी को करेंसी किंग के रूप में भी जाना जाता है । वे एक व्यापारिक कार्य के सिलसिले में अपनी सहायक सुश्री क्रिस्टीना कालाब्रेसी के साथ भारत आए थे और स्विट्जरलैंड लौटने से पहले काठमांडू घूमने चले गये थे। स्विस प्रेस में प्रकाशित खबरों के मुताबिक इंडियन एअरलाइंस के विमान के अपहरण के दो दिन बाद ही स्विस विदेश मंत्राी जोसेफ डेस ने 26 दिसंबर को भारतीय विदेश मंत्राी जसवंत सिंह से बातचीत की थी और उन्हें सख्त संदेश दिया था । जेनेवा से प्रकाशित ले टेम्प्स के अनुसार यह संदेश था कि सभी बंधकों को सुरक्षित छुड़वाने के लिए जो कुछ संभव हो सकता है वह किया जाए ,लेकिन अपहर्ताओं को न छूटने दिया जाए।

यह भी पता चला है कि इस दौरान स्विस सरकार ने इस अपहरण प्रकरण के लिए एक विशेष प्रकोष्ठ भी बनाया था और एक विशेष प्रतिनिधि के रूप में हांस स्तालदेर को कंधार भेजा था जो वहां से सीधे राजधानी बर्न को रिर्पोट करते थे । कम से कम दो समाचार –पत्राों रिपब्लिका और कोरिएरे देला सेरा ने लिखा है कि कंधार से रॉबर्टो गिओरी को विशेष विमान से बर्न लाया गया और तभी से उन पर कड़ी निगरानी है ,उनके फोन और डाक पर सरकार की कड़ी नजर है । सरकार को अंदेशा है कि जाली नोट बनाने के लिए अपहर्ता या उनसे संबद्ध कोई उग्रवादी गिओरी से सम्पर्क साध सकता है ,चूँकि गिओरी कई देशों की असली मुद्रा छापते हैं,इसलिए कहीं उन्हें असली जैसी दिखने वाली नकली मुद्रा छापने के लिए विवश न किया जा सके ,यह भी सरकारी अधिकारी देख रहे हैं । कोरिएरे लिखता है कि गिओरी जल्द ही अमेरिकी डालर ,रूसी रूबल ,जर्मन मार्क तथा कई अन्य देशों की नई मुद्रा जारी करने वाले हैं अतः ऐसे समय में उग्रवादियों के साथ उनके संबंधों के असर का केवल अंदाजा ही लगाया जा सकता है । यही कारण है कि पूरे अपहरण प्रकरण के दौरान एक बार भी नहीं बताया गया कि गिओरी अपहृत विमान में हैं अन्यथा अपहर्ताओं को पता चल सकता था कि विमान में कितना महत्वपूर्ण व्यक्ति उनके कब्जे में है । संभवतः इसीलिए गिओरी की कंपनी के निदेशक भी पूरी तरह खमोश रहे । स्विस मीडिया के अनुसार रॉबर्टो गिओरी इस ग्रह का सबसे अमीर और संरक्षित व्यक्ति है ,उसकी कंपनी का आय–व्यय का लेखा प्रकाशित नहीं होता और स्विस कानून ने इस कंपनी को विशेष छूट दे रखी है । (दैनिक भास्कर ,12–1–2000)

- समाचार पत्रों से ही यह ज्ञात हुआ कि अपहृत विमान से मुम्बई में किसी अब्दुल लतीफ को वायरलेस या मोबाईल पर 29 दिसम्बर को यह जानकारी दी गई थी कि यदि उनकी मांगें नहीं मानी जाती हैं तो वे हवाई जहाज को उड़ा देंगें । विमान उड़ाने की धमकी उन्होंने विमान में कभी नहीं दी । हां , यात्रियों को मारने की धमकी उन्होंने कई बार दी थी ।

- विमान कैप्टेन के हवाले से यह समाचार छपा था कि अपहरणकर्ताओं के चीफ ने कैप्टेन के कंधे से लिपटकर तीन बार रोया था । यह धटना भी काफी अप्रत्याशित थी । चीफ अधिकतर कॉकपिट में ही रहते थे और बहुत कम यात्रियों के बीच आते थें । चीफ काफी धीर गंभीर दिखाई पड़ते थे। उनका रोने वाला यह व्यवहार भी उनके योजना का एक हिस्सा था या वाक़ई जज़बाती हो गये थे , यह एक प्रश्न–चिन्ह है ।

- अर्न्तरराष्ट्रीय मीडिया के अनुसार दिनांक 29 दिसम्बर को भारत सरकार द्वारा मांग अस्वीकार करने और अपहरणकर्ता एवं डेलीगेशन के बीच वार्ता समाप्त होने के उपरान्त स्वयं अपहरणकर्ताओं द्वारा पुनः वार्ता जारी करने का प्रस्ताव रखा गया था और तालिबान सरकार द्वारा अपहरणकर्ताओं को बंदी बनाया जाना चाहिए था और बनाया जा सकता था; जबकि अपहरणकर्ताओं द्वारा बार–2 यही बताया जा रहा था कि तालिबान सरकार की पहल पर ही पुनः बातचीत प्रारंभ की गई ओर तालिबान मसले को हल करने में पूरी मदद कर रही थी ।

- सतनाम सिंह नामक एक यात्राी के साक्षात्कार से यह ज्ञात हुआ कि उन्हें भी अपहरणकर्ताओं द्वारा कत्याल के साथ चाकू से सघन वार किया गया था । रूपीन कत्याल इनके पीछे बैठे थे । जब अमृतसर में पेट्रोल देने में हीला–हवाली की जा रही थी तो अपहरणकर्ताओं ने गिनती (काउन्ट–डाउन) शुरू किया और जैसे ही ज़ीरो (शून्य) हुआ तो किसी अपहरणकर्ता द्वारा आदेश दिया गया – 'इसे मार डालो' और एक अपहरणकर्ता ने सतनाम सिंह को चाकू से मारना शुरू किया । वे नीचे गिर पड़े तो अपहरणकर्ताओं को लगा कि वे मर गये, परन्तु जब इन्होने पानी मांगा तो उन्हें पानी दिया गया और अपहरणकर्ता एक महिला चिकित्सक को इनके इलाज के लिए लेकर आये । अपहरणकर्ताओं ने कहा – ''हम किसी को मारना नहीं चाहते हैं , परन्तु हमें मारने पर मजबूर किया जा रहा है ।'' सतनाम सिंह , इनकी पत्नी नीता और इनके डेढ़ वर्षीय लड़के को दुबई में मुक्ति मिली । इनकी पत्नी द्वारा बार–2 कहने पर अपहरणकर्ताओं ने इन्हें भी उतार दिया ।

- रेडीफ वेबसाइट के प्रतिनिधि को दिये गये साक्षात्कार में अपहृत विमान के एक यात्राी डॉ0खुराना ने बताया कि उन्हें मधुमेह (डायबिटीज) के कारण हालत बिगड़ने से छोड़ दिया गया । अपहरण के पश्चात जब इनकी डायबिटीज के कारण हालत ज्यादा खराब हो गई तो अपहरणकर्ताओं ने विमान में यात्राा कर रहे लेडी डॉक्टर अनिता जोशी को इनकी जांच करने के लिए कहा । डॉ0जोशाी ने इनकी जांच की और कुछ दवाईयां दी ,परन्तु इनकी हालत में कुछ सुधार नहीं आया । फिर इन्हें इलाज के लिए छोड़ा गया । पहले इनका इलाज स्थानीय कंधार अस्पताल में किया गया और फिर इन्हें इस्लामाबाद के अस्पताल में ले जाया गया । इनकी हालत इतनी खराब हो गई थी कि इन्हें एक समय यह लगा कि वे अब नहीं बच पायेंगे। इस्लामाबाद में हालत सुधरने के बाद इन्हें दिल्ली भेजा गया ।

- टूली ,प्रशांत और सोढी नामक बंधक यात्रियों के हवाले से रेडीफ वेबसाइट पर यह जानकारी दी गई कि अपहरणकर्ताओं द्वारा यात्रियों को रोज पीटा जाता था । अपहरणकर्ताओं द्वारा पुरूष यात्रियों को पूरी तरह से डराया और आतंकित किया जाता था । लगभग चालीस पुरूष यात्रियों को एक्जीक्यूटीव क्लास में ले जाया गया और ठसाकर बिठाया गया था । इन्हें सिर नीचे कर

कुर्सियों पर बैठे रहने पर बाध्य किया गया । इन्हें शौचालय भी जाने नहीं दिया गया और बार–बार पीटा गया और चाकू से मारा गया ।

- को–पायलट राजेन्द्र के हवाले से रेडीफ वेबसाइट ने यह समाचार दिया कि–''मुझे चार दिन तक अपहरणकर्ताओं ने आंख पर पट्टी बांध कर कॉकपिट में जबरदस्ती बैठाकर रखा । इन्होंने कुछ यात्रियों को पीटा ''। चूँकि विमान क्रू के सभी सदस्य इकॉनामी क्लास में यात्रियों के साथ ही बन्धक की तरह बैठे रहते थे और राजेन्द्र भी बीच–बीच में टायलेट जाते और बात करते दिखाई देते थे ,इसलिए राजेन्द्र को चार दिन तक कॉकपिट में बिठाये रखने की जानकारी घटनाक्रम से कुछ अलग प्रतीत होती है ।

- मीडिया से ही यह ज्ञात हुआ कि कंधार हवाई अड्डे पर भारतीय डेलीगेशन के साथ चिकित्सकों की पूरी टीम बन्धकों की देखभाल एवं इलाज के लिए उपलब्ध थी । इन्हें भारत से पूरी तैयारी के साथ भेजा गया था । परन्तु इन्हें अपहृत विमान में प्रवेश करने नहीं दिया गया था और इनका लाभ विमान के बिमार यात्रियों को नहीं मिल पाया ।

- समाचार माध्यम से ज्ञात हुआ कि विमान की बिजली प्रणाली में ए.पी.यू.(आक्ज़िलरी पावर यूनिट) के खराब (भंग) हो जाने के कारण विमान की वायरलेस संचार व्यवस्था भी प्रभावित हुई ,जिसके फलस्वरूप भारतीय डेलीगेशन और अपहरणकर्ताओं के बीच संवाद में रूकावट आई और अवरोध उत्पन्न हुआ । रमज़ान की नमाज़ के कारण भी वार्तालाप में कई बार व्यवधान आया ।

अपहृत विमान की कुछ चित्रात्मक झलकियाँ

कंधार अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के टारमेक पर खड़ा अपहृत विमान – आई.सी. 814 *(टाइम्स ऑफ इंडिया)*

कंधार अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे के भवन के पहुंच मार्ग के दूसरी ओर खड़ा अपहृत विमान, बैठे हुए तालिबानी सैनिक / कर्मचारी और विमानपट्टन के वाहन *(दैनिक भास्कर)*

kandhar1304b

तालिबानी सैनिक – पृष्ठभूमि में अपहत विमान *(राज्य की नई दुनिया)*

अपहत विमान के बाहर पहरा देते हुए तालिबानी सैनिक *(हिन्दु)*

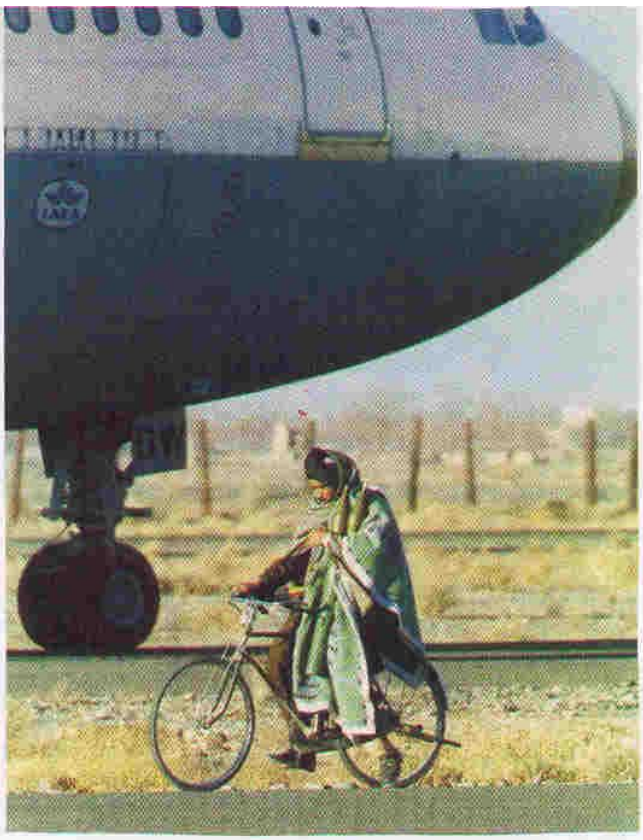

अपहृत विमान के निकट से गुजरता एक अफगानी –सैनिक या आम नागरिक ?

(इंडिया टुडे) (हिन्दु)

kandhar1304b

93

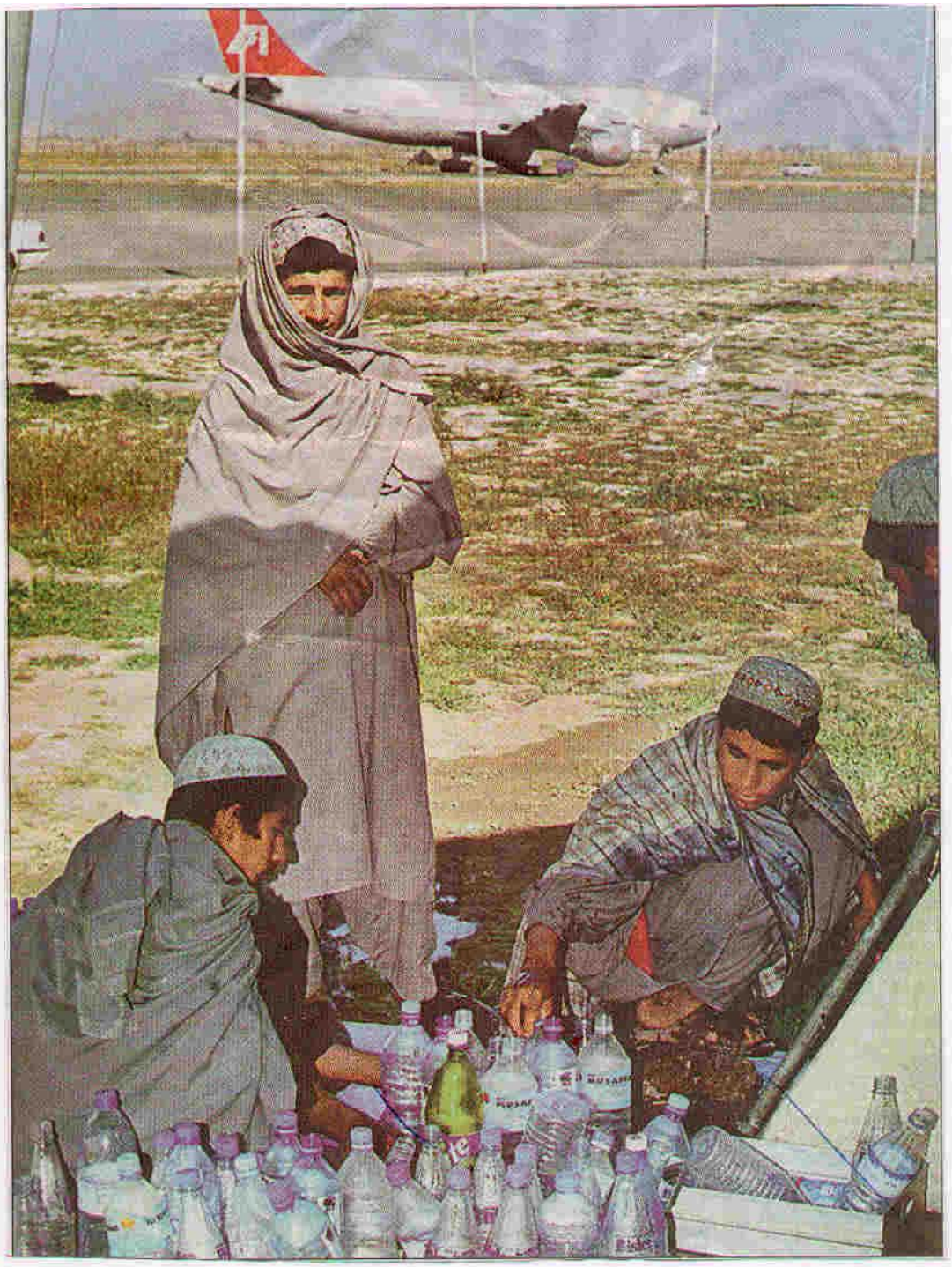

पानी की व्यवस्था – खाली बोतल विमान के अन्दर से बाहर भेजे जाते थे और बाहर से बोतल भरकर अन्दर भेजे जाते थे । पृष्ठभूमि में अपहृत विमान *(टाइम्स ऑफ इंडिया)*

पानी के बोतल विमान के अन्दर देते हुए तालिबानी कर्मचारी *(फ्रंटलाइन)* *(इंडिया टुडे)*

kandhar1304b

अपहरण घटना के निराकरण हेतु चर्चा के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रतिनिधि कंधार हवाई अड्डे पंहुचे *(दैनिक भास्कर)*

अपहृत विमान का मरम्मत करते हुए इंजीनियर और उन्हें मदद करते हुए एवं अफगानी कर्मचारी *(हिन्दु)*

इंडियन एयरलांइस के इंजीनीयर और अफगानी अधिकारी के साथ विमान का मुआयना करते हुए एक अपहरणकर्ता (डॉक्टर) *(फ्रंटलाइन)*

विमान के मरम्मत का मुआयना करते हुए तालिबानी सैनिको के साथ डॉक्टर *(हिन्दु)*

समझौता वार्ता – विमान के बाहर बातचीत करते हुए भारतीय डेलिगेशन के प्रतिनिधि, फ्लाइट इंजीनियर, तालिबानी अधिकारी और एक अपहरणकर्ता (संभवतः शंकर) *(हिन्दु)*

अपहृत विमान की ओर अग्रसर होते हुए तालिबानी सैन्य वाहन *(फ्रंटलाइन)*

अपहृत विमान की घेराबंदी करते हुए सशस्त्र तालिबानी सैनिक । *इनसेट*– विमान के कॉकपिट से सीढ़ी पर लटककर नीचे देखता हुआ एक अपहरणकर्ता *(दैनिक भास्कर)*

अपहृत विमान के निकट राकेट लॉन्चर और अन्य आधुनिक शस्त्रों के साथ तालिबानी सैनिक *(हिन्दू)*

अपहृत विमान के पास से गुजरता हुआ सशस्त्र तालिबानी सैन्य युक्त वाहन *(टाइम्स ऑफ इंडिया)*

विमान के नीचे दो अपहरणकर्ता (संभवतः बर्गर और शंकर) *(इंडिया टुडे)*

kandhar1304b

101

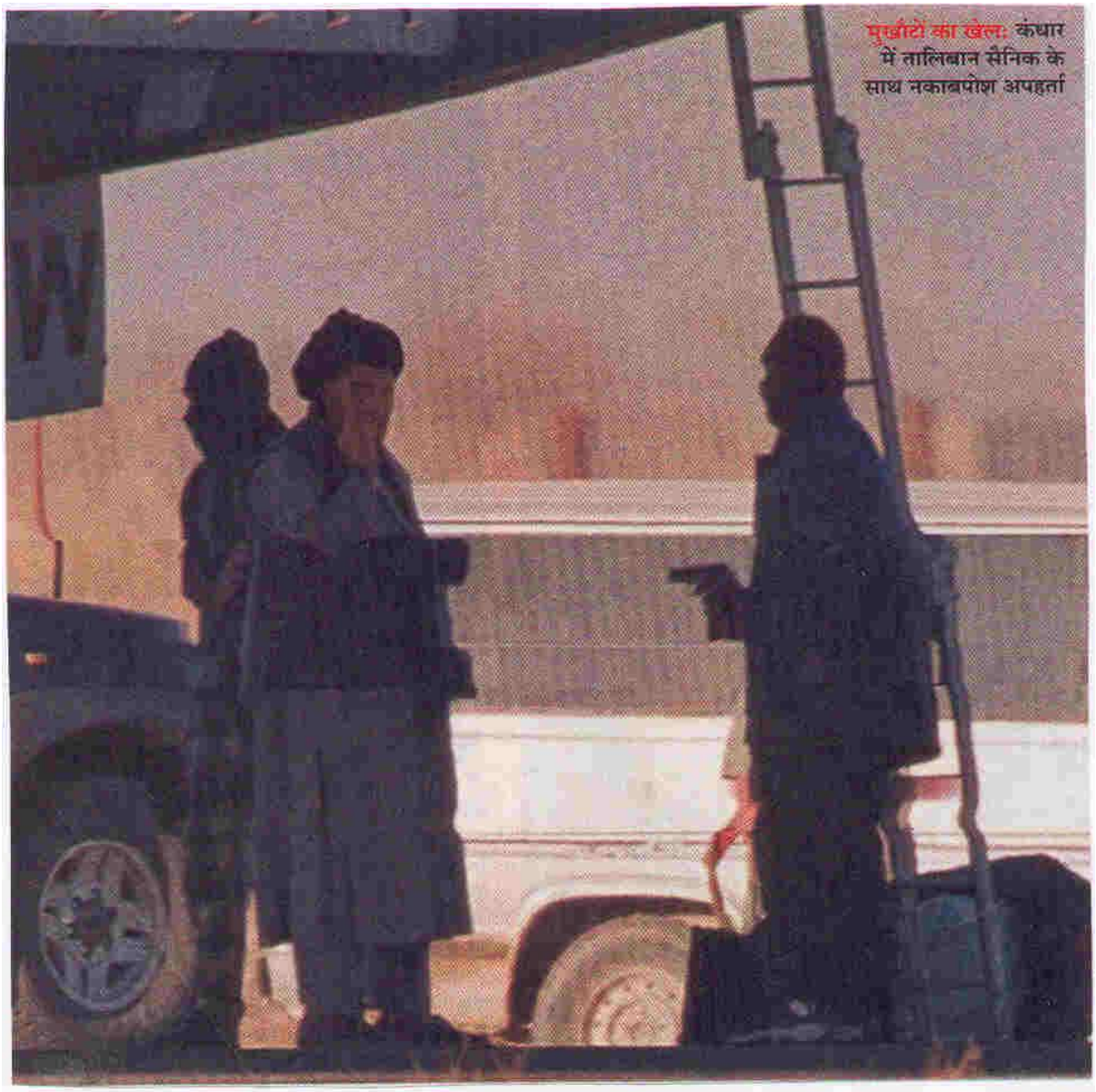

मुखौटों का खेल: कंधार में तालिबान सैनिक के साथ नकाबपोश अपहर्ता

विमान के नीचे तालिबान सैनिक के साथ अपहरणकर्ता विमान छोड़कर जाते हुए *(इंडिया टुडे)*

kandhar1304b

कंधार को अलविदा – दिनांक 1–1–2000 को स्वदेश के लिए उड़ान भरते हुए अपहृत विमान । सामने तालिबानी सरकार द्वारा अपहृत विमान की सुरक्षा के लिए तैनात टैंक दिखाई दे रहा है *(फ्रंटलाइन)*

विस्मृत कंधार

कंधार में हमारे साथ चाहे कुछ भी हुआ हो, कंधार ने इतिहास को बहुत कुछ दिया है। भारत के इतिहास में कंधार का एक विशेष महत्त्व रहा है । हमारे भोपालवासी मित्रा विजय, जो कि हिन्दी के विद्वान हैं, ने बताया कि जय शंकर प्रसाद की 'कामायनी' में मनु की जिस सुन्दर नायिका श्रद्धा का वर्णन किया गया है ,वह कंधार की है। इस प्रकार कंधार मनुष्य जाति के विकास की अवधारणा से जुड़ा हुआ है । विवेक ने बताया कि कंधार एक समय में सुन्दरियों का स्वर्ग हुआ करता था और पूरे विश्व में कंधार से सुंदरियां भेजी जातीं थीं । महाभारत की गांधारी के साथ भी कंधार का नाम जुड़ा हुआ है । रविन्द्रनाथ ठाकुर के काबुलीवाला ने भी अपने गीत में कंधार का बखान किया है –''काबुलीवाला आया ,पिस्ता–बादाम लेके ,काबुल कंधार से ।''

इतिहास के आइने में देखें तो कंधार वर्षों तक भारत के हिस्से के रूप में नजर आता है । नाता प्राचीन काल से जुड़ा और यह पुनः मुगलों के काल में स्थापित हुआ । बाबर ,अकबर से लेकर शाहजहां तक सभी बादशाहों ने कंधार पर विजय हासिल की । शाहजहां के काल में 11 वर्षों तक साम्राज्य का हिस्सा रहने के बाद कंधार सदा के लिए फारस का हो गया । बाद के वर्षो में अफगान शासकों के रूप में नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली के भारत पर आक्रमण हुए । ब्रिटिश काल में बनी अफगान नीति भी कारगर नहीं रही ।
(डॉ0बालकृष्ण पंजाबी ,दैनिक भास्कर ,31–12–1999)

कंधार से भारत का नाता इतिहास में गहरे दर्ज है । अविभाजित भारत के उत्तर–पश्चिम सीमांत पर स्थित कंधार नगर और उसके आसपास का क्षेत्रा अक्सर भारतीय राजनीतिक गतिविधियों का महत्त्वपूर्ण केन्द्र बिंदु रहा है । करीब पांच हजार वर्ष पूर्व सिंधु घाटी की सभ्यता या हडप्पा संस्कृति के नाम से पहचाने जाने वाले
कार्यकलाप अफगानिस्तान के कंधार क्षेत्रा तक फैले हुये थे। ऐसा उत्खनन और शोध के माध्यम से बताया जा रहा है। महाभारत काल की गंधारी को भी कंधार से जोड़ा जाता है । ऐतिहासिक काल मे भारत के महान सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य ने ईसा पूर्व 303 (करीब 23 सौ वर्ष पूर्व) यूनानी शासक सेल्यूकस को पराजित कर अफगानिस्तान के जो क्षेत्रा अपने साम्राज्य में संधि व्दारा मिलाये थे, उनमे कंधार नगर भी शामिल था। इसके बाद अशोक और बिंदुसार के जमाने में भी कंधार राजनीतिक –सांस्कृतिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केन्द्र रहा । शकों और कुषाणों के काल में भी यह नगर सांस्कृतिक दृष्टि से उल्लेखनीय रहा । कनिष्क कुषाण के काल (78 ई.– से 102 या 122 ई.) में तो खासतौर से इस क्षेत्रा में मूर्ति कला की गांधार शैली विकसित हुई, जिसका प्रभाव मथुरा तक दिखाई देता है। ऐतिहासिक दृष्टि से यह प्रमाणित है कि कश्मीर, मध्य एशिया तथा कंधार सहित अफगानिस्तान कनिष्क के साम्राज्य में शामिल थे।

TAJIKISTAN
ताजिकिस्तान
UZBEKISTAN
उजबेकिस्तान
Amu Darya (Oxus)
TURKMENISTAN
तुर्कमेनिस्तान
Balkh (Bactria)
Mazar-i-Sharif
Hindu Kush
Wakhan Corridor
Bamiyan
काबुल
Herat
Jalalabad
Hari Rud
Koh-i-Baba
KABUL
Khyber Pass
अफगानिस्तान
Ghazni
AFGHANISTAN
Indus
Farah
कंधार
Kandahar
DMB-MI
Helmand
अफगानिस्तान
भारत
INDIA
IRAN
पाकिस्तान
PAKISTAN
500km
300mls
international airport

105

फिर अगले 15 सौ वर्षों में, अर्थात मुगल साम्राज्य की स्थापना तक,कंधार भारत का अंग तो नहीं रहा, लेकिन व्यापारिक कड़ियां कुछ हद तक बनी रहीं। मुग़ल काल में यह क्षेत्र पुनः भारत से जुड़ा । 1526 ई. में उत्तरी भारत में मुगल साम्राज्य की स्थापना करने के पहले 1522 ई. में बाबर ने कंधार पर अधिकार कर लिया था। कंधार मुगलों और फारस (इरान) के शाहों के साम्राज्य की सीमा पर था और दोनों राजवंशों के लिए यह नगर न केवल राजनीतिक दृष्टि से बल्कि आर्थिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण था। सीमांत दृष्टि से कंधार जिसके हाथ में होता उसे अपने राज्य की रक्षा व दूसरे के राज्य पर आक्रमण करने की सुविधा थी। आर्थिक दृष्टि से कंधार भारत और पश्चिम एशिया तथा यूरोप तक के स्थल मार्ग पर था। वे जिस शासक के अधिकार में होता वही उस विस्तृत व्यापार का मालिक होता था और कर आदि वसूल करने के लाभ भी प्राप्त कर सकता था। इस कारण फारस के शाह और भारत के मुगल शासक कंधार को अपने अधिकार में रखने के लिए करीब 150 वर्षों तक प्रतिद्वंदी बने रहे। इस बीच ज्यादातर कंधार भारतीय साम्राज्य का हिस्सा ही बना रहा। शेरशाह से पराजित होने के बाद अपने प्रवासकाल (1540–45) में हुमायू ने कंधार को जीत लिया । हुमांयू की मृत्यु के बाद 1558 ई. में फारस ने आक्रमण कर कंधार को अपने अधिकार में कर लिया। अकबर के काल में यह पुनः मुगलों के कब्जे में आया । जहांगीर के काल में 1606 से 7 में फारस ने कंधार को छीनने की अनेक कोशिशें की लेकिन वह असफल रहा । जहांगीर को खुश रखने के लिए फारस के राजदूत अनेक उपहारों को लेकर आगरा

आते रहे। 1621–22 में मुगल दरबार की आंतरिक गुटबंदी को देखते हुये फारस की सेनाओ ने कंधार पर आक्रमण कर दिया । नूरजंहा खुर्रम (शाहजहां) को आगरा से दूर रखने के लिए उसे कंधार की मुहिम पर भेजना चाहती थी लेकिन शाहजंहा के कंधार न जाने से 1622 में फारस का कंधार पर अधिकार हो गया ।

शाहजहां कंधार को वापस लाने की कोशिश लगातार करता रहा। आखिर काबुल के मुगल सूबेदार अलीमर्दन ने 1638 ई. में कंधार को फिर जीत लिया। ग्यारह वर्ष तक कंधार फिर भारतीय साम्राज्य का अंग रहा। मुगलों की आशा के विपरीत फरवरी 1649 की कड़कती ठंड में फारस के आक्रमण ने मुगलों को कंधार से फिर वंचित कर दिया। शाहजहां के शासनकाल में ही 1649 और 1652 में शहज़ादा औरंगजेब तथा वज़ीर सादुल्ला खां के नेतृत्व में कंधार को पाने की दो बड़ी कोशिशें नाकाम हो गईं । 1653 में शाहजादा दारा के नेतृत्व में मुगल सेनाएं कंधार के आसपास का क्षेत्रा जीतने में सफल हो सकी किंतु कंधार किले की दीवारों को नहीं तोड़ा जा सका। आखिर कंधार को फारस के अधिकार में छोड़कर भारतीय सेनाएं वापस आ गईं । औरंगजेब ने कंधार को वापस जीतने की कोशिश कभी नहीं की।

शाहजहां के 1649, 1652 तथा 1653 के कंधार आक्रमणों में 12 करोड़ रुपए खर्च हुए । हजारों सैनिक मारे गऐ और मुगल साम्राज्य की प्रतिष्ठा को भी धक्का लगा । परंतु इसके साथ यह बात भी स्पष्ट हो गई कि कंधार की स्थिति फारस और मुगल साम्राज्य के बीच सीमा–रेखा जैसी रहेगी। इसके बाद राजनीतिक एवं सैनिक दृष्टि से कंधार से अलग से भारत का पूर्व जैसा कोई रिश्ता तो नहीं रहा, परंतु नादिर शाह और अहमद शाह अब्दाली के आक्रमणों और लूटमार के कारण अफगान शासकों के प्रति भारतीयों की गहरी नाराजगी को देखा जा सकता है। ब्रिटिश भारत में भी लार्ड ऑकलैंड (1838), लार्ड लिटन (1876–78) की अफगान नीति तथा बाद के सैनिक कूटनीतिक प्रयास हानिकारक ही सिद्ध हुए । आखिर 1922 में राजदूत स्तर के संबंध स्थापित हुए।

जिन्हें छोड़ा गया

विमान बंधकों के बदले अपहरणकर्ताओं की मांग पर जिन आतंकवादियों को छोड़ा गया ,उनमें से एक आतंकवादी के बारे में अपहरणकर्ताओं ने विमान में चर्चा की थी । वह आतंकवादी था मौलाना मसूद अजहर । डॉक्टर ने एक बार बताया था कि –''जिन मौलाना की मांग हम आप लोगों के बदले में कर रहे हैं , उनके लिए हम सभी को छोड़ सकते हैं ,आपकी सरकार एक बार ठीक से बात तो करे । मौलाना के मुँह से इस्लाम टपकता है । उनका भाषण आपके बज़ीर–ए–आज़म अटल बिहारी बाजपेयी ने भी सुना है ,इसलिए मौलाना को छोड़ना नहीं चाहते हैं ।''अपहरण से मुक्त होने के बाद समाचार पत्राों एवं मीडिया से छोड़े गये अन्य दो आतंकवादियों के बारे में जानकारी मिली । समाचार पत्राों के अनुसार छोड़े गये आतंकवादी अत्यन्त दुर्दान्त थे और एक व्यक्ति विशेष समूह का यह भी अभिमत था कि इन्हें किसी भी हालत में अपहृत यात्रियों के बदले नहीं छोड़ना चाहिए था । कुछ दूसरे लोगों का यह मत था कि इन्हें तो फिर पकड़ा जा सकता है ,परन्तु इनके बदले 160 बंधकों की हत्या होने देना कहीं से भी न्याय संगत या व्यवहारिक नहीं था ।

आतंकवादियों को छोड़ने एवं यात्रियों की जान बचाने के समीकरण को एक दूसरे आयाम से विश्लेषण किया जाना भी आवश्यक प्रतीत होता है । यात्रियों के बीच अनेक ऐसे लोग थे जो अपने–अपने क्षेत्रा में पारंगत थे । कोई डॉक्टर था,कोई इंजीनियर ,बड़े–बड़े व्यापारी ,वैज्ञानिक, ब्यूरोक्रेट ,कम्प्यूटर विशेषज्ञ ,वित्तीय सलाहकार ,समाज सेवी ,और अन्य विभिन्न क्षेत्राों में शीर्षथ ओहदों पर पदस्थ लोग आदि विमान में यात्राा कर रहे थे । वे सभी लोग समाज को ,देश को , विश्व को अपनी सेवायें दे रहे हैं ,विशेष योगदान दे रहे हैं ,इनमें से अधिकांश लोग समाज ,देश और विश्व के विकास के लिए महत्वपूर्ण घटक ;ेमजद्ध हैं । इनमें एक वह व्यक्ति भी था जो कि अपहरणकर्ताओं के 200 मिलियन डालर की मांग की भरपाई अकेले ही कर सकता था । अब प्रश्न यह उठता है कि जिन आतंकवादियों को छोड़ा गया ,उनसे होने वाला संभावित नुकसान अधिक महत्वपूर्ण है अथवा विकास से जुड़े हुए इन यात्रियों का देश और विश्व के लिए योगदान का अधिक महत्व है । इन दोनों में से कौन सा मापदण्ड ;च्तंउमजमतद्ध हमें ज्यादा वजनदार लग रहा है –आतंकवादियों से नुकसान या बंधको का समाज को योगदान के फायदे का । किसका अधिक दूरगामी प्रभाव होगा ? यह निश्चित ही एक कठिन ट्रेड आफ (समीकरण) है । किसमें ज्यादा फायदा है – इसका विश्लेषण करना निश्चित ही दुष्कर है । एक नजरिये (Perception) की भी बात है । एक मिलीटरी अधिकारी की पत्नी जिसका पति एक आतंकवादी को पकड़ने में मारा गया हो और एक पत्नी जिसके बन्धक डाक्टर पति ने असंख्य लोगों की जान बचाई हो –दोनों के नजरिये (Perception) में भिन्नता होना स्वाभाविक है । भारतीय प्रशासनिक सेवा में कार्यरत हमारे एक वरिष्ठ अधिकारी मित्र ने कहा कि यदि एक भी देशवासी के लिए आतंकवादी को छोड़ना पड़े तो भी छोड़ना चाहिए । यह भी एक भिन्न नजरिया है । क्या 160 बंधकों के बदले तीन आतंकवादियों को छोड़ने के लिए हमें पश्चाताप होना चाहिए ? यह विवाद संभवतः अन्तहीन है । आईये हम इन आतंकवादियों के बारे में कुछ जानकारी लेते हैं ,जिन्हें बन्धकों के बदले छोड़ा गया ।

मोहम्मद मसूद अजहर – अजहर सन् 1994 के प्रारम्भ में भारत आया था । इसे ब्रिटेन में रह रहे एक पाकिस्तानी हफ़ीज ने पुर्तगाली पासपोर्ट उपलब्ध कराया था । अजहर उर्फ 'वली अदम हस्सा' हरकत–उल अंसार का पहला महासचिव है । इसे 11 फरवरी 1994 को अनंतनाग में गिरफ़्तार किया गया था । भारतीय गुप्तचर एजेंसियों की यह पहली सफ़लता थी,क्योंकि अजहर कश्मीरी युवकों को शस्त्र प्रशिक्षण के लिए नियमित पाकिस्तान और अफगानिस्तान भिजवा रहा था । इसने हरकत–उल–मुज़ाहिदीन और हरकत–उल–जेहाद–ए–इस्लामिया का विलय कर जून 1993 में हरकत–उल–अंसार के गठन में मुख्य भूमिका निभाई थी । गिरफ़्तारी के पूर्व अजहर ने न सिर्फ कश्मीर बल्कि उत्तरप्रदेश में भी सभाओं को संबोधित किया था । ढाका से भारत में प्रवेश के बाद अजहर 12 दिन दिल्ली में रहा । इस दौरान उसने लखनऊ,बनारस,कानपुर,देवबंद,सहारनपुर और जलालाबाद जाकर सभाएँ की। उसके दौरों के बाद ही कानपुर और बनारस में सांप्रदायिक दंगे हुए ।

मौलाना मसूद अजहर

मुश्ताक अहमद जरगर – यह एक प्रमुख कश्मीरी आतंकवादी है ,जो वर्तमान में निष्क्रिय अल–उमर–मुजाहिदीन का सरगना रहा है । जरगर उर्फ मुश्ताक लतरम को सुरक्षा बलों ने 1992 में गिरफ्तार किया था । यह श्रीनगर में नवहट्टा क्षेत्र का रहने वाला है । गुप्तचर एजेंसियों के अनुसार इसके पाकिस्तानी आईएसआई के साथ गहन संपर्क हैं । सूत्रों का कहना है कि जरगर शस्त्रों और संगठन का प्रशिक्षण तथा शस्त्रास्त्र लेने अगस्त 1989 और फरवरी 1990 के बीच दो बार पाकिस्तान गया था । इंडियन एयरलाइंस के विमान का काठमांडू से अपहरण करने की जिम्मेदारी लेने वाले इस्लामिक साल्वेशन फ्रंट काश्मीरी आतंकवादी संगठनों का एक छाया संगठन है ।

मुश्ताक अहमद जरगर

सईद शेख – हरकत–उल–अंसार (हुआ) का 28 वर्षीय सदस्य अहमद उमर सईद शेख पाकिस्तानी मूल का ब्रिटिश नागरिक है । मोहम्मद मसूद अजहर और 'हुआ' के अन्य नेताओं की रिहाई के लिए विदेशियों का सितम्बर–अक्टूबर 94 में अपहरण करने वालों में शेख भी शामिल था । उसे 31 अक्टूबर 1994 को गिरफ्तार कर दिल्ली के तिहाड़ जेल में रखा गया । उसने पाकिस्तान और अफगानिस्तान में मार्शल आर्ट का विशेष प्रशिक्षण प्राप्त किया है । समृद्ध परिवार के शेख ने कॉलेज की शिक्षा लाहौर में ली ।

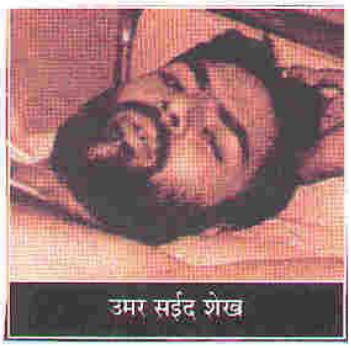
उमर सईद शेख

मौलाना मसूद अजहर अपने गृह नगर भवालपुर (पंजाब–पाकिस्तान) में 9 जनवरी को ईद की नमाज़ के बाद एकत्रित जनसमूह को संबोधित करते हुए *(फ्रंटलाइन)*

अन्तत :

अपहरण से मुक्त होकर घर पहूँचने से लेकर आज तक एक प्रश्न अभी भी प्रश्न चिन्ह बना हुआ है – '' वे पांच थे – और बंधक एक सौ साठ , फिर भी 160 यात्रियों ने पांच अपहरणकर्ताओं पर हमला क्यों नहीं किया ?''

समाचार पत्रों में अलग–अलग लोगों ने इस संबंध में अपने–अपने विचार व्यक्त किये हैं। भले ही ऐसे लोगों की संख्या कम हो ,परन्तु इन्होंने यात्रियों को अपहरणकर्ता पर हमला न करने के कारण कायर की संज्ञा भी दे डाली । संभवतः अनेक ऐसे लोग भी हैं ,जिन्होंने अपने विचार व्यक्त नहीं किये, परन्तु उनके चेतन या अचेतन मन में भी यही प्रश्न चिन्ह बना हुआ है । यदि हम बंधक नहीं होते तो बाहर रहकर शायद हमारे दिमाग में भी यही प्रश्न आता।

हमारी पुत्री जोयिता के सम्मान में नेताजी सुभाष चंद्र बोस की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में महामहिम राज्यपाल ने कहा कि विमान में अपहृत यात्रियों को अपहरणकर्ताओं पर हमला कर देना चाहिए था । हमले में कुछ लोग मर जाते और कुछ लोग बच जाते । जो मर जाते वे शहीद हो जाते और उनके परिवारवालों को तथा देश को उन पर गर्व होता ।

दूसरी ओर विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के सदस्य श्री ओम नागपाल द्वारा यह विचार व्यक्त किया गया कि अब हमें अपनी युद्व शैली को बदलना है । हमें इस बात की प्रतिक्षा नहीं करना है कि आतंकवादी जब आएंगे और हम पर हमला करेंगे तब हम उनसे लड़ेंगे । बल्कि हमें उन्हीं के उन स्त्राोतों पर हमला करना है जहां से आतंकवाद पनपता है । हमें अनावश्यक अपने प्राण नहीं गवाने हैं बल्कि अब हमें प्रो एक्टिव एक्शन लेना है ।

दिनांक 26 जनवरी 2000 को महामहिम राष्ट्रपति ने राष्ट्र के नाम अपने संदेश में यह विचार व्यक्त किया कि कंधार में अपहृत विमान में एक सौ साठ यात्रियों ने जो संयम और सहनशीलता का परिचय दिया, वह सराहनीय है तथा हमारे देश की परम्परा को परिलक्षित करता है । देश को उन पर गर्व है ।

यहां एक बात स्पष्ट होती है कि जिन लोगों ने इस प्रकार के विचार व्यक्त किये कि बंधकों को अपहरणर्ताओं पर हमला करना था ,वे अपहृत विमान के अन्दर की स्थिति को आत्मसात करने में असमर्थ रहे हैं। वे अपने–आपको उन परिस्थितियों में नहीं रख पाये हैं । यहां यह उल्लेख करना आवश्यक है कि हम ,शायद हम सब मरने के लिए तैयार थे । वह मौत कैसी होती यह अनिश्चित था। अपहरणकर्ता उत्तेजित और असहाय होकर हमें मार डालते, या जब अपहरणकर्ता किसी को मारते तो सभी यात्राी उन पर टूट पड़ते और मारे जाते या फिर बाहर से अपहरणकर्ताओं को पकड़ने के लिए हमला होता तो उसमें हम भी मारे जाते ।

जहां तक राष्ट्र प्रेम का प्रश्न है तो शायद हर यात्राी देश के लिए मरने को तैयार था । जब अपहरणकर्ता विमान छोड़ कर चले गये और पायलट ने कॉकपिट से वापस आकर अपना कैप पहना और घोषणा की कि –'अपहरणकर्ता चले गये हैं ' ,तो सभी यात्रियों के मुख से जो शब्द निकले थे वे थे –' भारत माता की जय ' । यदि यात्रियों को यह बताया जाता कि उन्हें देश के लिए मरना है तो वे निश्चित ही इसके लिए तैयार थे ।

जिस प्रकार बाहर के लोगों के दिमाग में यह बात आ रही थी कि यात्री अपहरणकर्ताओं पर हमला क्यों नहीं कर रहे हैं ,उसी प्रकार बंधकों के दिमाग में यह बात आना स्वाभाविक था कि बाहर से अपहरणकर्ताओं को पकड़ने के लिए हमला क्यों नहीं किया जा रहा है ? विमान के अन्दर तो यात्री कैद हैं ,बेल्ट से बंधे हैं ,पिस्तौल की नोक पर हैं । लेकिन बाहर के लोग तो आजाद है, वे क्या कर रहे है ?

हमला क्यों नहीं किया गया

अब हम विमान में विद्यमान उन परिस्थितियों का वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करने का प्रयास करते हैं,जिन कारणों से बंधकों द्वारा अपहरणकर्ताओं पर हमला नहीं किया गया –

- अपहरणकर्ताओं की गतिविधियों से यह स्पष्ट था कि वे इस प्रकार के अपहरण के लिए पूर्णरूपेण प्रशिक्षित थे । उन्हें सभी बारीकियों का ज्ञान था । ऐसी परिस्थिति में बन्धकों के दिमाग में क्या–क्या बातें आ सकती थीं और वे क्या कर सकते थे ,इन बातों का उन्हें पूर्व अभ्यास करा दिया गया था और अपहरणकर्ता उसी प्रकार से व्यवहार कर रहे थे ,सावधानी बरत रहे थे और ट्रीटमेंट दे रहे थे ।

  > अपहरणकर्ता कभी अच्छा व्यवहार करते थे – कभी डराते थे । एक बार मरने के लिए तैयार हो जाने का निर्देश देते थे और दूसरे ही क्षण छोड़ने की दिलासा देते थे ।

  > एक अपहरणकर्ता सभी यात्रियों को तनावमुक्त रहने का माहौल बनाता था , और जब यात्री तनावमुक्त हो जाते थे ,तो दूसरा अपहरणकर्ता उन्हें फिर से धमकाकर तनावपूर्ण स्थिति में ला देता था।

  > एक अपहरणकर्ता इस्लाम पर भाषण देकर लोगों को प्रभावित करता था ,तो दूसरा चुपचाप केवल यात्रियों पर नजर रखे हुए था और निगरानी कर रहा था ।

  > सभी अपहरणकर्ता शुरू से अन्त तक पूरी तरह से सतर्क और सचेत थे । अन्तिम समय विमान छोड़ने तक भी वे अपने हाथ में पिस्तौल और ग्रेनेड रखे हुए थे । पूरे 169 घण्टे अपहरणकर्ता सतत निगरानी करते रहे । एक अपहरणकर्ता सामने कॉकपिट की ओर ,तथा एक पीछे की ओर निरन्तर बैठा रहता था। वे बीच–बीच में चहल कदमी भी करते थे । रात्रि में और यहां तक कि अंधेरे में भी वे निगरानी करते रहते थे ।

- अपहरणकर्ताओं द्वारा व्यक्तिगत रूप से या पायलट अथवा क्रू सदस्यों के माध्यम से यह सम्भावना रोज ही व्यक्त की जाती थी कि आज छोड़ दिये जायेंगे ।

- यात्रियों को प्रारम्भ से अन्त तक अपने सीट पर बेल्ट बांधकर बैठाकर रखा गया था । यदि कोई बेल्ट खोलता था और बेल्ट खोलने की 'कट' की आवाज आती थी तो अपहरणकर्ता तत्काल वहां पहुँच जाते थे और पूछते थे ''किसने बेल्ट खोला ' ।

- यात्रियों को सीधे बैठने ,सामने देखने या सिर नीचा करके रहने ,बात न करने आदि के निर्देश बीच–बीच में अपहरणकर्ताओं द्वारा दिये जा रहे थे । 30–12–1999 तक इन बातों पर विशेष रूप से ध्यान दे रहे थे । सम्भवतः ऐसा इसलिए किया जा रहा था कि यात्री आपस में बातचीत न

कर सकें और कोई योजना न बना सकें । जब भी कोई यात्री आपस में बात करता दिखता तो तुरन्त सतर्क कर दिया जाता था । आपस में बात करने के कारण कुछ यात्रियों की पिटाई भी कर दी गई थी । अधिकांश यात्रियों को तीन दिन बाद मालूम हुआ कि अपहृत विमान कंधार में है।

- ऐसे कुछ यात्रियों ,जो हट्टे –कट्टे दिखते थे और अपहरणकर्ताओं को जिनसे कुछ खतरा हो रहा था , की अलग से पिटाई भी कर दी गई थी । बीच–बीच में भी कुछ लोगों की ओर अपहरणकर्ता विशेष ध्यान देते थे। उनको किसी न किसी बहाने से या तो धमका देते थे या अलग बिठा देते थे ।

- यात्रियों की बैठक व्यवस्था में भी अपहरणकर्ताओं द्वारा सतर्कता बरती गई थी । बच्चों और महिलाओं को एक तरफ बिठाया गया था ,दम्पत्तियों को एक तरफ और पुरूषों को बीच में बैठाया गया था ,ताकि अपहरणकर्ता उन पर सही प्रकार से निगरानी कर सकें ।

- ''स्टॉकहोम सिन्ड्रोम ''के तहत अपहरणकर्ताओं द्वारा यात्रियों की सहानुभूति प्राप्त की जा रही थी। चुटकुले , शेर और अन्ताक्षरी आदि से वे अपने प्रति यात्रियों में अच्छी भावना पैदा करने का प्रयास भी कर रहे थे । इस्लाम पर भाषण ,भारत सरकार द्वारा कोई कार्यवाही न करने ,भारतीय डेलीगेशन द्वारा कंधार में पिस्ता–बादाम खरीदने की बातें करके यात्रियों को प्रभावित तथा दिग्भ्रमित करने में वे काफी हद तक सफल रहे थे। हमारे वापस आने के बाद हमारे एक सहयोगी ने बताया कि वे भी 1993 में हैदराबाद से दिल्ली जा रहे अपहृत विमान में थे और उनके विमान के अपहरणकर्ता भी इस्लाम पर आधे घण्टे तक भाषण दिया था और यात्रियों ने तालियां बजाई थीं ।

- पायलट द्वारा आरम्भ से अन्त तक माइक पर या व्यक्तिगत रूप से चर्चा में यात्रियों को यही सुझाव दिया गया कि यात्री शांत रहें, 'कूल मेनटेन रखें' ,'कोआपरेट करें'; सब ठीक हो जावेगा । पायलट ने दूरदर्शन, तथा अन्य मीडिया साक्षात्कार में यही सलाह दी कि ऐसी परिस्थितियों में संयम बरतें ,धैर्य रखें और शांत रहें । सब्र का फल मिठा होता है । विमान के बुजुर्ग चीफ इंजीनियर ने भी इसी प्रकार की सलाह दी थी । चूँकि यात्रियों को पायलट और चीफ इंजीनियर पर काफी भरोसा था , इसलिए उनकी सलाह यात्रियों के लिए काफी महत्त्वपूर्ण थी ।

- एक महत्त्वपूर्ण आयाम यह भी है कि ऐसी परिस्थितियों से जूझने और अपहरणकर्ताओं से लड़ने के लिए एक विशेष मानसिक स्थिति और तैयारी की आवश्यकता होती है । सामान्य व्यक्ति में ऐसी स्थिति में इस प्रकार की मानसिक स्थिति का निर्मित होना बहुत ही असामान्य बात है । जहां अपहरणकर्ता एक ओर मानसिक रूप से तैयार थे और सुसंगठित तथा सुनियोजित थे ,वहीं दूसरी ओर यात्री सकते की स्थिति में थे,अनुभवहीन थे और असंगठित थे । वे कोई योजना बनाने की स्थिति में भी नहीं थे ।

- यात्रियों को विमान के बाहर हो रही वार्ता का विशेष ज्ञान नहीं था । आतंकवादियों को छोड़ा जा रहा है अथवा अपहरणकर्ताओं को भी पकड़ने का प्रयास किया जा रहा है ,यह सब हमारे लिए अनिश्चित था । हमें तो अन्त तक यही आभास हो रहा था कि आतंकवादियों को छोड़ने का छलावा कर अपहरणकर्ताओं को या तो पकड़ लिया जायेगा या इन्हें मार दिया जायेगा । हमें उस समय इस बात का अन्दाज नहीं हो पा रहा था कि तालिबान में होने के कारण यह सब कुछ संभव नहीं था । भले ही बन्धकों ने अपहरणकर्ताओं पर हमला नहीं किया ,परन्तु हमें ऐसा लगा

कि सभी शायद यही चाहते थे कि आतंकवादी नहीं छोड़े जायें और अपहरणकर्ता भी पकड़ लिये जायें ।

कुछ प्रतिक्रियांए

- इन्टरनेट के रेडीफ वेबसाइट पर एक सर्वेक्षण (ओपिनीयन पोल) में यह बात उभर कर आई कि अधिकांश व्यक्ति इस पक्ष में थे कि बन्धकों को किसी भी प्रकार छुड़ाना चाहिए ,बन्धक यात्री सुरक्षित रहने चाहिए । सर्वेक्षण में 35 प्रतिशत लोगों का यह मत था कि बन्धकों के बदले आतंकवादियों को छोड़ देना चाहिए,जबकि 45 प्रतिशत लोगों का यह मत था कि आतंकवादियों को नहीं छोड़ना चाहिए । इनमें से 73 प्रतिशत लोगों का अभिमत था कि बन्धकों को छुड़ाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए । इसका तात्पर्य यह है कि जो लोग यह सोचते थे कि आतंकवादियों को नहीं छोड़ना चाहिए ,उनमें से भी अधिकांश यह चाहते थे कि आतंकवादियों को भी न छोड़ना पड़े परन्तु बन्धक भी छूट जायें । केवल 6 प्रतिशत लोगों का ही यह अभिमत था कि भले ही बन्धक मारे जावें आतंकवादियों को नहीं छोड़ना चाहिए । शेष लोगों ने अपना स्पष्ट अभिमत नहीं दिया । सर्वेक्षण में अपना अभिमत देने वाले सभी भारतीय थे । जिन लोगों का यह मत था कि आतंककवादियों को बन्धकों के लिए छोड़ दिया जावे ,उनमें से अधिकांश यह चाहते थे कि आतंकवादियों को फिर से पकड़ लिया जावे । कुछ लोग चाहते थे कि भले ही बन्धकों के बदले आतंकवादियों को छोड़ना पड़े परन्तु बाद में आतंकवादियों को और अपहरणकर्ताओं को भी पकड़ लेना चाहिए ।

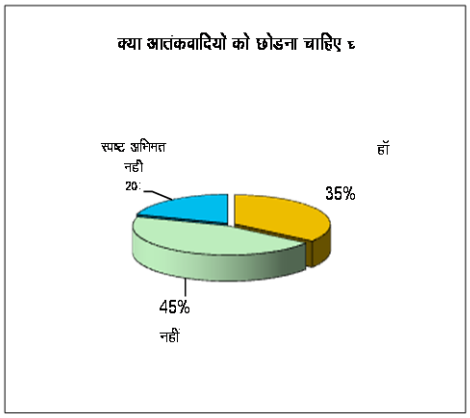

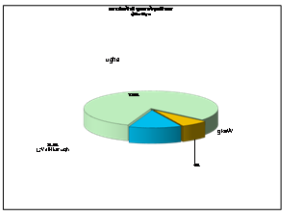

- टाइम्स ऑफ इंडिया दैनिक समाचार पत्रा के द्वारा कराये गये एक सर्वेक्षण में इस अपहरण से संबंधित तीन प्रश्न पूछे गये ,जिनमें पाठकों की प्रतिक्रिया निम्नानुसार रहे :

- ✓ क्या अपहरणकर्ताओं से बातचीत और पहले शुरू होना चाहिए थी ?(वास्तव में भारतीय डेलीगेशन दिनांक 27–12–99 के लगभग सांय काल कंधार पहुॅचा)।

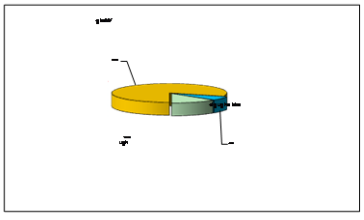

✓ क्या भारत सरकार को अपहरणकर्ताओं की मांगे माननी चाहिए ?

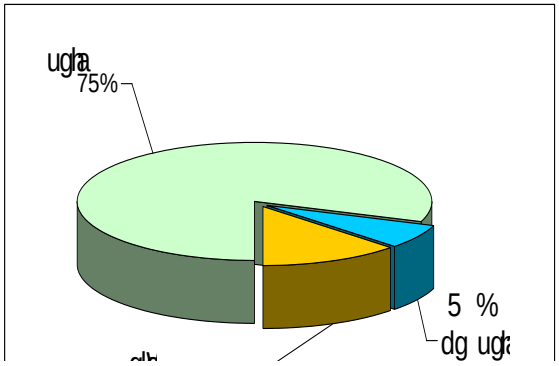

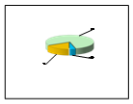

✓ क्या भारत सरकार को तालिबान को अंतरराष्ट्रीय मान्यता देनी चाहिए ?

➢ आतंकवाद नियंत्राण एवं उन्मूलन के विशेषज्ञ श्री के0पी0एस0गिल का कहना है कि नये मिलेनीयम में हमें सभी प्रकार के आतंकवाद के खिलाफ एक मुहीम छेड़नी पड़ेगी ,भले ही इन आतंकवादियों का कोई भी उद्देश्य हो । अमृतसर से अपहृत विमान के निकल जाने के सम्बन्ध में गिल का कहना है कि अमृतसर से विमान को निकल जाने देना एक बहुत बड़ी अक्षम्य भूल थी । अपनी सारहद से विमान को जाने देने का अर्थ था अपने नियंत्राण के बाहर जाने देना । 1993 के अपहरण प्रकरण में अमृतसर में ही कमाण्डों एक्शन द्वारा एक आतंकवादी को मार गिराया गया था । इस बार भी यह संभव हो सकता था। इनका यह भी कहना था कि भले ही पूर्व में कभी बन्धकों के बदले आतंकवादियों को छोड़ा गया हो परन्तु ऐसी भूल दोहराना उचित नहीं होगा । आतंकवादियों के समक्ष किसी भी प्रकार का समर्पण आतंकवाद को बढ़ावा देना है । इनका यह भी कहना है कि इंडियन एयरलाइंस एवं एयर इंडिया के विमानों में अपनी पृथक सुरक्षा जांच होनी चाहिए ताकि विमान में प्रवेश करने के पूर्व यात्रियों की दुबारा सुरक्षा जांच हो सके ।

➢ नेशनल सिक्यूरिटी गार्डस के भूतपूर्व प्रमुख श्री रामदेव त्यागी का कहना है कि विमान पट्टनों एवं विमानों की सुरक्षा व्यवस्था को बहुत अधिक सुदृढ़ करना पड़ेगा । इस अपहरण के घटनाक्रम में कई स्तरों पर अनेक प्रकार की सुरक्षा व्यवस्था की कमियां परिलक्षित हुई हैं । काठमाण्डू हवाई अड्डे पर सुरक्षा व्यवस्था शिथिल हुआ ,जिसके कारण अपहरणकर्ता विमान में प्रवेश कर सके । फिर अमृतसर में भी सुरक्षा व्यवस्था सही समय पर सही कार्यवाही नहीं कर सकी ,जिसके कारण अपहृत विमान वहां से उड़ कर निकल गया । सुरक्षा व्यवस्था को आधुनिक उपकरणों एवं मशीनों से भी लैस करना पड़ेगा।

➢ भोपाल निवासी भारतीय पुलिस सेवा के एक सेवा निवृत्त अधिकारी जो पाकिस्तान–अफगानिस्तान जोन में भी प्रतिनियुक्ति पर सेवा में रहे ,ने हमारी सुरक्षा व्यवस्था

पर विशेष प्रतिक्रिया व्यक्त की । इनका कहना है कि–''हमारी शासकीय कार्यप्रणाली में लापरवाहीपूर्ण (बेंनंससल) कार्य करने की आदत पड़ गई है । हम गम्भीर से गम्भीर मुद्दे को भी बहुत ही कैज्युअली लेते हैं । अपहरण के इस पूरे प्रकरण को भी हमने बड़े सतही ढंग से निपटाया है । अमृतसर से विमान को जाने देना इसका सबूत है । अमृतसर से विमान को जाने देकर हमने अपनी समस्या को दुष्कर और अपने नियंत्राण के बाहर कर लिया ।''इनका यह भी कहना है कि आतंकवाद और देश सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर निर्णय लेने के लिए जिम्मेदार शिर्षस्थ पदों पर इन क्षेत्राों के विशेषज्ञ ही होने चाहिए । प्रशासनिक सेवाओं के अधिकारी इन पदों पर होने से वास्तविक परिस्थितियों का अनुभव न होने के कारण समन्वय और निर्णय लेने में विलम्ब या कठिनाई हो सकती है – इसी का एक प्रत्यक्ष उदाहरण है –अमृतसर में सही समय पर सही कार्यवाही न होना ।

- सुचित्राा की छोटी बहन सोनाली के पति अतुल, जो कि अमेरिका मे रहते हैं और हमारे अपहरण से लौटने के बाद हमसे मिलने आए थे, ने बताया कि अमेरिका में यह धारणा है कि भारत और पाकिस्तान एक दूसरे से नोंक झोंक करते रहते हैं और उलझते रहते हैं तथा एक दूसरे के उपर आरोप लगाते रहते है। इसलिए भारत को आतंकवाद के खिलाफ कार्यवाही करने के लिए ठोस सबूत देने पड़ेगे कि इन आतंकवादी गतिविधियों में पाकिस्तान का हाथ होने की पूरी संभावना है ।

- लौटने के बाद मेरे एक मुसलमान मित्रा मुझसे मिलने आए और अपहरण का किस्सा सुनकर बोले कि – 'अपहरणकर्ताओं ने इस्लाम का गलत अर्थ निकाला है । इस्लाम तो यह सिखाता है कि किसी पर जुल्म नहीं करो । यदि तुम्हारे गले पर कोई तलवार का वार करता है ,तो जब तलवार बिल्कुल गले के पास पहुँच गया हो तो तलवार को रोक कर उससे बचो, परन्तु तलवार चलाने वाले को भी मत मारो।' उन्होंने यह भी कहा कि क्रयामत के दिन (मौत के बाद न्याय का दिन) अपहरणकर्ता ठीक उसी प्रकार
  आपके सामने सर झुकाए बैठा होगा , जिस प्रकार उसने आपको बैठाया और आप उसे हुक्म देंगे । मैने मेरे मित्र से कहा कि मैं ऐसा कभी नहीं चाहूंगा ।

- लौटने के बाद हमारे एक मित्रा अरूणा ने हमें घर पर बुलाया । अरूणा भारतीय प्रशासनिक सेवा में एक वरिष्ठ अधिकारी हैं । घर जाकर पता चला कि उन्होंने हमें क्यों बुलाया । 1993 में जिस विमान का अपहरण हुआ था ,उस विमान में अरूणा भी थीं । एक भावनात्मक जुड़ाव हो गया । अरूणा ने बताया कि वह विमान हैदराबाद से दिल्ली के लिए उड़ा और बीच में इसका अपहरण हुआ । विमान को अपहरणकर्ता पहले लाहौर ले गये , वहां उसको उतरने नहीं दिया गया और विमान अमृतसर में उतारा गया । इस अपहरण में केवल एक ही अपहरणकर्ता था जो कि एक ह्यूमन बॉम्ब (मानव बॉम्ब) था । वह अधिकांश समय कॉकपिट में ही रहा और उसने यात्रियों को ज्यादा यातना नहीं दी । उसने भी इस अपहरण की भांति इस्लाम पर भाषण दिया और सभी यात्रियों ने तालियां बजाई । संभवतः अकेले होने के कारण अपहरणकर्ता शारीरिक और मानसिक रूप से थक गया था और उसने सात घण्टे में आत्मसमर्पण किया और फिर मार डाला गया । अरूणा का कहना है कि अपहरण के दिन उनके मन और मस्तिष्क पर घटना का बहुत अधिक प्रभाव नहीं पड़ा परन्तु घर पहुॅचने के बाद अगले दिन उन्हें तनाव (नर्वस ब्रेक डाउन) महसूस हुआ और वे रोईं । इस घटना के बाद जीवन के प्रति इनका नज़रिये (Attitude) में विशेष परिवर्तन आया । शायद जीवन और भौतिक सुखों के प्रति मोहभंग हुआ और जो चीजें ,जो बातें बहुत महत्वपूर्ण और बड़ी लगती थी ,अब सामान्य और नगण्य (Trivial) लगने लगी ।

कुछ सम्पादकीय

विभिन्न समाचार पत्रों में प्रकाशित कुछ सम्पादकीय प्रतिक्रियाएं यहां उद्धरित किये जा रहे हैं –

विमान अपहरण, आतंकवाद और सरकार

विमान अपहरण कांड की गुत्थियां जिस तरह से एक पर एक सामने आती जा रही हैं उससे बड़े से बड़ा शतरंज खिलाड़ी भी हैरान रह सकता है लेकिन इन सबसे बढ़कर संकट यह है कि इस पूरे शतरंजी खेल में मोहरे की तरह लोग इस्तेमाल हो रहे हैं। यह पूरा प्रकरण अब मात्रा एक सौ साठ–पैसठ लोगों के जीवन का न होकर पूरे भारतीय उपमहाद्वीप और इस क्षेत्र की राजनीति, कूटनीति, अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद, संयुक्त राष्ट्र की पंचायत और हमारे तंत्र की विफलता का बन गया है। जब अपहरणकर्ता विमान को लाहौर, अमृतसर, दुबई होते हुए कंधार ले गए थे तब यह लग रहा था कि बहुत परेशान हैं और उन्हें जगह नहीं मिल रही है। पर अब लगता है कि यह सब कुछ बहुत सोची समझी रणनीति का हिस्सा था और कंधार को बहुत सोच समझकर चुना गया था। विवादास्पद इस्लामी आतंकवादी ओसामा बिन लादेन के दो ठिकाने तो इसी शहर में हैं और तालिबान के नियंत्राण वाले इस शहर में बाकी किसी भी परिंदे के लिए पर मार सकना नामुमकिन है। भारत समेत दुनिया में काफी नगरों पर आतंकवादी हरकतों में शामिल हरकत उल अंसार की ताकत के लिहाज से भी अफगानिस्तान और कंधार अच्छा ठिकाना है। पाकिस्तानी गुप्तचर एजेंसी आई.एस.आई. भी अपने षडयंत्राों के लिए इसे असली मुख्यालय की तरह इस्तेमाल करती है। अब यह स्पष्ट हो गया है कि अपहरण के पीछे यही आतंकवादी संगठन है और वह भारत में बंद मसूद अजहर जैसे अपने कई प्रमुख लोगों को छुड़ाना चाहता है। और अब अगर अपहर्ता विमान में तेल भरने या कहीं और उड़ने का ज़िक्र नहीं कर रहे हैं तो इससे भी लगता है कि उन्हें भरोसा हो चुका है कि वे ठीक ठिकाने पर आ गए हैं और अब सारी चीजें उनके मन मुताबिक हो जाएंगी। पर यह भी लग रहा है कि अपहरण के इस खेल में सिर्फ उनके ही मन लायक काम नहीं हो रहा है, इसमें उन सभी लोगों का स्वार्थ सधने जा रहा है जो इस्लामी आतंकवाद के खेल में भागीदार हैं, जो भारत को परेशान करना चाहते हैं। जो अमरीका से कोई दुश्मनी निकाल रहे हैं और जो कश्मीर के सवाल को अंतरराष्ट्रीय बनाना चाहते थे जो काम पाकिस्तान, तालिबान, ओसामा बिन लादेन वगैरह वर्षों से अनेक प्रयासों से नहीं कर पाए थे वह सब विमान अपहरण के मार्फत हो गया है। भारत सरकार समेत दुनिया के अधिकांश सही सोच वाली सरकारों ने अभी तक तालिबान को मान्यता नहीं दी है, पर अब हमें अपने निर्दोष और भोले यात्रियों की जान की खातिर तालिबान से भी संपर्क करना पड़ा है और जो संयुक्त राष्ट्र तालिबान के आगे घास नहीं डाल रहा था उसे भी दन से अपने प्रतिनिधि कंधार भेजने पड़े। भारत सरकार का प्रतिनिधि वहां नहीं गया है, पर अब उसके बुलावे की भी चर्चा है। और मसूद अजहर जैसे किन किन लोगों को छोड़ना होगा या क्या–क्या करना होगा यह बात अभी तय नहीं है, पर जो भारत सरकार अपहरण को जुर्म और इस तरीके को नाजायज बताकर कठोर रूख अपनाने का दावा कर रही थी वह अब अपहर्ताओं की शर्तों पर विचार करने और रियायत देने पर मजबूर हुई है। जाने अनजाने हमने तालिबान, उग्रवादी जमातों को मंजूरी दी है तो कश्मीर के सवाल को भी अंतरराष्ट्रीय चर्चा का विषय बनाने से नहीं रोक सके हैं। और हमारी सीधी बातचीत से समझौते का अब तक का रवैया भी बदला है। यह मजबूरी में किया गया है, पर काम तो यही हुआ। पाकिस्तान ने और एक हद तक अफगानिस्तान की तालिबान सरकार ने भी होशियारी दिखाई है। वे खुलकर अपहर्ताओं के पक्ष में नहीं आए हैं, पर तालिबान सरकार ने अपहर्ताओं के खिलाफ कार्रवाई करने से मना करके न्याय अन्याय की लड़ाई में किसका पक्ष मजबूत किया है यह बात किसी से छुपी नहीं है।

आज की पाकिस्तान सरकार अगर इसकी मदद करती तो अंतरराष्ट्रीय बिरादरी में उसकी धुनाई और हो जाती और अमरीका तथा भारत से मैत्री की उसकी कोशिश और पीछे ढकेल दी जाती। पर अफगान सरकार ने इसी बहाने अपना कुछ काम तो निकाल ही लिया है। जहां तक हमारी सरकार का सवाल है यह रूबिया सईद के अपहरण वाले प्रकरण की तरह कमजोर साबित नहीं हुई है पर मजबूत भी साबित नहीं हुई है। काठमांडू और नेपाल इस्लामी आतंकवादियों का एक बड़ा केन्द्र बनते जा रहे हैं, यह बात किसी से छुपी नहीं थी। पर नेपाल, जो हमारा सबसे घनिष्ठ पड़ोसी है, के सहयोग से आतंकवाद से निपटने की समझदारी दिखाने की बात तो दूर है जब विमान संजोग से भारत लौट आया और उसे तेल की जरूरत पड़ी तब भी हमने सूझबूझ और चालाकी से विमान को यहीं रोकने तथा इसे अपहर्ताओं से मुक्त कराने की कोई तैयारी नहीं दिखाई। अब जो खबरें आ रहीं हैं उसमें तो लगता है कि एनएसजी के लोग ऐसी किसी भी आपातस्थिति से निपटने को तैयार थे। ऐसे सफल आपरेशन पहले भी हुए हैं, पर ऊपर से फैसले लेने में देरी और गड़बड़ हुई। और इस ऊपर का हाल यह है कि एक मंत्री जी को अपनी जुबान बंद रखने का निर्देश खुद सरकार को देना पड़ा और दूसरे की सेवा अपहर्ताओं से छूटे 26 यात्रियों को वापस लाने भर के लिए ली गई। इसे शुभ लक्षण मानना चाहिए कि सरकार ने जल्दी ही यह मान लिया कि यह सिर्फ नागरिक उड्डयन विभाग का काम नहीं है, ना ही गृह मंत्रालय का। यह पूरी सरकार की, पूरे देश की जिम्मेवारी है और विदेश मंत्री जसवंत सिंह को ही अधिकृत बातें कहने का जिम्मा दिया गया है। सरकार की तरफ से हुई ढील और गड़बड़ की सूची बहुत बड़ी है, पर उन्हें अभी और यहां गिनाने का कोई लाभ नहीं है। काठमांडू से हुए अपहरण की तुलना अगर कारगिल में घुसपैठ से की जा रही है तो यह उचित है। और तब यह सवाल पूछने का हक हम सभी को है कि जिस कारगिल की जीत का ढिंढोरा सरकार पिटती रही है उससे उसने क्या सबक सीखा है। आखिर पाकिस्तान, तालिबान और इस्लामी आतंकवादियों को दोष देकर क्या मिलेगा क्योंकि यह सब काम घोषित रूप से कर रहे हैं। जहां मियां नवाज शरीफ को टें बुलवा दिया गया वहां हम पर उलट कर बार न होगा यह मानना होशियारी का प्रमाण तो नहीं है। आतंकवाद भी हमारे क्षेत्रा में अचानक नहीं आया है। आज अगर हमारे इतने लोगों के प्राण संकट में फंसे हैं तो उसके लिए हमारे लापरवाही और सुस्ती मुख्य कारण है। (सम्पादकीय, हिन्दुस्तान, 27/12/99)

इस्लामी आतंकवाद के निशाने

इंडियन एअरलाइंस के आई.सी. 814 विमान का अपहरण करने वाले कौन हैं और इनको बल व प्रोत्साहन कहां से मिल रहा है, यह बात अब लगभग उजागर हो गयी। पहले इस बात को सिर्फ संयोग माना जा रहा था कि आतंकवादी अपहृत विमान को पाकिस्तान ले जाना चाह रहे थे और अंततः अफगानिस्तान की तालिबान हुकूमत का इस पूरी घटना के प्रति जो रवैया रहा है उससे साफ हो जाता है कि ये हुकूमतें अपहरणकर्ताओं के विरुद्ध किसी भी तरह की ठोस कार्रवाई या दबाव बनाने के पक्ष में नहीं हैं, बल्कि भारत की बेबसी का मजा ले रही हैं। वजह साफ है कि मौजूदा दौर में इस्लामी आतंकवाद के सबसे बड़े पैरोकार और आश्रयदाता पाकिस्तान और अफगानिस्तान ही हैं। कभी इस धार्मिक आतंकवाद का सबसे बड़ा केन्द्र पश्चिम एशिया और उत्तरी अफ्रीका में हुआ करता था लेकिन लंबी जद्दोजहद के बाद जब आतंकवादी कार्रवाइयां निरर्थक साबित हो गयीं तब अमरीकी मध्यस्थता से इस्राइल और फिलिस्तीन के बीच बातचीत से शांति समझौता हो गया। इस्लामी आतंकवाद के दूसरे बड़े सरपरस्त लीबिया के कर्नल कज्जाफी हुआ करते थे जो अब स्वयं थककर बूढ़े हो चुके हैं। ओसामा–बिन लादेन धर्म के नाम पर आतंकवाद की दुकान चलाने की कोशिश कर रहा है। उसकी मौजूदा शरणस्थली अफगानिस्तान है और यहां से वह दुनिया भर में आतंकवादी गतिविधियों को नियंत्रित करता है। अभी हाल में ही लादेन की आतंकवादी कार्रवाइयों से कुपित होकर अमरीका ने अफगानिस्तान के उन इलाकों पर हवाई हमले भी किये थे जहां इस्लामी आतंकवाद के नियमित शिविर थे। ये प्रशिक्षण शिविर भारतीय सीमा से लगी हुई पाकिस्तान–अफगानिस्तान सीमा क्षेत्रा में आज भी न सिर्फ धड़ल्ले से चल रहे हैं बल्कि पाकिस्तान में फौजी हुकूमत कायम होने और अफगानिस्तान पर तालिबान के काबिज होने के बाद और गर्मजोशी से चल रहे हैं, क्योंकि ये सरकारें स्वयं इन शिविरों को चला रहीं हैं। इन सरकारों को अभी तक दुनिया के किसी सभ्य देश से मान्यता नहीं प्राप्त हुई है इसलिए किसी वैधानिक अंतरराष्ट्रीय मंच के जरिये इन पर दबाव बनाना भी लगभग निरर्थक है, लेकिन इतना तो तय है कि ये देश कोई दुनिया से ऊपर नहीं है और भारत ठीक से कूटनीतिक प्रयास करे तो विश्व समुदाय को यह समझाना आसान है कि आज भले भारत इसकी चपेट में है पर आतंकवाद का फलना–फूलना और उसके मंसूबे बढ़ना किसी के भी हित में नहीं है। अतीत में ऐसे अनेक उदाहरण मौजूद हैं जब अमरीका और यूरोपीय देशों ने अपने राजनीतिक–आर्थिक हितों के लिए नाकाफी बहानों के बावजूद संयुक्त राष्ट्र को कवच बनाकर कई देशों के विरुद्ध सैनिक कार्रवाई तक की है। क्या धार्मिक आतंकवाद का सिर कुचलने के लिए और उसकी जड़ें उखाड़ने के लिए इनके आश्रयदाता देशों को सबक नहीं सिखाया जा सकता ? ओसामा–बिन–लादेन यह कहने का दुस्साहस करता है कि इस वक्त भारत, अमरीका और रूस इस्लाम के सबसे बड़े दुश्मन हैं! क्या इससे यह साफ नहीं हो जाता है कि इस्लामी आतंकवाद के निशाने पर मुख्यतः कौन–कौन से देश हैं। भारतीय विमान का अपहरण इसका एक उदाहरण है और भविष्य में आतंकवादियों द्वारा ऐसे अनेक उदाहरण बनाये जा सकते हैं, इसलिए अंतर्राष्ट्रीय बरादरी को यह नहीं समझना चाहिए कि यह महज भारत का मसला है। यह हर उस सभ्य देश का मसला हो सकता है जो नागरिकों को कीड़ा–मकौड़ा नहीं समझते और मानवाधिकारों को उचित सम्मान देते हैं। भारत सरकार की अपनी चूकें स्पष्ट हैं जिनका खामियाजा उसे भुगतना पड़ा अन्यथा विमान को अमृतसर हवाई अड्डे पर रोकना असंभव नहीं था, लेकिन अनिर्णय और अंततः गलत निर्णय के बीच फंसी रही सरकार के हाथ से बाजी निकल कर

अपहरणकर्ताओं के हाथ आ गयी और वे विमान लेकर अपने 'गृह प्रदेश' कंधार पहुंचने में सफल हो गये। किसी भी शर्मदार सरकार के लिए यह निश्चय ही लज्जा और ग्लानि की बात है कि उनके निर्दोष नागरिकों को भाड़े के गुंडे बंधक बनायें और यातनाएं दें। लेकिन भारत सरकार ने अपनी गफलत से यदि कोई सबक सीखा है तो उसे अपने आसपास आतंकवाद के कसते शिकंजे को तोड़ने का प्रयास प्राथमिकता के आधार पर शुरू कर देना चाहिए, वरना भविष्य में उसे ऐसी कई ग्लानिपूर्ण और लज्जास्पद घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है, क्योंकि आज की तारीख में भारत इस्लामी आतंकवाद के निशाने पर सबसे ऊपर है और उसके पड़ोसी मुल्क ही इस आतंकवाद के सबसे बड़े आश्रयदाता हैं जिनसे हमारे संबंध भी सामान्य नहीं हैं। इस संदर्भ में सकारात्मक बात यही है कि विश्व जनमत आतंकवाद के विरुद्ध है, इसलिए भारत सरकार को चाहिए कि वह आतंकवाद विरोधी वैश्विक जनभावनाओं का उपयोग करते हुए एक ठोस अंतर्राष्ट्रीय गोलबंदी की मुहिम में जुट जाए। हमारे लिए यह आतंकवाद तात्कालिक समस्या तो है ही लेकिन जबसे हम इसे झेल रहे हैं, हमारी सरकारें जिस केजुअल ढंग से इसे डील कर रहीं हैं उससे यह हमारी स्थाई समस्या बनता जा रहा है, इसलिए समय आ गया है कि इस समस्या पर रुटीन से हटकर थोड़ा गंभीरता से विचार किया जाए और इसके संपूर्ण सफाये की कोई ठोस कार्ययोजना बनायी जाए। (संपादकीय, हिन्दुस्तान, 28.12.99)

सबक लेने का समय

इंडियन एयरलाइंस के विमान अपहरण की बर्बर घटना ने सरकार के संकट प्रबंधन ग्रुप ,सुरक्षा, तंत्रा, गुप्तचर एजेंसी और प्रशासनिक व्यवस्था को अवसर दिया है कि वे अपनी कार्यशैली और रणनीति में सुधार करें। केंद्र सरकार यदि पंजाब ,जम्मू कश्मीर और उत्तर प्रदेश की खुफिया एजेंसियों की सूचना पर अमल करती तो विमान अपहरण की घटना को टाला जा सकता था। इन राज्यों की खुफिया एजेंसियों ने चार महिने पहले एक रिपोर्ट के माध्यम से गृह मंत्राालय को सूचना दी थी कि लश्कर–ए–तोइबा , अल जेहाद और खालिस्तान जिंदाबाद फोर्स अन्य उग्रवादी संगठनों के साथ मिलकर कोई बड़ी साजिश रच रहे हैं। अमेरिका ने भी अनेक बार संकेत दिये कि आतंकवादी संगठन यात्राी विमान के अपहरण की योजना बना रहे है । नेपाल के नागरिक उड्डयन मंत्राी ने भी स्वीकार किया कि तीन माह पूर्व उन्हें यह सूचना मिली थी कि त्रिाभुवन हवाई अड्डे पर अपहरण या विस्फोट जैसी घटना हो सकती है । इन सब सूचनाओं के संदर्भ में यह सबक अवश्य मिलता है कि हमारा गुप्तचर तंत्रा और सुरक्षा बलों के बीच अच्छा समन्वय हो।

गुप्तचर एजेंसियों और केन्द्र सरकार को भली–भांति मालूम है कि नेपाल , बांगलादेश, भूटान में पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आइ.एस.आई ने अपना जाल बिछा रखा है। अपेक्षा की जाती है कि हमारे राजनयिक विदेशों में भारत के खिलाफ की जा रही आतंकवादी गतिविधियों पर नजर रखें। तीसरा सबक हमें इसराइल द्वारा विमान अपहरण की घटनाओं के बाद की गई व्यवस्था से लेना होगा । इसराइल के हर विमान में निजी कमांडो साथ चलते है । अमेरिकी गुप्तचर एजेंसी द्वारा आगाह करने के बाद ही इंडियन एयरलाइंस को अपनी उड़ानों में कमांडों की व्यवस्था करनी थी । इस ओर ध्यान न देने का नतीजा यह हुआ कि उग्रवादी पिस्तौल और ग्रेनेड सरीखे हथियार लेकर विमान में घुस गये। यद्यपि अमृतसर हवाई अड्डे से अपहृत विमान बिना ईंधन लिये ही उड़ा और भारतीय कमांडो को यात्रियों और चालको को बचाने का मौका नहीं मिला लेकिन विशेषज्ञों की राय में पुलिस के पास हवाई अड्डे पर उतरते ही विमान के पहियों को शूट करने का विकल्प खुला था। लेकिन विशेष संकट प्रबंधन ग्रुप के अधिकारियों को पता ही नहीं था कि क्या करना है, जबकि इसके लिये दिशा निर्देश बिल्कुल स्पष्ट हैं । दरअसल अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद से निपटने के लिये प्रशासनिक ढिलाई, लापरवाही और गुप्तचर एजेंसी तथा सुरक्षा बलों के बीच समन्वय का अभाव बहुत मंहगा साबित होता है। अपहरण कांड ने यह सोचने पर भी विवश किया कि अतिरिक्त चौकसी त्रेड अलर्ट ञ या 'कड़ी जांच' केवल घटनाओं के बाद की कार्यवाही का अंग ही नही बनना चाहिये , बल्कि सामान्य प्रकिया होनी चाहिये । आतंकवादी गतिविधियों से निपटने के लिये केवल अत्याधुनिक हथियार ही नहीं, बल्कि सशक्त गुप्तचर तंत्र भी होना चाहिये । बहरहाल, पाकिस्तान की मिलीभगत से जिस प्रकार विमान अपहरण का अंतरराष्ट्रीय षड़यंत्रा रचा गया वह हमारे नीति निर्धारकों के लिये आत्मचिंतन का विषय भी है और भविष्य के लिये सबक लेने का भी। (संपादकीय , दैनिक भास्कर , 29 दिसंबर 1999)

विमान अपहरण : मांगों से जुड़ी गुत्थियां

विमान अपहरण कांड में अपहर्ताओं द्वारा रखी गई मांगों से जुड़ी गुत्थियां जिस तरह से एक के बाद एक सामने आती जा रही हैं उनसे यह स्पष्ट हो गया है कि समूचा प्रकरण राजनीति, कूटनीति और अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद का खेल बन गया है। जब–जब पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी आई.एस.आई. और आतंकवादी संगठन भारतीय सुरक्षा बलों से आमने–सामने की लड़ाई में नाकामयाब हुए हैं, तब–तब उन्होंने अपहरण का रास्ता अपनाया है। पाकिस्तान की सैनिक सरकार ने सोची–समझी रणनीति रचकर अपहृत विमान को लाहौर से कंधार की ओर रवाना कर दिया ताकि पाकिस्तान का भारत को आतंकित करने का उद्देश्य पूरा हो और इसका काला दाग पाकिस्तान के माथे पर न लगे। अफगानिस्तान की तालिबान सरकार पूरा सहयोग कर रही है। उसने अपहर्ताओं को यह भी धमकी दी है कि यदि किसी यात्री को कोई नुकसान पहुंचाया गया तो विमान पर धावा बोल दिया जाएगा। तालिबान के विदेशमंत्री वकील अमहद मुत्तवकिल के कथनानुसार अफगानिस्तान ने अपनी नैतिक जिम्मेदारी मानते हुए यात्रियों की सुरक्षा के बेहतर उपाय किए और अब संकट का समाधान निकालना भारत का मामला है। अपहृत विमान के कंधार पहुंचने के पीछे उग्रवादियों की यह भी रणनीति थी कि इस्लामी उग्रवादी ओसामा बिन लादेन के दो ठिकाने कंधार में है। जहां तक अपहर्ताओं की मांग का संबंध है, ये मांगे भारत की मजबूरी के संदर्भ में उसे झुकाने और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत को नीचा दिखाने की चाल है। पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी ने सिर्फ अपहरण की योजना ही नहीं रची बल्कि बाद में जिस तरह का रवैया उसने अपनाया उससे भी इस बात की पुष्टि होती है कि वहां के सैनिक शासन ने एक ओर चार पाकिस्तानी नागरिकों को काठमांडू भेजने की योजना बनाई और दूसरी ओर कश्मीर में सुरक्षा बलों के शिविरों पर हमले करने की कार्रवाई तेज की। इस्लामाबाद में भारतीय दूतावास की संचार व्यवस्था ठप की गई और भारतीय विमान को पाकिस्तान के ऊपर से उड़ने की मंजूरी देरी से दी गई। विचित्रा बात यह है कि पाकिस्तान ने विमान अपहरण में भारतीय खुफिया एजेंसी के शामिल होने की आशकां व्यक्त करते हुए कहा कि विमान में भारत की खुफिया एजेंसी रॉ का एक एजेंट भी है। यह संभव है कि अपहरण में पाकिस्तान के अलावा अफगानिस्तानी आतंकवादियों की मिली भगत रही हो लेकिन अफगानिस्तान की तालिबान सरकार के रवैये से भी यह स्पष्ट झलक मिलती है कि वह खुद को अंतरराष्ट्रीय समुदाय से जोड़ने की इच्छुक है। इसलिए उसने अपहरण कांड की समस्या के समाधान में संयुक्त राष्ट्र की अधिक सक्रियता की मांग की। जहां तक अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद का सवाल है ओसामा बिन लादेन स्पष्ट रूप से घोषणा कर चुका है कि भारत, रूस और अमेरिका इस्लाम के दुश्मन है। इसलिए यह आवश्यक है कि आतंकवाद के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय कानून बने। इस मामले में संयुक्त राष्ट्र को पहल करनी चाहिए और सुरक्षा परिषद की बैठक में आतंकवाद के खिलाफ की जाने वाली कार्रवाई के प्रारूप तय होना चाहिए। दरअसल भारत, रूस, चीन, अमेरिका जैसे आतंकवाद प्रभावित देशों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आतंकवाद विरोधी जनमत तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होगी। यह समय है जब विश्व की आतंकवाद विरोधी जन भावनाओं का उपयोग करते हुए एक ठोस अंतरराष्ट्रीय गोलबंदी की मुहिम जुटाई जाए। (संपादकीय, दैनिक भास्कर, 30.12.99)

संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका व मुस्लिम देशों से अपेक्षित भूमिका

बीसवीं सदी के अंतिम दिनों ने इंडियन एअरलाइंस के विमान अपहरण की बर्बर घटना के संदर्भ में संयुक्त राष्ट्र, अमेरिका समेत पश्चिमी देशों और मुस्लिम मुल्कों के समक्ष विरासत में कुछ सवाल छोड़े है। जब आतंकवाद का शिकार पश्चिमी समाज होता है तो वह आतंकवादियों के खिलाफ कठोरतम कार्यवाही करने में नहीं हिचकता। जब यूरोप में किसी आतंकवादी कार्यवाही में अमेरिकी मारा गया तो अमेरिका ने सीधे लीबिया के राष्ट्रपति गद्दाफी के महल पर बमबारी की थी, क्योंकि उस कार्यवाही में लीबिया के आतंकवादियों का हाथ होने के संकेत मिले थे । कुछ समय पूर्व ओसामा बिन लादेन को मारने के लिये अमेरिका ने अफगानिस्तान में मिसाइलें दागीं जिसमें लादेन तो बच निकला पर दूसरे लोग मारे गये । अधिक समय नहीं हुआ जब कोसोवो की समस्या सुलझाने के लिये नाटो देशों ने यूगोस्लाविया पर सत्तर दिनों तक बमबारी की जिसमें सैकड़ों सामान्य लोग मारे गये। बहरहाल अमेरिका और यूरोपीय देशों ने अपने राजनीतिक और आर्थिक हितों को साधने के लिये संयुक्त राष्ट्र का कवच बनाकर आतंकवादियों और विरोधियों के विरूद्व कार्यवाही की। प्रश्न उठता है कि अमेरिका ने विमान अपहरण की घटना के लिये रूस द्वारा सुरक्षा परिषद् की बैठक बुलाने की मांग को क्यों अस्वीकार कर दिया? रूस ने अवश्य अपहृत विमान के बंधकों को मुक्त कराने में हरसंभव सहायता देने की पेश्कश की लेकिन अमेरिका एवं अन्य पश्चिमी देशों से इस प्रकार के कोई संकेत नहीं मिले। अंतरराष्ट्रीय आतंकवादियों द्वारा किसी भी राष्ट्र के विमान अपहरण और उनकी भारी भरकम मांगों के परिप्रेक्ष्य में सुरक्षा परिषद की बैठक न बुलाई जाना या संयुक्त राष्ट्र का केवल मानवीय सहायता तक सीमित रहना, शुभ संकेत नहीं हैं । अमेरिकी खुफिया ऐजेंसी और अमेरिकी संसद की दक्षिण एशिया समिति द्वारा पाकिस्तान समर्थित आतंकवादी गतिविधियों की पुष्टी करने के बाद भी अमेरिका पाकिस्तान को आतंकवादी घोषित नहीं कर रहा है। अब जबकि भारतीय विमान अपहरण कांड के परिप्रेक्ष्य में यह स्पष्ट हो चुका है कि इसके पीछे पाकिस्तान का सीधा हाथ है, मुस्लिम मुल्कों को भी सोचना होगा कि वे इस्लाम की दुहाई के नाम पर कब तक अपनी चुप्पी साधे रहेंगे। भारत के तमाम इस्लामी विद्वान ओर मुस्लिम संगठनों ने भी अपहरण कांड को गैर इस्लामी करार दिया है। मुस्लिम मुल्कों को इस्लाम के नाम पर दहशतगर्दी फैलाने वाले इस्लाम विरोधी मंसूबों को समझना होगा। और इस्लाम की सही व्याख्या कर आतंकवादी हरकतों को गैर इस्लामी करार देना होगा। बीसवीं सदी की दहलीज पर खड़ा संसार कब तक अपेक्षा करता रहेगा कि दुनियाभर के मुस्लिम विद्वान इस्लाम की सही व्याख्या करते हुये इस्लामी आतंकवाद को गैर इस्लामी करार देंगे। अमेरिका एवं संयुक्त राष्ट्र को भी नई भूमिका निभाते हुये यह तय करना होगा कि इस प्रकार की घटनाओं के प्रति क्या सुरक्षा परिषद् निष्क्रिय रह सकती है? अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद को शह देने वाले देशों को कब तक आतंकवादी घोषित नहीं किया जायेगा? (सम्पादकीय , दैनिक भास्कर , 31 दिसंबर 1999)

संदिग्ध जीत का सिलसिला

नए साल, नई शताब्दी, नई नई सहस्त्राब्दी की शुरुआत के लिहाज से देखें तो विमान अपहरण कांड का सिरदर्द समाप्त होने को एक शुभ समाचार माना जाना चाहिए। जिन 154 लोगों की रिहाई तीन आतंकवादियों को छोड़ने के चलते हुई है, उनके घर तो सचमुच आज रात घी के दिए जलेंगे–उनके लिए तो सहस्त्राब्दी का आगमन सच्चे अर्थों में एक नए युग का आगमन था। पराए देश में, पराए माहौल में और खूंखार आतंकवादियों की बंदूक के साए में इन 154 लोगों के दिन कैसे बीते होंगे इसकी भी सिर्फ कल्पना ही की जा सकती है। उनकी खुशी भी अपार होगी और इस सबके संग हम सभी, अर्थात पूरा देश खुश होगा, राहत की सांस लेगा। दिनों से इनके संग हमारी भी जान अटकी हुई थी और अभी यह हिसाब लगाने का खास अवसर नहीं है कि अपहरण किन–किन चूकों की वजह से हुई और बाद में हुई किन–किन गलतियों के चलते विमान सीधे विन लादेन के अड्डे पर ही जा पहुंचा था। यह सब चीजें बाद की हैं और इनका हिसाब बाद में होगा भी। अभी सिर्फ यह हिसाब लगाने का अवसर है कि इन 154 लोगों को छुड़ाने के लिए सरकार ने जो कीमत चुकाई है वह उचित है या अनुचित। तीन आतंकवादियों को छोड़ा गया है। अपहर्ताओं को छोड़ा गया है। अपहर्ताओं की शुरुआती मांगों के हिसाब से तीन में से एक और मांग में भी छत्तीस की संख्या से सिमटकर तीन पर आ जाने से यह लग रहा है कि सौदा ठीक पटा है। सभी छत्तीसों आतंकवादी वैसे ही खूंखार हैं जैसे ये तीन हैं– भले ही हम इन तीनों को अपहर्ताओं की नजर में ज्यादा उपयोगी पाएं। आखिर हमारे पास बहुत विकल्प नहीं बचे थे। कंधार में न तो हम कमांडो भेज सकते थे ना ही 154 लोगों को उन शैतानों के रहमोकरम पर छोड़ सकते थे। और मामला सिर्फ इन लोगों की जान भर का नहीं था। अफगानिस्तान के अधिकांश इलाकों पर शासन कर रहे तालिबान ने हमारे साथ खास असहयोग नहीं किया, पर वे किसी मित्रा शासक की तरह भी पेश नहीं आए। अपहृत विमान के लिए पार्किंग चार्ज मांगना भी एक प्रतीकात्मक कदम ही है। लेकिन इस अवसर पर कुछ कठोर सवाल भी उठाने ही होंगे। आखिर एक दिन में ही अपहर्ताओं ने एक मृत आतंकवादी (जो अफगान था) के शव के अवशेष और 20 करोड़ डालर रुपयों की मांग क्यों छोड़ दी थी। ये बातें अपहर्ताओं के अफगानिस्तान और तालिबान से रिश्ते या उनका दबाव मानने का संकेत देती हैं। दुनिया में कहीं भी अपहर्ता पैसे नहीं मांगते–अक्सर कोई दूसरी मांग और अपने लिए सुरक्षित निकलने का रास्ता ही मांगा जाता है। इस पूरी समझौता बातचीत में अपहर्ताओं ने कभी सुरक्षित निकलने का रास्ता नहीं मांगा। अफगान आतंकवादी के शव के अवशेष की मांग भी किसी दबाव में ही छोड़ी गई। फिर यह भी ध्यान देने की बात है कि जब अपहर्ताओं में आपसी विवाद बढ़ने तथा इस पूरे कांड में पाक गुप्तचर एजेंसी आई.एस.आई. का हाथ होने के प्रमाण सामने आने लगे तभी जाकर समझौता हुआ। बहुत संभव है कि थोड़ा और वक्त लेने से ये दोनों चीजें ज्यादा आगे बढ़तीं और हमें अपेक्षाकृत बेहतर शर्तें मनवाने में सुविधा होती। आखिर जिस मौलाना मसूद अजहर को अब छोड़ा गया है वह कम खूंखार नहीं है। उसे छुड़ाने के पांच प्रयास पहले भी हो चुके थे। वह फरवरी 1994 से ही हमारे यहां कैद था वरना उसने और उत्पाद मचवाया होता। अहमद उमर शेख अप्रैल 1996 में दिल्ली में उत्पाद मचवाने के षड़यंत्रा के साथ गिरफ्तार हुआ था और मुश्ताक अहमद जरगर नामक जो तीसरा आतंकवादी छूटा है उसने भी असंख्य लोगों की हत्या की थी। वह उन दोनों की तरह हरकत उल अंसार से जुड़ा न होकर अल उमर तंजीम का सरगना है। जाहिर है ऐसे तीन खूंखार लोगों को छोड़ने के बाद भारत सरकार और प्रधानमंत्राी का वह दावा तो कहीं नहीं रहा कि किसी तरह का सौदा नहीं करेंगे। और चाहे अनचाहे इस प्रकरण की तुलना भी रूबिया सईद की रिहाई वाले कांड से होगी। दोनों को पलड़े पर रखें तो यह सौदा बेहतर लगेगा, लेकिन इस सच्चाई को भी ध्यान रखना होगा कि तब कश्मीर समस्या और आतंकवाद इस रूप में नहीं थे जैसा कि अब है। लेकिन इस सच्चाई से भी नजर नहीं फेरी जा सकती कि इस बार भारत ज्यादा अकेला था और निपट परदेश का मामला था। हमने तालिबान सरकार को मान्यता नहीं दी है, भले राष्ट्र संघ और हमारी बातचीत से उसे कुछ वैधता मिल गई हो। फिर इस बार अमरीका ने भी आखिर में रूख पलट दिया। राष्ट्रपति बिल क्लिंटन को अपहरण से ज्यादा बड़ी

समस्या कश्मीर दिखने लगी। अमरीकी अखबार अपहर्ताओं के आगे न झुकने का उपदेश देते रहे कि इससे आतंकवाद बढ़ेगा लेकिन जब उनके राष्ट्रपति इस प्रत्यक्ष आतंकवाद की जगह एक व्यर्थ के विवाद को उठाना ही प्राथमिकता मानते हों तो हमें अपनी लड़ाई खुद ही लड़नी होगी। यह बात हमसे ज्यादा हमारी सरकार को समझने की जरूरत है जो कभी बम फोड़कर बहादुरी दिखाती है तो कभी नकली लाहौर घोषणापत्रा पर दस्तखत करके इठलाती है। अब वह सीटीबीटी का धुन बजाने लगी थी। उसे कारगिल के झटके ने भी नहीं जगाया। उम्मीद करनी चाहिए कि कंधार के झटके से उसके काफी भ्रम दूर हो गए होंगे और वह नए सिरे से अपनी प्राथमिकताएं तय करेगी। (संपादकीय, हिन्दुस्तान, 1.1.2000)

बंधक रिहा हुए, हम बंदी के बंदी रहे

बंधक रिहा हो गए, हम बंदी के बंदी रह गए। बधाई उन्हें जो मृत्यु की गोद में यातनापूर्ण सात दिन बिता कर फिर जीवन के आंगन में आ गए और उनके उन संबंधियों को भी जिनके प्राण पीड़ा के उस क्रॉस पर लटके हुए थे जिस पर कभी प्रेम के अवतार ईसा मसीह के प्राण निकले थे। सब–कुछ क्रिसमस के आसपास हुआ। एक बार फिर शैतानों के समूह ने निरपराध भोलेपन को सूली पर लटका कर शैतानों के समूह को छुड़वा लिया। दुर्भाग्य! यह सब भी धर्म के नाम पर हुआ। कल ही देश भर के इमामों, मौलवियों और काजियों ने अपहर्ताओं पर लानत भेजी जिन्होंने रमजान के पवित्रा महीने में निरपराध लोगों को बंदी बना कर रखने का पाप किया और इस्लाम को बदनाम किया। मगर शैतान तो शैतान होता है, वह किसी भी धर्म का चोला पहन सकता है। धर्म निरपेक्ष समाज में भगवान कहां, शैतान ही बलवान होता है। अब देश के भाग्य विधाता और भाग्यवान लोग स्वच्छंद रूप से नए साल का जश्न मनाएं। वैसे भी बंधक रिहा नहीं होते तो भी लोग जश्न मनाने से कहां चूकते? उत्सवधर्मी समाज की शायद यही विशेषता होती है कि पर पीड़ा उसे कातर नहीं करती है। संसार यदि माया ही है तो दूसरों के दुख–दुख नहीं, दुख का भ्रम होते हैं, माया भरे संसार में अपने–अपने नहीं, पराए–पराए नहीं होते, बस हम होते हैं, हमारे सुख होते हैं। मायावानों के तो सिर्फ सुख होते हैं। बंधक मुक्त हुए तो सहानुभूति दिखाने के कष्ट से भी मुक्त हुए। आतंकवादियों के रिहा होने की चिंता में सिर क्यों खपाएं, आज तो नाचें, गाएं, खाएं। कल की चिंता छोड़ें आज को भुनाएं, आओ जश्न मनाएं।

वे जो कहते है कि भारत की नाक कट गई उनसे पूछा जा सकता है कि क्या उन्होंने भारत की नाक देखी थी? लोग बताते हैं कि वह तो विश्वनाथ प्रताप सिंह के शासन में मुफ्ती मोहम्मद सईद की बेटी का अपहरण करने वाले आतंकवादियों को जड़ से काट कर प्लेट में रख कर भेंट कर दी गई थी और बेटी वापस ले ली गई थी। नाक ही नहीं, हमारे हाथ भी शायद गिरवी रखे हुए थे वरना अमृतसर में पौन घंटे विमान खड़ा रख कर आतंकवादी मुंह चिढ़ाते उड़ सकते थे? नाक और हाथ की बात करना अब स्वयं को पुरातनपंथी और फासिस्ट सिद्ध करना है। राम के जमाने में भी सीता का अपहरण हुआ था। वह भी सूर्पणखा की नाक काटने का परिणाम था। राम चाहते तो लक्ष्मण की नाक काट कर रावण को भिजवा देते और सीता को बुलवा लेते। मगर उन्हें नाक प्यारी थी और उनमें पुरुषार्थ था, अतः रावण को मारा और सीता को लाए। उस जमाने में सबमें पुरुषार्थ था। जटायु जैसा गिद्ध रावण जैसे अपहर्ता से भिड़ गया चाहे मर गया, हम अमृतसर में हाथ बांध कर विषपान कर गए तो कंधार से यौवन बूटी कैसे लाते? राम के बाद से हममें समझदारी का श्रीगणेश हुआ। हमने जान गंवाने के बदले जान बचाने की कला सीखी। आक्रमणकारियों का पादुका प्रक्षालन करने और पीठ पर कोड़े खा कर पेट पालने की नीति के कारण हमने गुलामी को भी पूरी स्वतंत्राता के साथ जिया, हमारे राजे–रजवाड़ो ने आक्रमणकारियों को अपनी बेटियां भेंट कर अपनी भूमि और अपना धन बचाया तो हम आतंकवादियों को छोड़ कर यात्रियों को छुड़ाने की बुद्धिमानी पर प्रसन्न क्यों नहीं हों। बचपन में एक पहेली बूझी जाती थी–'न मारा न खून किया, बीसों का सिर काट दिया' उत्तर होता था 'नाखून'। हमने भी न किसी को कष्ट दिया न खून बहाया और डेढ़ सौ को बचाया। हम बढ़े हुए नाखून हो गए हैं–नाखून का अर्थ ही खून नहीं होना होता है।

इस समाज में अपहृत विमान के पायलट देवीशरन की पत्नी जैसे लोगों की कोई जगह नहीं जो टीवी पर पूरे आत्मविश्वास के साथ अपने पति द्वारा राष्ट्र सम्मान और यात्रियों को बचा लेने की बात कर रही और अन्य लोगों की तरह पानी पी–पीकर सरकार की निष्क्रियता और निकम्मेपन को गालियां नहीं दे रही थी। कारगिल के उन शहीदों की विधवाओं के प्रदर्शन का भी कोई मूल्य नहीं जो अपने पतियों को खोकर भी राष्ट्र सम्मान बनाए रखने का आग्रह कर रही थीं। अब एक भी आतंकवादी भारत की जेल में बंद नहीं रहेगा। किसी भी व्यक्ति या विमान का अपहरण होगा और आतंकवादियों का समूह छूटेगा। वह दुगने वेग से निहत्थों को मारेगा, सशस्त्रा बलों पर आक्रमण करेगा और देश की संपत्ति को बर्बाद करेगा। देश में आने से उसे कौन रोक सकेगा? यह देश तो धर्मशाला है, जिसकी किसी

दिशा में कोई द्वार नहीं, कहीं से भी कोई भी घुसे, इस देश में बसे और फिर इसे बर्बाद करे। हम–सब देश के दुश्मनों से घिरे हैं, जो बंद थे वे छूट रहे हैं और हम बंदी होते जा रहे हैं। वे छूटते रहे तो कश्मीर कब तक अपनी धर्मशाला का अंग रहेगा, हम बंदी बने रहे तो कब तक यह देश स्वतंत्रा बना रहेगा? हालांकि इस प्रश्न से भी हमारे जश्न में फर्क नहीं पड़ना चाहिए। जब अपहृत विमान के बंधक ताश और शतरंज खेल कर समय गुजार सकते हैं तो हम अपने मन, बुद्धि और आतंक के बंदी जश्न मना कर अपनी उम्र क्यों नहीं गुजर सकते । जश्न मनाने के लिए न नाक चाहिए न पुरुषार्थ सिर्फ मटक सकने और झुक कर दोहरी हो जाने वाली कमर चाहिए, जो हमारे पास है। (संपादकीय विशेष टिप्पणी, दैनिक भास्कर, 1.1.2000)

विमान अपहरण और भी

हमारे देश में और अन्य देशों में पूर्व में अनेक विमान अपहरण हुए हैं । कंधार के विमान अपहरण ने विश्व में हुए पिछले अपहरण घटनाओं को ताजा कर दिया है । देश और विदेश में अब तक हुई उल्लेखनीय विमान अपहरण घटनाओं का विवरण निम्नानुसार है :

देश में

13 जनवरी 1994 – इंडियन एयरलाइंस के बेंगलूर से मद्रास जा रहे ए–320 एयर बस का 56 यात्रियों और
चालक दल के सात सदस्यों सहित अपहरण । अपहरणकर्ता मराठवाड़ा विश्वविद्यालय का नाम डॉ0भीम राव अम्बेडकर के नाम पर रखने की मांग कर रहे थे ।

24 अप्रैल 1993 – दिल्ली से श्रीनगर जा रहा इंडियन एयरलांइस का बोइंग –737 विमान 141 यात्रियों और
चालक दल के 6 सदस्यों सहित अपहरण के बाद अमृतसर ले जाया गया । अपहर्ता विमान को काबूल ले जाना चाहते थे ।

10 अप्रैल 1993 – लखनऊ से दिल्ली की इंडियन एयरलाइंस की उड़ान आई सी–436 का चार कालेज छात्राों ने अपहरण कर लिया था । छात्रा लखनऊ के कला महाविद्यालय की समस्याओं के समाधान की मांग कर रहे थे । विमान को अमोसी हवाई अड्डे पर उतारा गया ।

27 मार्च 1993 – इंडियन एयरलाइंस की हैदराबाद – लखनऊ दिल्ली उड़ान आई सी–439 का हरिसिंह ने अपहरण किया । विमान अमृतसर के राजासांसी हवाई अड्डे पर उतरा । अपहरणकर्ता ने आत्म समर्पण किया और मारा गया ।

22 जनवरी 1993 – सतीश चन्द्र पांडे ने इंडियन एयरलाइंस की पटना–लखनऊ–दिल्ली उड़ान आई सी–810 का उड़ान भरने के थोड़ी देर बाद अपहरण कर लिया । उसने वर्तमान प्रधान मंत्राी अटल बिहारी बाजपेयी के कहने पर आत्म समर्पण कर दिया ।

4 फरवरी 1991 – एक 24 वर्षीय युवक का कलकत्ता से अगरतला जा रही उड़ान का अपहरण करने का प्रयास विफल ।

10 नवम्बर 1990 – बर्मा के दो युवकों ने कलकत्ता जा रहे थाइलैंड एयरलाइंस के विमान का 221 यात्रियों सहित अपहरण किया ।

13 सितम्बर 1990 – एयरलाइंस की कोयंबतूर–बेंगलूर–मद्रास आई सी–534 उड़ान का अपहरण कर श्रीलंका ले जाने का प्रयास ।

13 सितम्बर 1984 – अखिल भारतीय सिख छात्रा संघ के सदस्य श्रीनगर से दिल्ली आ रहे इंडियन एयरलाइंस के विमान को अमृतसर ले गए ।

29 सितम्बर 1981 – दल खालसा इंटरनेशनल के सदस्य दिल्ली से श्रीनगर जा रहे इंडियन एयरलाइंस के विमान को लाहौर ले गए ।

29 सितम्बर 1971 – जम्मू कश्मीर लिबरेशन फ्रंट के प्रमुख अम्मानुल्ला खान का पूर्व सहयोगी श्रीनगर जा रहे इंडियन एयरलाइंस के विमान को अपहरण कर इस्लामाबाद ले गया ।

विदेश में

23 जुलाई से एक सितम्बर,1968 : 40 दिन – फिलीस्तीन की मुक्ति के लिए संघर्षरत पोपुलर फ्रंट के सदस्य रोम के तेल अबीब की उड़ान को अप त कर अल्जीयर्स ले गए थे । बंधकों को एक सितम्बर को रिहा किया गया ।

14 जून से एक जुलाई,1985: 18 दिन – शिया बन्दूकधारियों ने टी. डब्ल्यू. ए. के बोइंग–727 का अपहरण कर बेरूत ले गए और इजरायल में बंदी 700 अरबियों की रिहाई की मांग की । सीरिया की मध्यस्थता से 39 अमेरिकियों की रिहाई हुई,लेकिन अमेरिकी नौसेना का एक गोताखोर मारा गया ।

5 अप्रैल से 20 अप्रैल,1988: 16 दिन – शिया बन्दूकधारी थाईलैंड से कुवैत की उड़ान पर कुवैत एयरवेज के जम्बो जेट का अपहरण करके ईरान,साइप्रस एवं अल्जीरिया ले गए । कुवैत में बन्दी ईरान समर्थक 17 उग्रवादियों की रिहाई की मांग । दो यात्री मारे गए । शेष को रिहा कर दिया गया । अपहर्ताओं को अल्जीरिया से जाने की अनुमति ।

2 मार्च से 14 मार्च,1981: 13 दिन – तीन पाकिस्तानियों ने पी.आई.ए. के करांची से पेशावर जा रहे विमान का अपहरण करके अफगानिस्तान और सीरिया ले गए । पाक में 54 राजनीतिक कैदियों की रिहाई के बाद विमान को मुक्त किया ।

27 जून से 4 जुलाई,1976: 8 दिन – फिलीस्तीन एवं जर्मन के उग्रवादी एयरफ्रांस के विमान का अपहरण करके एंटेबी (युगांडा) ले गए । इजरायल,केन्या एवं यूरोप में बंदी 53 फिलीस्तीन समर्थको की रिहाई की मांग । इजरायली कमांडो ने यात्रियों को मुक्त कराया ,लेकिन चार नागरिक मारे गए ।

3 दिसम्बर से 8 दिसम्बर,1984: करीब 6 दिन – दुबई से करांची की उड़ान पर कुवैत एयरवेज के विमान का शिया बन्दूकधारियों ने अपहरण किया और तेहरान ले गए । कुवैत में अमेरिकी एवं फ्रांसिसी केन्द्रों को उड़ाने के दोषी 17 लोगों की रिहाई की मांग । ईरानी सुरक्षा बल की कार्रवाई से विमान मुक्त कराया ,लेकिन कार्रवाई में दो अमेरिकी मारे गए ।

विमान अपहरण में यात्री क्या करें ?

यात्रिओं को विमान अपहरण के दौरान क्या करना चाहिए, किस प्रकार का व्यवहार करना चहिए, अपहरणकर्ताओं के साथ किस प्रकार निपटना चाहिए, इन मुद्दों पर अपहरण के दौरान मीडिया में क़ाफी चर्चाएं हुई । अलग – अलग लोगों ने अपने –अपने विभिन्न अभिमत दिये । कुछ समूह विशेष का यह मत रहा कि यात्रियों को अपहरण के दौरान संयम रखते हुए अपहरणकर्ताओं के साथ सामान्य व्यवहार करना चाहिए था (जैसा कि यात्रियों ने किया) । अन्य लोगों का यह सोचना था कि बंधकों को अपहरणर्ताओं पर हमला करना चाहिए था । विमान के पायलट, इंजीनियर और परिचारिकाओं ने अवगत कराया कि उन्हें विमान अपहरण के संबध में यह प्रशिक्षण दिया जाता है कि अपहरण के समय पूरी तरह आत्म सर्मपण कर अपहरणकर्ताओं के निर्देशानुसार कार्यवाही करना चाहिए ताकि यात्रियों के लिए कोई खतरा उत्पन्न नहीं हो ।

विशेषज्ञों का कहना है कि विमान अपहरण में यात्राी कैसा व्यवहार करें और क्या कार्यवाही करें, इस संबध में कोई मार्गदर्शी सिंद्वात और कोई एक विधि निर्धारित किया जाना संभव नहीं है, परन्तु कुछ मार्गदर्शी सिंद्वान्त लाभदायक सिध्द हो सकते हैं । संयुक्त राष्ट्र के 'होस्टेज सरव्हाइवल एवं हाईजैकिंग सरव्हाइवल' (बंधक अतिजीविता एवं अपहरण अतिजीविता) विभाग ने विमान अपहरण के समय बंधक यात्रियों के लिए कुछ सुझाव दिये है । इन दिग्दर्शिका सिद्वांतो को चार भागों में समझना उचित होगा –

- विमान में सफर करने के पूर्व बरती जाने वालीं सावधानियां
- अपहरण के समय यात्रियों से अपेक्षित प्रतिक्रिया एवं व्यवहार
- अपहरण के बाद समझौता वार्ता के समय की कार्यवाही
- बचाव अभियान (रेसक्यू आपरेशन)के दौरान ' क्या करें और क्या नहीं करें'

वैमानिक यात्राा में निकलने के पूर्व यात्राी को यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि उन्होंने अपने तथा अपने परिवार से सम्बन्धित सभी महत्वपूर्ण कार्यों को सुनियोजित रूप से सम्पादित कर लिया है, विशेष रूप से जीवन बीमा एवं अन्य बीमा योजना, मुख्तारनामा (पावर ऑफ एटोर्नी), सम्पति के अभिलेखों की सही जानकारी एवं उत्तराधिकारी प्रमाणपत्र आदि से सम्बधित सभी औपचारिताएं पूर्ण रहनी चाहिए ।

यदि इन बातों का ध्यान रखा गया हो, तो यात्राी अपहरण के समय अपने बचाव, अतिजीविता (Survival) और उन परिस्थितियों से जूझने के लिए एकाग्रचित होकर सोच सकता है और उचित कार्यवाही कर सकता है।

ऐसी परिस्थितिओं से जूझने के लिए अपनी क्षमता बढाने के लिए यात्राी को यह जानना और दिमाग में रखना जरूरी है कि अपहरण एक परिवर्तात्मक सक्रिय और गतिशिल कार्यवाही (phenomenon)है जिसमें अनेक परस्पर प्रभावशाली क्रियात्मक कारक बल (factors/forces) कार्य करते है । एक बंधक की गतिविधि या कार्यवाही दूसरे यात्रियों या अपहरणकर्ताओं को प्रभावित करेगा और इनका उत्तरोत्तर परिणाम सभी के लिए घातक हो सकता है ।
बंधक यात्राी को सर्वप्रथम इस बात का ध्यान रखना है कि कि उसे अधीर या उत्तेजित नहीं होना है और न ही उसके व्यवहार या गतिविधि से किसी प्रकार का तनाव परिलक्षित होना चाहिए । यह बात भी दिमाग में रखना आवश्यक है कि अपहरणकर्ता भी उस समय एक उत्तेजना पूर्ण, भावात्मक और संवेदनशील मानसिक स्थिति से गुजर रहा है ।
'भय' की स्थिति एक घातक परिणाम को प्रवर्तित (Trigger) कर सकता है । अतः यात्राी को अपने आप को भयमुक्त रखना है। कुछ यात्री शीघ्र ही उग्र हो जाते हैं । उग्रता या जबरदस्ती की स्थिति में

अप त विमान में हिंसा की स्थिति में उत्पन्न होने की पूर्ण संभावना रहती है और ऐसे समय में हिंसा का शिकार वे लोग होते हैं जिनसे अपहरणकर्ताओं को कुछ उपद्रव अथवा हमले आदि का खतरा रहता है ।

विमान अपहरण या तो खलवली पूर्ण कार्यवाही के द्वारा, या फिर शांतिपूर्ण ढ़ग से हो सकता है । अपहरण के समय अपहरणकर्ता शोर करते हुए, धमकाते हुए, गोली चलाते हुए, आदि उपद्रव करते हुए विमान को अपने काबू में ले सकते हैं या फिर शांति पूर्ण तरीके से घोषणा करते हुए और पायलट या क्रू सदस्य से अपहरण की घोषणा कराते हुए विमान अपहरण कर सकते हैं । अपहरण के प्रथम कुछ मिनट ही महत्वपूर्ण और निर्णायक होते हैं । इस अवधि में प्रत्येक यात्रीा को संयम और शांति बनाये रखना चाहिए और दूसरे यात्रियों को भी शांति बनाये रखने मे मदद और प्रोत्साहित करना चाहिए। इस समय अपहरणकर्ता सबसे अधिक उत्तेजित, अधीर और तनाव पूर्ण स्थिति में रहते हैं। और डरे हुए भी रहते हैं । इसलिए घबराहट में या अपने बचाव में कुछ भी अप्रत्याशित कर सकते हैं। अतः यात्रियों को अपहरणकर्ताओं के सभी निर्देशों का पालन करना चाहिए। यदि अपहरणकर्ताओं द्वारा गोली चलाई जाती है तो सिर को नीचे घूटने पर टिका कर बैठना चाहिए या फिर फर्श पर झुक जाना चाहिए ।

जब अपहरणकर्त्ताओं द्वारा विमान को अपने कब्जे में ल`लिया जाता है तो इनके व्दारा यात्रियों को राष्ट्रीयता, नागरिकता, जाति , सम्प्रदाय, लिंग आदि के आधार पर बांट कर विभक्त किये जाने की पूर्ण संभावना रहती है। इसके बाद यात्रियों के पासपोर्ट छीन लिये जा सकते हैं और फिर अपहरणकर्ता यात्रियों के सामान की छानबीन कर अपने अधिपत्य में ले सकते है।

तत्पश्चात अपहरणकर्ता संबंधित अधिकारियों/ प्रतिनिधियों के साथ समझौता वार्ता प्रारंभ करते हैं। यह समझौता वार्ता अनिश्चित समय तक चल सकती है। विमान स्टाफ (क्रू) को विमान को अन्यत्रा उड़ाकर ले जाने के लिए आदेशित किया जा सकता है। समझौता वार्ता के दौरान यात्रियों को सौदे के अस्त्रा के रुप में इस्तेमाल किया जा सकता है, इन्हें मारने की धमकी भी दी जा सकती है, और कुछ यात्रीा विमान के लिए ईंधन, लैण्डिंग (उतरने) और उड़ने और भोजन आदि के लिए छोड़े भी जा सकते है। यह दौर अपहरण की सबसे लंबी अवधि होती है।

इस अवधि में निम्नलिखित कार्यवाही किया जाना उचित है–

- यदि यात्री को सिर नीचे करके बैठने या एक विशेष तरीके से बैठने , या खड़े होने के लिए आदेश किया जाता है, तो शरीर को एक उपयुक्त और आराम की स्थिति में रखते हुए निर्देशानुसार स्थिति (पोजीशन) ग्रहण करें ताकि शरीर को ज्यादा कष्ट नहीं हो , क्योकि ऐसी स्थिति में क़ाफी समय तक रहना पड़ सकता है।
- अपने आपको इस परस्थिति से लंबे समय तक जूझने के लिए मानसिक और भावात्मक रुप से तैयार कर लेना चाहिए।
- अपने पासपोर्ट या अन्य कोई सामग्री अपहरणकर्ताओं से छुपाने का प्रयास नहीं करें।
- यदि अपहरणकर्ता किसी यात्रीा विशेष को सम्बोधित करते है तो यात्रीा सामान्य तरीके से संयत लहजे और स्वर में जवाब दें। किसी प्रकार की अप्रत्याशित प्रतिक्रिया नहीं दर्शायें ।
- इस समय का सदुपयोग करते हुए अपरहणकर्ताओं के गतिविधियों को बारिकी से ध्यान दें; उनके वेषभूषा, आदतें, नाक–नक्श, कोई विशिष्ट लक्षण, आकृति और चेहरे की कोई विशिष्टता आदि बातों का चित्रा अपने दिमाग मे तैयार करें। अपहरणकर्ताओं को कुछ उपनामों से अपने जेहन मे स्थापित करें।
- यदि साथ के किसी यात्री को अस्वस्थता या किसी कारणवश कोई कठिनाई या कष्ट हो रहा हो और उसे मदद की आवश्यकता हो तो पहले क्रू स्टाफ से संपर्क करें। किसी अपहरणकर्ता से तब

तक संपर्क स्थापित करने का प्रयास तभी करें जब कि ऐसे ही किसी अन्य प्रकरण में अपरहणकर्ताओं व्दारा कोई सहायता दी गयी हो।

- यदि किसी यात्री विशेष से अपहरणकर्ताओं व्दारा पृथक से पूछताछ की जाती है तो संयम के साथ उनकी बातों का जबाव दे परंतु खुद से कोई जानकारी देने का प्रयास न करे।

अपहरण का अंतिम पहलू होता है अपहरण का समाधान , चाहे वह समझौते से हो या फिर बचाव दल (रेसक्यू टीम) व्दारा बंधकों के उद्धार से।

बचाव दल व्दारा रेसक्यू अभियान में भी अपहरण के समान विमान के अंदर बलपर्वक प्रवेश करना, अपहरण कर्ताओं पर हमला कर उन्हे वश में करना, शोरगुल एवं हंगामा करना और संभवतः गोली चलना, आदि गतिविधियों का सामना यात्रियें को करना पड़ सकता है। रेसक्यू अभियान में यात्रियों को निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए –

- यदि विमान के अंदर या बाहर गोली चलने की आवाज आती है तो यात्रियों को फौरन एक सुरक्षात्मक स्थान और स्थिति ग्रहण कर लेना चाहिए। या तो सिर को घुटने पर झुकाकर बैठ जायें, या फिर फर्श पर लेट जावें।
- यदि बचाव दल व्दारा चलने या निकलने के लिए निर्देश दिये जाते हैं तो तदनुसार निर्देशों का पालन करते हुए अपने दोनों हाथों को ऊपर सिर के पीछे करके चलना शुरु कर दें। अचानक कोई हलचल या गति नहीं होनी चाहिए।
- यदि विमान के कही भी आग या धुआं दिखाई पडता है तो तत्काल आपातकालीन व्दार (emergency gate) खोल कर हवादार फिसलपट्टी (inflatable slides) व्दारा बाहर निकल जाये।
- विमान के बाहर निकलकर बचाव दल के सदस्यों या स्थानीय अधिकारियों के निर्देशों का पालन करें। यदि विमान के बाहर निर्देश या समझाइश देने वाला कोई भी व्यक्ति उपस्थित न हो तो तत्काल विमान से दूर भागे और यथाशीघ्र विमानपट्टन के मुख्य द्वार (टरमिनल) या कन्ट्रोल टावर की ओर पहुचें।
- बचाव अभियान के प्रारंभ में बचाव दल व्दारा यात्रियों को भी अपहरणकर्ता या उनके सहयोगी के रुप मे माना जा सकता है और ऐसी स्थिति में यात्रियों के साथ तब तक कठोर और बुरा ब्यवहार किया जा सकता है,जब तक यह साबित नही हो जाये कि यात्री अपहरण दल के सदस्य नहीं हैं।
- स्थानीय अधिकारियों एवं सक्षम जांच दलों के साथ सहयोग करें एवं उन्हें अपहरण से संबंधित सभी वांछित जानकारी उपलब्ध करावें।

संयुक्त राष्ट्र होस्टेज सरव्हाइवल और हाइजैक सरव्हाइवल विभाग द्वारा जो उपयुक्त सुझाव एवं मार्गदर्शी सिंद्वात प्रसारित किये गये हैं, वे सामान्यतया विमान यात्रियों को उपलब्ध नहीं होते हैं । हमारा सुझाव है कि उक्त सुझाव निर्देशिका के रूप में विमान टिकट के साथ उपलब्ध कराये जावें और जब विमान के उड़ान करते समय परिचारिकाओं द्वारा विमान सुरक्षा की जानकारी दी जाती है तो उसी समय अपहरण सुरक्षा की जानकारी भी यात्रियों को दी जावे ।

लौटकर नये वर्ष के पहले दिन हम एकसाथ – अजय, सुचित्रा, जोयिता, शोमिता *(नई दुनिया)*

kandhar1304b